मीडिया मैप

उदार जनतंत्र का सजग प्रहरी

● वर्ष : 10 ● अंक : 08 ● अगस्त : 2025 ● पृष्ठ : 40 ● मूल्य : 50/-

■ दागदार वोट, खंडित विश्वास : राहुल गांधी ने उठाए चुनाव आयोग पर गंभीर सवाल ■ न्याय या नरमी! जब कानून जघन्य अपराधों को माफ कर देता है

: हम क्यों :

मीडिया मैप एक वैचारिक पत्रिका है। हमारे समाज के नीतिपरक और मूल्यनिष्ठ बिन्दु तथा इनसे जुड़ाव रखने वाले आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक मुद्दे इसकी विषयवस्तु है। मीडिया मैप की संपादकीय नीति उदारवादी, आधुनिक, प्रगतिशील व सर्व धर्म समभाव की भावना पर आधारित है।

मीडिया मैप हमारे बहुलतावादी समाज की विविधताओं से सृजित समस्त सोच, विचार, दृष्टिकोण, मूल्य और मान्यताओं को अपने में समाहित करने का एक प्रयास है। हमारा उद्देश्य वैज्ञानिक सोच द्वारा समाज से जुड़े मूल मुद्दों पर एक प्रबुद्ध जनमत विकसित करना है, जिससे देश में संकुचित मानसिकता और आपसी टकराव से ऊपर उठकर एक उच्चस्तरीय विचार-विमर्श का वातावरण तैयार हो सके।

मीडिया मैप

उदार जनतंत्र का सजग प्रहरी

संपादकीय सलाहकार मंडल
डॉ. बलदेवराज गुप्त
के.बी. माथुर
डॉ. सलीम खान

प्रधान संपादक
प्रो. प्रदीप माथुर

संयुक्त संपादक : डॉ. सतीश मिश्रा
सहायक संपादक : प्रो. शिवाजी सरकार
विज्ञान तकनीकी संपादक : राजीव माथुर
विशेष प्रतिनिधि : डॉ. मुज़फ्फर गज़ाली
मुख्य उप संपादक : जितेन्द्र मिश्र
वरिष्ठ उप संपादक : प्रशांत गौतम
उप संपादक : अंकुर कुमार

प्रबंध संपादक : चन्द्र कुमार एडवोकेट
प्रबंधक : जगदीश गौतम
विधि परामर्शदाता : संजय माथुर

पंजीकृत कार्यालय : 2324, सेक्टर-डी पॉकेट-2, वसंत कुंज, नई दिल्ली

संपादकीय कार्यालय : 70 ज्ञानखंड-4, इंदिरापुरम गाजियाबाद- 201014 (उत्तर प्रदेश)

दूरभाष : 9810385757/9910069262
एम बी के एम फाउंडेशन प्रकाशन

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक प्रदीप माथुर द्वारा लक्ष्मी नगर, नई दिल्ली से मुद्रित एवं मकान नंबर 70, ज्ञानखंड-4, इंदिरापुरम, जनपद-गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश- 201014 से प्रकाशित।

सभी लेखों में लेखकों के अपने उल्लेखित विचार हैं। लेखों और विचारों को लेकर किसी तरह का विवाद होने पर पत्रिका के संपादक, प्रकाशक, मुद्रक इसके लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जिला और न्यायालय गाजियाबाद ही होगा। इस पत्रिका से जुड़े सभी पदाधिकारी, सहयोगी और लेखक अवैतनिक हैं। पीआरबी एक्ट के तहत संपादक प्रो. प्रदीप माथुर उत्तरदायी हैं।

RNI No. : UPHIN/2016/68336

अनुक्रमणिका

4 संपादकीय : स्वतंत्रता- केवल राजनीतिक आजादी तक नहीं

विचार-प्रवाह : सियासी गलियारों में हलचल.... 5-7

8-9 ईसाई-विरोधी हिंसा का बढ़ता ग्राफ : राम पुनियानी

क्या होगा धनखड़ का अगला कदम : प्रो. प्रदीप माथुर 10-11

12-13 गाड़ियों की अनिवार्य स्क्रैपिंग नीति पर पुनर्विचार की जरूरत : प्रो. शिवाजी सरकार

ट्रम्प बनाम ब्रिक्स : एक मुद्रा आधारित शीत युद्ध की आहट : प्रो. शिवाजी सरकार 14-15

16-17 क्या राजीव गांधी भीतरघात के शिकार हुए थे : प्रो. प्रदीप माथुर

गणेश चतुर्थी : तनाव का सूचक मूषक है तो तनाव प्रबंधन के प्रतीक श्रीगणेश हैं : बी.के. सुशांत 18

19 हर बच्चे में एक एकलव्य छिपा होता है : डॉ. अशोक श्रीवास्तव

दागदार वोट, खंडित विश्वास : राहुल गांधी ने उठाए चुनाव आयोग पर गंभीर सवाल : डॉ. सिद्दीक़ी 20-21

22-23 न्याय या नरमी! जब कानून जघन्य अपराधों को माफ कर देता है : अमिताभ श्रीवास्तव

पूंजीवादी व्यवस्था एक बार फिर संकट में : धर्मेन्द्र आज़ाद 24-25

26 प्रतिरोध की राजनीति का प्रतीक : प्रोफेसर प्रदीप माथुर

कला, विज्ञान व सिनेस्थीज़िया अनुसंधान में वैश्विक आवाज़ों का संगम 27

28-30 ऋषिस्वरूप डॉ. रामजी लाल जांगिड़ : स्मृतियों को नमन

भारतीय मीडिया ने मोदी की छवि गढ़ने के लिए अनावश्यक नैरेटिव गढ़ा : गोपल मिश्र 31

32-33 अरुणा आसफ अली : एक ऐसी किंवदंती जो 'भारत छोड़ो आंदोलन' की आत्मा थीं : डॉ. सतीश मिश्रा

टी20 एशिया कप टीम का चयन एक नई चुनौत : अनिल जौहरी 34-35

36 कनाडा के विश्वविद्यालयों व कॉलेजों में क्रिकेट को मिल रही गंभीरता : प्रभजोत सिंह

Email : editor@mediamap.co.in

संपादकीय

प्रो. प्रदीप माथुर

♦♦

भारत ने 15 अगस्त 1947 को ब्रिटिश उपनिवेशवादी शासन से अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त की। यह ऐतिहासिक क्षण लगभग दो सदियों के विदेशी नियंत्रण और शोषण के अंत का प्रतीक था। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने महान त्याग और नेतृत्व से हमें स्वशासन का अधिकार दिलाया। बाद में, 26 जनवरी 1950 को संविधान अंगीकृत किया गया और 1951-52 में पहले आम चुनाव हुए। हम एक संप्रभु, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य बन गए। ये उपलब्धियां ऐतिहासिक थीं और इनका उत्सव मनाना बिल्कुल उचित है। लेकिन जब हम अमृत काल, स्वतंत्रता की हीरक जयंती, मना रहे हैं-तो हमें रुककर सोचना चाहिए-क्या हम वास्तव में स्वतंत्र हैं? दुखद रूप से, इसका ईमानदार उत्तर अभी भी स्पष्ट नहीं है, और कई मायनों में नकारात्मक ही है।

♦♦

स्वतंत्रता : केवल राजनीतिक आजादी तक नहीं

स्वतंत्रता एक ऐसा विचार है जो केवल विदेशी शासन के अंत तक सीमित नहीं है। सच्ची स्वतंत्रता के कई आयाम होते हैं–राजनीतिक, आर्थिक, बौद्धिक और अंततः आध्यात्मिक। हमारे प्राचीन शास्त्रों में स्वतंत्रता का सर्वोच्च रूप मोक्ष कहा गया है–जो आत्मा की सभी बंधनों से मुक्ति है। यह एक ऊंचा आदर्श है, लेकिन अपने सांसारिक जीवन में भी हमें यह समझना होगा कि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता को पूर्ण मुक्ति नहीं कहा जा सकता। भारत ने 15 अगस्त 1947 को ब्रिटिश उपनिवेशवादी शासन से अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त की। यह ऐतिहासिक क्षण लगभग दो सदियों के विदेशी नियंत्रण और शोषण के अंत का प्रतीक था। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने महान त्याग और नेतृत्व से हमें स्वशासन का अधिकार दिलाया। बाद में, 26 जनवरी 1950 को संविधान अंगीकृत किया गया और 1951–52 में पहले आम चुनाव हुए। हम एक संप्रभु, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य बन गए। ये उपलब्धियां ऐतिहासिक थीं और इनका उत्सव मनाना बिल्कुल उचित है। लेकिन जब हम अमृत काल, स्वतंत्रता की हीरक जयंती, मना रहे हैं–तो हमें रुककर सोचना चाहिए–क्या हम वास्तव में स्वतंत्र हैं? दुखद रूप से, इसका ईमानदार उत्तर अभी भी स्पष्ट नहीं है, और कई मायनों में नकारात्मक ही है।

आर्थिक असमानता-एक टूटी न गई जंजीर : पिछले कुछ दशकों में भारत ने असाधारण आर्थिक प्रगति की है। 2024 तक, हम नाममात्र जीडीपी के आधार पर दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुके हैं, ब्रिटेन को भी पीछे छोड़ते हुए। हमारी जीडीपी .3.7 ट्रिलियन से अधिक है और हम सूचना तकनीक, दवा उद्योग, और अंतरिक्ष अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त कर चुके हैं। फिर भी यह आर्थिक समृद्धि असमान रूप से वितरित है। 2023 की ऑक्सफैम रिपोर्ट के अनुसार, भारत की कुल संपत्ति का 40.5% शीर्ष १% लोगों के पास है, जबकि निचले 50% लोगों के पास केवल 3% ही है। यह गहरी असमानता एक गंभीर समस्या की ओर इशारा करती है-हमारे नागरिकों के एक बड़े वर्ग, खासकर ग्रामीण इलाकों और हाशिए के समुदायों में, जीवन आज भी रोजमर्रा की जरूरतों, सम्मान और जीविका के लिए संघर्ष है। सरकारी योजनाएं और सब्सिडियां-जिन्हें अक्सर मुफ्तखोरी कहा जाता है–अस्थायी राहत तो देती हैं, लेकिन दीर्घकालिक समाधान नहीं हैं। जरूरत है सशक्तिकरण की–गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास, रोजगार के अवसर, स्वास्थ्य सेवाएं और उत्पादक संसाधनों पर स्वामित्व। जब तक हर नागरिक राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में सक्रिय भागीदार नहीं बनता, तब तक हम आर्थिक स्वतंत्रता की बात नहीं कर सकते।

मानसिक स्वतंत्रता-अगली सीमा : हाल के वर्षों में मानसिक स्वतंत्रता की मांग तेज हुई है। यह स्वतंत्रता अधिक सूक्ष्म होती है और इसे पहचानना कठिन होता है, लेकिन इसका अभाव उतना ही नुकसानदायक है। एक सच्चा स्वतंत्र समाज वही होता है जहां व्यक्ति स्वतंत्र रूप से सोच सके–जहां कोई पूर्वाग्रह, अंधविश्वास, कट्टर विचारधाराएं या गलत जानकारी की बेड़ियां न हों। दुर्भाग्यवश, हम आज भी सार्वजनिक संवाद में बढ़ती ध्रुवीकरण देख रहे हैं–जो अक्सर विभाजनकारी कहानियों, ऐतिहासिक गिले–शिकवे और पहचान की राजनीति से प्रेरित होती हैं। जातिवाद, सांप्रदायिकता और लैंगिक भेदभाव आज भी विभिन्न रूपों में मौजूद हैं। सोशल मीडिया, जो जानकारी आधारित बहस का मंच होना चाहिए, नफरत और भ्रम फैलाने का अखाड़ा बन गया है। यह मानसिक गुलामी हमारे सामूहिक सामर्थ्य को सीमित करती है और राष्ट्रीय प्रगति में बाधा बनती है।

अंतरात्मा की मुक्ति का आह्वान : जैसे ही हम एक और स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं, आइए यह संकल्प लें कि हम केवल बाह्य समृद्धि के लिए नहीं, बल्कि आंतरिक मुक्ति के लिए भी कार्य करें। ऐसा समाज बनाएं जहां स्वतंत्रता केवल राजनीतिक अधिकारों तक सीमित न रहे, बल्कि हर व्यक्ति की आर्थिक उन्नति और हर नागरिक की मानसिक जागरूकता तक विस्तृत हो।

■■■■

सियासी गलियारों में हलचल

13 अगस्त 2025, बुधवार को संविधान क्लब ऑफ इंडिया (CCI) में हुए चुनाव केवल एक आंतरिक मामला नहीं रहे- यह चुनाव भारतीय जनता पार्टी (BJP) और व्यापक भारतीय राजनीति में एक राजनीतिक भूकंप बनकर उभरा। इस चुनाव में मौजूदा भाजपा सांसद राजीव प्रताप रूडी ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा खुलकर समर्थन प्राप्त संजय बल्याण को पराजित किया। आमतौर पर लो-प्रोफाइल रहने वाले CCI के चुनाव इस बार खासे गरम हो गए जब शाह का समर्थन बल्याण के लिए सार्वजनिक हो गया। बल्याण, उत्तर प्रदेश के मुज़फ्फरनगर से जाट नेता और पूर्व सांसद हैं। वहीं रूडी, बिहार के सारण से राजपूत सांसद, जिन्हें भाजपा के शीर्ष नेतृत्व में एक समय पर हाशिए पर माना जाता था, उन्होंने यह मौका भुनाया। INDIA गठबंधन और अन्य गैर-भाजपा सांसदों का समर्थन प्राप्त कर रूडी ने बल्याण को 100 वोटों (391 बनाम 291) से हराया। इस परिणाम को भाजपा के भीतर से प्रतीकात्मक असहमति के रूप में देखा जा रहा है- संभवत: बड़े राजनीतिक चुनावों से पहले अंदरूनी बेचैनी का संकेत।

स्वतंत्रता से भरा एक राजनीतिक सफर : रूडी का राजनीतिक सफर 1989 में चंडीगढ़ में जनता दल के प्रचार प्रबंधक के रूप में शुरू हुआ। 1990 में वह 28 वर्ष की उम्र में बिहार से जनता दल के विधायक बने। बाद में उन्होंने भाजपा का दामन थामा और 1996 में छपरा से लोकसभा सीट जीती। वाजपेयी सरकार में उन्होंने नागर विमानन जैसे मंत्रालयों में भूमिका निभाई। 2014 से 2017 तक मोदी सरकार में कौशल विकास मंत्री भी रहे, परंतु बाद में मंत्रिमंडल से बाहर कर दिए गए। उनके हाशिए पर जाने का कारण उनकी स्वतंत्र सोच, तकनीकी दृष्टिकोण, और चाटुकारिता से दूरी मानी जाती है- जो मौजूदा भाजपा नेतृत्व को पसंद नहीं आई। संविधान क्लब के सचिव पद पर लंबे समय तक बने रहना भी आंतरिक आलोचना का कारण बना, विशेषकर शाह के खेमे से, जो पूर्ण वफादारी को महत्व देता है।

सत्ता और छवि की जंग : इस साल के CCI चुनाव 'भाजपा बनाम भाजपा' की लड़ाई बन गए। शीर्ष नेतृत्व के दबाव के बावजूद, रूडी की अंतरदलीय लोकप्रियता और छवि ने उन्हें जीत दिलाई। उन्होंने कांग्रेस, सपा, वामपंथी दलों, तृणमूल कांग्रेस और भाजपा के नेताओं को मिलाकर एक दलीय सीमा से परे पैनल बनाया-जो आज की ध्रुवीकृत राजनीति में दुर्लभ है। रूडी ने जीत के बाद कहा, 'यह हम सभी का साझा मंच है, दलगत सीमाओं से परे। यह पैनल की जीत है, सिर्फ मेरी नहीं।' उनकी बढ़त 28 राउंड की गिनती में कभी नहीं घटी। जहां भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने बल्याण का समर्थन किया, वहीं भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने ज़ोरदार प्रचार किया। बावजूद इसके, रूडी का अनुभव और विभिन्न दलों में सम्मान निर्णायक साबित हुआ। 11 निर्वाचित कार्यकारिणी सदस्यों में कांग्रेस के दीपेंद्र सिंह हुड्डा और भाजपा-समर्थक नवोदित उद्योगपति नवीन जिंदल शामिल हैं।

संविधान क्लब से आगे की गूंज : कुछ भाजपा सूत्रों का मानना है कि ऐसा ही गुप्त मतदान उपराष्ट्रपति जैसे संवैधानिक चुनावों में भी असर डाल सकता है। वहीं, दूसरे मानते हैं कि शीर्ष नेतृत्व अभी भी अधिकांश सांसदों पर नियंत्रण रखता है। डर और प्रतिशोध की संभावना अब भी बगावत को रोकने वाला प्रमुख कारक है। फिर भी, यह प्रतीकात्मक जीत भाजपा हाईकमान को हिला गई है। यह तथ्य कि एक बार हाशिए पर डाले गए रूडी इतनी विविध समर्थन जुटा सके, पार्टी की एकता के दिखावे में एक बड़ी दरार के रूप में देखा जा रहा है। संविधान क्लब, जिसकी स्थापना 1947 में हुई थी और जिसका वर्तमान भवन 1965 में राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन द्वारा उद्घाटित हुआ था, एक प्रभावशाली लेकिन शांत राजनीतिक मंच रहा है। इससे पहले 2009, 2014, और 2019 में हुए चुनावों में कभी इतना राजनीतिक ड्रामा नहीं देखा गया। जैसा कि वरिष्ठ वकील और पूर्व केंद्रीय मंत्री कपिल सिब्बल ने X (पूर्व ट्विटर) पर लिखा-'जब चुनाव गुप्त मतदान से होता है, तो तथाकथित चाणक्य बुरी तरह हारते हैं। बिहार में अगर चुनाव निष्पक्ष हो, तो चाणक्य फिर हारेंगे!'

■■ **डॉ. सतीश मिश्रा**

75 की उम्र में दो दिग्गज : मोदी व भागवत के लिए एक निर्णायक मोड़

मुंबई : सितम्बर 2025 सिर्फ जन्मदिनों का महीना नहीं होगा, बल्कि यह भारतीय राजनीति के इतिहास का एक निर्णायक अध्याय बन सकता है। एक दुर्लभ संयोग के तहत, भारत के दो सबसे प्रभावशाली और शक्तिशाली व्यक्तित्व- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत- दोनों ही एक ही सप्ताह में 75 वर्ष के हो जाएंगे। यह मील का पत्थर व्यक्तिगत रूप से तो महत्वपूर्ण है ही, लेकिन इसके राजनीतिक प्रभावों ने चर्चाओं का बाजार गर्म कर दिया है। मोहन भागवत, जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के वैचारिक प्रमुख हैं, अपना 75वां जन्मदिन 11 सितम्बर को मनाएंगे। ठीक छह दिन बाद, 17 सितम्बर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी इसी उम्र में प्रवेश करेंगे। दोनों का जन्म 1950 में हुआ था और इन्होंने दशकों से भारत के राजनीतिक और वैचारिक परिदृश्य को आकार दिया है- भागवत ने संघ की आवाज के रूप में और मोदी ने 21वीं सदी में भाजपा के चेहरे के रूप में।

इस मौके को विशेष रूप से महत्वपूर्ण बनाने वाली बात है भागवत का हालिया बयान, जिसमें उन्होंने कहा था कि नेताओं को 75 वर्ष की उम्र के बाद पद छोड़ने पर विचार करना चाहिए। हालांकि उन्होंने किसी का नाम नहीं लिया, लेकिन इस बयान के समय ने राजनीतिक हलकों में अटकलों को जन्म दे दिया है। कई लोग इसे प्रधानमंत्री मोदी के लिए एक परोक्ष संदेश मान रहे हैं, जो अब भी अपनी ऊर्जा और महत्वाकांक्षा के साथ भारतीय राजनीति पर छाए हुए हैं। भाजपा के भीतर इस बयान का विशेष महत्व है। पार्टी ने लंबे समय से एक अलिखित

नियम का पालन किया है कि 75 की उम्र पार करने वाले नेताओं को सक्रिय राजनीति से संन्यास लेना चाहिए। इसी नियम के चलते लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी और जसवंत सिंह जैसे वरिष्ठ नेताओं को मार्गदर्शक मंडल में भेजा गया था, जिससे उनकी सक्रिय राजनीतिक पारी का अंत हो गया था और मोदी को निर्विरोध रूप से प्रधानमंत्री बनने का रास्ता मिला था। अगर यही नियम आज फिर लागू किया जाए, तो अगली बारी मोदी की हो सकती है। हालांकि, आरएसएस में भाजपा की तरह कोई औपचारिक सेवानिवृत्ति की उम्र नहीं होती। संघ के पूर्व सरसंघचालकों ने अक्सर 75 की उम्र पार करने के बाद भी कार्यभार संभाले रखा है। भागवत पर भी ऐसा कोई दबाव नहीं है कि वे पद छोड़ें। लेकिन अगर वे अपने 75वें जन्मदिन पर स्वेच्छा से संन्यास की घोषणा करते हैं, तो यह एक ऐतिहासिक कदम होगा- ऐसा कदम जो न केवल आरएसएस, बल्कि भाजपा में भी पीढ़ीगत बदलाव की पहल कर सकता है। यह एक स्पष्ट संदेश होगा-नेतृत्व समय के साथ बदलना चाहिए, चाहे वह कितना भी उच्च स्तर पर क्यों न हो।

ऐसे किसी कदम से भाजपा पर नैतिक दबाव आ जाएगा कि वह नेतृत्व परिवर्तन पर गंभीरता से विचार करे। अगर वैचारिक मार्गदर्शक पीछे हटता है, तो क्या उसका राजनीतिक शिष्य बिना सवालों के सत्ता में बना रह सकता है? वहीं, अगर भागवत अपने पद पर बने रहते हैं और मोदी भी ऐसा ही करते हैं, तो उम्र और नेतृत्व परिवर्तन की पूरी बहस को फिलहाल टाल दिया जाएगा। एक बात तो निश्चित है- इन दोनों नेताओं का एक ही सप्ताह में 75 वर्ष का होना केवल संयोग नहीं है। यह आत्मचिंतन और संभवतः बदलाव का एक निर्णायक क्षण है। चाहे इससे कोई नेतृत्व परिवर्तन हो या न हो, सितम्बर 2025 को उस समय के रूप में याद किया जाएगा जब भारत की दो सबसे प्रभावशाली संस्थाएं-आरएसएस और भाजपा-पीढ़ीगत बदलाव की दहलीज पर खड़ी थीं। फिलहाल, देश देख रहा है और इंतजार कर रहा है।

■■ इंडिया टुमॉरो-सलीम शेख

सामोसा-जलेबी को निशाना बनाना, अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचाना

स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा मोटापे और जीवनशैली संबंधी बीमारियों से निपटने के लिए एक नई पहल प्रस्तावित की गई है, जिसमें सरकारी कार्यालयों में 'तेल और चीनी चेतावनी बोर्ड' लगाए जाएंगे। इसका उद्देश्य कर्मचारियों को तली-मीठी चीजों से दूर रखना है। लेकिन यह कदम भारत की असंगठित खाद्य अर्थव्यवस्था, जो 3 से 5 लाख करोड़ रुपए तक फैली है, पर बड़ा आर्थिक प्रहार हो सकता है। देश भर में हर दिन लगभग 6 करोड़ समोसे बेचे जाते हैं, जो एक बड़े आपूर्ति श्रृंखला का हिस्सा हैं- किसान, आटा मिल, मसाला निर्माता, तेल रिफाइनर, और अंततः स्ट्रीट वेंडर। जलेबी जैसे लोकप्रिय खाद्य पदार्थ, जैसे अहमदाबाद में दशहरे पर 17 लाख किलो फाफड़ा-जलेबी की बिक्री से 175 करोड़ रुपए कमाए गए, स्थानीय अर्थव्यवस्था की अहम धुरी हैं। लेकिन अब इन्हीं पर 'स्वास्थ्य चेतावनी' का टैग लगाया जा रहा है, जबकि पैकेज्ड फूड्स जैसे चिप्स, कोला या शुगर बार्स पर कोई सख्त नियमन नहीं है, भले ही वे संरक्षक, रंग और रसायनों से भरे हों।

सरकार द्वारा पारंपरिक खाद्य पदार्थों को 'अस्वस्थ' घोषित करना, न केवल गरीबों की पहुंच वाले सस्ते भोजन को कलंकित करता है, बल्कि लाखों छोटे विक्रेताओं की आजीविका को भी खतरे में डालता है। समोसा, जलेबी, लड्डू आदि केवल खाद्य नहीं हैं, बल्कि सांस्कृतिक परंपरा, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा का एक रूप हैं। यदि सरकार वास्तव में स्वास्थ्य सुधार चाहती है, तो उसे बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा बेचे जाने वाले प्रोसेस्ड फूड्स पर सख्त नियम लागू करने चाहिए- न कि पारंपरिक भारतीय व्यंजनों पर हमला करना चाहिए। समोसे या जलेबी मोटापे की असली वजह नहीं हैं, असली समस्या है नीति की असंगतता और बड़े कॉरपोरेट के प्रभाव में आती खाद्य नीतियां। सरकारी चेतावनियों से न केवल पारंपरिक व्यंजन बदनाम होंगे, बल्कि करोड़ों गरीबों की थाली और रोज़गार दोनों प्रभावित होंगे। समाधान चेतावनी बोर्ड नहीं, बल्कि समझदारी भरी नीति होनी चाहिए।

■■ मीडिया मैप न्यूज नेटवर्क

कनाडा में कपिल शर्मा के नए कैफे पर हमला

मशहूर हास्य कलाकार कपिल शर्मा इन दिनों परेशान हैं। ब्रिटिश कोलंबिया के सरे (Surrey) शहर में हाल ही में शुरू किया गया उनका नया कैफे 'कैप्स कैफे (Kap's Cafe)' बुधवार रात से सुर्खियों में है। यह एक हिंसक गोलीबारी का निशाना बना, जिसमें आठ से नौ गोलियां चलाई गईं, जो कथित तौर पर एक स्वचालित हथियार से चलाई गई थीं। इस हमले ने न सिर्फ कपिल शर्मा और उनके परिवार को, बल्कि उनके अनगिनत प्रशंसकों को भी झकझोर कर रख दिया। यह कैफे हाल ही में एक सॉफ्ट लॉन्च के माध्यम से चुपचाप खोला गया था, जिसमें कपिल और उनकी पत्नी गिन्नी चतरथ मौजूद थे।

अब यह बताया जा रहा है कि इस हमले की ज़िम्मेदारी प्रतिबंधित सिख उग्रवादी संगठन बब्बर खालसा इंटरनेशनल (Babbar Khalsa International-BKI) से जुड़े एक कार्यकर्ता ने ली है। इससे कपिल शर्मा की चिंताएं और भी बढ़ गई हैं। हरजीत सिंह लड्डी, जो BKI का एक वांछित आतंकवादी है, ने एक अन्य व्यक्ति तूफ़ान सिंह के साथ एक वीडियो क्लिप के ज़रिए हमले की ज़िम्मेदारी ली है। इनका कहना है कि कपिल शर्मा ने अपने एक शो में निहंग सिखों-जिन्हें 'गुरु की लाडली फ़ौज' भी कहा जाता है-के खिलाफ कथित तौर पर अपमानजनक टिप्पणियां की थीं, और वे चाहते हैं कि कपिल इसके लिए सार्वजनिक माफ़ी मांगें। भारत की राष्ट्रीय जांच एजेंसी (NIA) ने हरजीत सिंह लड्डी को एक वांछित आतंकवादी और बब्बर खालसा का अंतरराष्ट्रीय संचालक घोषित किया हुआ है।

ऑनलाइन साझा किए गए एक वीडियो में लड्डी ने कहा कि यह हमला कपिल शर्मा की कथित टिप्पणियों से आहत होकर किया गया। हालांकि, यह बात गौर करने लायक है कि लड्डी द्वारा साझा किए गए वीडियो में BKI का नाम सीधे तौर पर नहीं लिया गया। लेकिन दोनों-लड्डी और तूफ़ान सिंह—ने चेतावनी दी कि अगर कपिल शर्मा ने सार्वजनिक रूप से माफ़ी नहीं मांगी, तो 'मामला और बिगड़ सकता है।' उन्होंने यह भी दावा किया कि कपिल शर्मा के मैनेजर से संपर्क करने के कई प्रयास किए गए, लेकिन जब कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली, तो उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए यह कदम उठाया गया। मीडिया रिपोर्टों और शुरुआती जानकारियों के अनुसार, हरजीत सिंह लड्डी और कुलबीर सिंह सिद्धू को कनाडा और भारत में कई फिरौती, हत्या और गैंग से जुड़े मामलों से जोड़ा गया है। इसमें पंजाब के नंगल में 2024 में BSP नेता की हत्या भी शामिल है। दोनों पर कई लक्षित हत्याओं और हत्या के प्रयासों के आरोप हैं और ये BKI के नाम पर काम कर रहे हैं। हाल के समय में कनाडा के कई शहरों-जैसे सरे (ब्रिटिश कोलंबिया), ब्रैम्पटन (ओंटारियो), और कैलगरी (अल्बर्टा)-में गैंग से जुड़े आतंकी हमलों में वृद्धि देखी गई है। कई सिख संगठनों ने इन हमलों के पीछे भारतीय एजेंसियों की साज़िश का आरोप लगाया है और यह भी कहा है कि सीमा-पार आतंकवाद और हिंसा चिंता का विषय बनते जा रहे हैं। हालांकि, कपिल शर्मा के कैफ़े पर हालिया हमला आर्थिक नहीं, बल्कि वैचारिक कारणों से हुआ प्रतीत होता है। गोलीबारी की जिम्मेदारी लेने वालों का कहना है कि उनका उद्देश्य पैसे की मांग नहीं, बल्कि कपिल शर्मा द्वारा की गई 'अपमानजनक टिप्पणियों' को लेकर सार्वजनिक माफ़ी की मांग करना था, जिससे वे आहत हुए हैं। ■■ **प्रभजोत सिंह, वरिष्ठ पत्रकार**

CBI पर वेब सीरीज का विवाद

प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में आयोजित एक प्रेस वार्ता में CBI के पूर्व डीआईजी आमोद के. कंठ ने Sony LIV की वेब सीरीज "The Hunt - The Rajiv Gandhi Assassination Case" की कड़ी आलोचना की। उन्होंने आरोप लगाया कि सीरीज में SIT अधिकारियों की छवि को गलत तरीके से पेश किया गया है और थर्ड डिग्री व हिरासत में उत्पीड़न जैसे झूठे दृश्य दिखाए गए हैं। कंठ, जो 1991 में हत्या स्थल पर पहुंचने वाले पहले CBI अधिकारी थे, ने कहा कि उनके और सहयोगियों के असली नाम व झूठे घटनाक्रमों का इस्तेमाल किया गया। उन्होंने निर्माता नागेश कुकुनूर पर जानबूझकर तथ्य बदलने का आरोप लगाया। मेजर जनरल माणिक सबरवाल और वरिष्ठ अधिवक्ता राजन राज ने भी समर्थन में कहा कि सीरीज न केवल अधिकारियों बल्कि CBI की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाती है। वक्ताओं ने ओटीटी कंटेंट पर नियामक नियंत्रण की जरूरत पर ज़ोर दिया और न्यायपालिका से हस्तक्षेप की मांग की। कंठ ने पत्रकारों से उनकी लिखी पुस्तक पढ़ने की अपील की, जिसमें उन्होंने जांच की सच्ची कहानी दर्ज की है। ■■ **मीडिया मैप न्यूज नेटवर्क**

बीमार मानसिकता पर गहरा अफसोस

जयपुर में मेरे एक मित्र स्कूल चलाते हैं। एक दिन उनके स्कूल के पास की नाली चोक हो गई। गंदा पानी इधर-उधर फैलने लगा और माहौल बदबू से भर गया। उन्होंने कुछ नौजवान सफाई कर्मियों को बुलाया और उनसे बड़ी विनम्रता से मदद करने का आग्रह किया।

वे नौजवान बिना किसी हिचकिचाहट के तैयार हो गए। उन्होंने पसीना बहाया और मेहनत से नाली साफ कर दी। काम पूरा हुआ तो मास्टर साहब का दिल कृतज्ञता से भर उठा। उन्होंने उन्हें मजदूरी देना चाहा। लेकिन वे मुस्कुराए और बोले- 'गुरु जी, आपसे पैसे नहीं लेंगे।'

मास्टर जी ने स्नेहपूर्वक कहा- 'अच्छा, पैसे नहीं तो चाय ही सही, वो तो पी लोगे?' इस बार उन्होंने सहर्ष हामी भर दी। मास्टर जी पास की एक दुकान पर गए और चायवाले से कहा कि इन नौजवानों को चाय पिला दो।

लेकिन तभी चायवाले के शब्द बर्फ की तरह गिरे- 'मेरे पास इनके लिए कप नहीं हैं।'

उस एक वाक्य में सदियों की गंदगी टपक पड़ी। वे नौजवान सब समझ गए। उनके चेहरे पर एक दर्द भरी मुस्कान थी। उन्होंने धीमी आवाज में मास्टर जी से कहा- 'गुरु जी, रहने दीजिए...फिर कभी सही।'

मास्टर जी के दिल को यह बात चीर गई। उन्होंने चायवाले से सख्त लहजे में कहा- 'तुम्हें शर्म नहीं आती? इंसानों में भेदभाव करते हो?' लेकिन चायवाला अपनी जिद पर अड़ा रहा।

मास्टर जी ने देर न की। वे तुरंत उन नौजवानों को अपने दफ्तर ले गए। अपने ही घर से चाय बनवाई और उन्हें इज्जत से बैठाकर अपने घर के कपों में चाय पिलाई। उस क्षण उनके घर की चाय, चाय न होकर इज्जत और इंसानियत का पैगाम बन गई और नौजवानों के दिलों में मास्टर जी का आदर और भी बढ़ गया।

यह घटना मास्टर जी ने मुझे स्वयं सुनाई थी। उनके लहजे में गहरा दुख था। और जब भी मैं इसे याद करता हूं, मेरे मन में दो भाव एक साथ जागते हैं- एक तरफ मास्टर जी के लिए आदर-भाव, और दूसरी तरफ उस चायवाले की बीमार मानसिकता पर गहरा अफसोस।

आज हम अपनी आजादी की 79वीं सालगिरह मना रहे हैं। लेकिन यह घटना याद दिलाती है कि हमें अभी भी कई अदृश्य बेड़ियों से आजाद होना बाकी है। असली आजादी तभी होगी जब हम इंसान को सिर्फ इंसान मानना सीखेंगे। ■■ **डॉ. मुहम्मद इक़बाल सिद्दीक़ी**

ईसाई-विरोधी हिंसा का बढ़ता ग्राफ

राम पुनियानी

कुछ दिन पहले (26 जुलाई 2025) दो ईसाई ननों को छत्तीसगढ़ के दुर्ग रेलवे स्टेशन पर हिरासत में लिया गया। उन पर जो आरोप लगाए गए, वे गंभीर थे जबकि मामला केवल इतना था कि उनके साथ तीन महिलाएं थीं, जो नर्स बनने का प्रशिक्षण लेना चाहती थीं। एक सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल, जिसमें सीपीएम की वृंदा करात भी शामिल थीं, को उनसे मिलने में बहुत कठिनाईयां पेश आई। ननों पर मानव तस्करी एवं धर्मपरिवर्तन करवाने के आरोप लगाए गए। जहां राज्य के मुख्यमंत्री मानव तस्करी एवं धर्मपरिवर्तन के प्रयास के आरोपों पर अड़े हुए हैं, वहीं इन महिलाओं के अभिभावकों ने कहा कि उन्होंने उन्हें रोजगार के बेहतर अवसर तलाशने के लिए इन ननों के साथ जाने की इजाजत दी थी।

ईसाईयों को किसी न किसी बहाने डराने-धमकाने की घटनाएं पिछले 11 सालों के दौरान तेजी से बढ़ी हैं और यह हिंसा भाजपा शासित राज्यों में अधिक हो रही है। स्थानीय एवं वैश्विक संस्थाओं की कई रपटों में भारत में ईसाईयों के बढ़ते उत्पीड़न पर चिंता व्यक्त की गई है। प्रार्थना सभाओं पर यह आरोप लगाते हुए हमला किया जाता है कि उनका आयोजन धर्मपरिवर्तन के उद्देश्य से हो रहा है। दूरदराज के इलाकों में रहने वाले पॉस्टरों और ननों पर हमलों और उत्पीड़न का खतरा कहीं अधिक होता है। बजरंग दल दूरदराज के इलाकों में असहाय ननों और पॉस्टरों पर कानून अपने हाथ में लेकर सीधी कार्यवाही करने में अपनी शान समझता है।

एक अन्य मसला है ईसाईयों के शवों को दफनाने का, ईसाईयों को साझा आदिवासी कब्रिस्तानों में अपने मृतकों को दफन करने से रोका जा रहा है। जैसे 26 अप्रैल, 2024 को छत्तीसगढ़ में एक 65 वर्षीय ईसाई पुरुष की मौत एक अस्पताल में हो गई। उसके शोकग्रस्त परिवार को तब और अधिक पीड़ा झेलनी पड़ी जब स्थानीय धार्मिक उग्रपंथियों ने उसे गांव में दफनाए जाने में अवरोध खड़े कर दिए और उनसे मांग की कि वे पुनः धर्मपरिवर्तन कर हिंदू धर्म स्वीकार करें। पुलिस के संरक्षण में परिवार ने ईसाई रस्मों एवं रिवाजों के अनुरूप शव को दफनाया। गांव में शांति सुनिश्चित करने के लिए वहां लगभग 500 पुलिसकर्मियों को तैनात करना पड़ा।

ईसाईयों के एक बड़े पंथ के उत्पीड़ित नेता ने 2023 में कहा था, 'हर दिन गिरजाघरों और पॉस्टरों पर चार या पांच हमले होते हैं और हर रविवार यह संख्या दुगनी होकर 10 के करीब पहुंच जाती है। इतने बुरे हालात हमने पहले कभी नहीं देखे।' उनके अनुसार 'भारत में ईसाईयों का प्रमुख उत्पीड़क संघ

♦♦

ईसाईयों को किसी न किसी बहाने डराने-धमकाने की घटनाएं पिछले 11 सालों के दौरान तेजी से बढ़ी हैं और यह हिंसा भाजपा शासित राज्यों में अधिक हो रही है। स्थानीय एवं वैश्विक संस्थाओं की कई रपटों में भारत में ईसाईयों के बढ़ते उत्पीड़न पर चिंता व्यक्त की गई है। प्रार्थना सभाओं पर यह आरोप लगाते हुए हमला किया जाता है कि उनका आयोजन धर्मपरिवर्तन के उद्देश्य से हो रहा है। दूरदराज के इलाकों में रहने वाले पॉस्टरों और ननों पर हमलों और उत्पीड़न का खतरा कहीं अधिक होता है। बजरंग दल दूरदराज के इलाकों में असहाय ननों और पॉस्टरों पर कानून अपने हाथ में लेकर सीधी कार्यवाही करने में अपनी शान समझता है।

♦♦

परिवार है, जो हिंदू उग्रपंथियों का संगठन है। शक्तिशाली अर्धसैनिक और रणनीतिक संगठन आरएसएस, प्रमुख राजनैतिक दल भाजपा और हिंसक युवा संगठन बजरंग दल इसके भाग हैं।

दो प्रमुख संगठन वैश्विक स्तर पर ओपन डोर्स और भारत में पर्सीक्यूशन रिलीफ- इन अत्याचारों पर नजर रखने का अमूल्य कार्य कर रहे हैं क्योंकि प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया का ज्यादातर हिस्सा या तो इस मुद्दे पर चुप्पी साधे हुए है या सच्चाई नहीं बताता।

पर्सीक्युशन रिलीफ ने 2020 में जारी अपनी रपट में कहा 'भारत में ईसाईयों के प्रति नफरत के कारण किए जाने वाले अपराधों में 40.87 प्रतिशत की डरावनी वृद्धि हुई है। यह वृद्धि कोविड-19 महामारी का फैलाव रोकने के लिए लगाये गए तीन माह के राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन के बावजूद हुई है।' ओपन डोर्स, जो वैश्विक स्तर पर ईसाईयों पर हो रहे अत्याचारों पर नजर रखता है, के अनुसार भारत 'विशेष चिंता' वाले राष्ट्रों की सूची में 11वें स्थान पर है।

सुधी सेल्वाराज और कैनेथ नेल्सन का कहना है कि 'इस ईसाई विरोधी हिंसा...की विशेषता यह है कि यह...सीधी, संरचनात्मक और सांस्कृतिक हिंसा का मिश्रण है, जिसमें स्व-नियुक्त ठेकेदारों के हमले, पुलिस की मिलीभगत, और कानूनों के दुरुपयोग के साथ-साथ यह सोच भी शामिल है कि गैर-हिन्दू अल्पसंख्यक राष्ट्र विरोधी होते हैं।'

ईसाई-विरोधी हिंसा के विभिन्न स्वरूपों में बढ़ोत्तरी की व्यापक तस्वीर पिछले कुछ दशकों में अधिकाधिक स्पष्ट नजर आती गई है। ऐसा नहीं है कि यह हिंसा हाल ही में शुरू हुई हो। ज्यादातर मामलों में दूरदराज के इलाकों में यह अन्दर ही अन्दर जारी रही है। मुस्लिम विरोधी हिंसा का लंबा इतिहास रहा है और यह कई बार विकराल रूप में सामने आई है। इसने बड़े पैमाने पर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। ईसाई विरोधी हिंसा का स्वरूप (कंधमाल हिंसा और पॉस्टर स्टेन्स को जलाए जाने की घटना को छोड़कर) अलग प्रकार का रहा है। यह चलती रहती है किंतु इसकी ओर आसानी से ध्यान नहीं जाता।

ऐसी पहली बड़ी घटना 1995 में इंदौर में हुई जब रानी मारिया की चाकुओं से गोदकर निर्ममता से हत्या कर दी गई। इसके बाद

ईसाई-विरोधी हिंसा के विभिन्न स्वरूपों में बढ़ोत्तरी की व्यापक तस्वीर पिछले कुछ दशकों में अधिकाधिक स्पष्ट नजर आती गई है। ऐसा नहीं है कि यह हिंसा हाल ही में शुरू हुई हो। ज्यादातर मामलों में दूरदराज के इलाकों में यह अन्दर ही अन्दर जारी रही है। मुस्लिम विरोधी हिंसा का लंबा इतिहास रहा है और यह कई बार विकराल रूप में सामने आई है। इसने बड़े पैमाने पर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। ईसाई विरोधी हिंसा का स्वरूप (कंधमाल हिंसा और पॉस्टर स्टेन्स को जलाए जाने की घटना को छोड़कर) अलग प्रकार का रहा है। यह चलती रहती है किंतु इसकी ओर आसानी से ध्यान नहीं जाता।

1999 में पॉस्टर ग्राहम स्टेन्स की हत्या हुई। वे एक आस्ट्रेलियाई मिशनरी थे और ओडिशा के क्योंझर में काम कर रहे थे। वे कुष्ठ रोगियों की सेवा का काम करते थे। उन पर धर्मपरिवर्तन में शामिल होने का आरोप लगाया गया। उन पर हुए हमले का नेतृत्व बजरंग दल के दारा सिंह ने किया था, जिसने स्थानीय लोगों को उन पर हमला करने के लिए उकसाया। यह अत्यंत भयावह हमला था क्योंकि इसमें उन्हें उनके दो नाबालिग लड़कों टिपोथी और फिलिप के साथ तब जिंदा जला दिया गया था जब वे अपनी खुली जीप में सो रहे थे।

इस हमले को भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति के.आर. नारायणन ने 'दुनिया के सबसे काले कामों में से एक' की संज्ञा दी थी। उस समय अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में एनडीए-भाजपा सरकार सत्ता में थी। वे इस नतीजे पर पहुंचे कि यह सरकार को बदनाम करने के लिए विदेशी शक्तियों द्वारा रची गई साजिश थी। बाद में वाधवा आयोग की रपट आई जिसमें यह कहा गया कि राजेन्द्र पाल उर्फ दारासिंह प्रमुख षड्यंत्रकर्ता था। वह इस समय जेल में आजीवन कारावास की सजा काट रहा है।

इसके पहले आरएसएस द्वारा स्थापित वनवासी कल्याण आश्रम यह प्रचार कर रहा था कि ईसाई मिशनरी शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य करने का दिखावा कर रहे हैं। इस संस्था के प्रमुख आश्रम गुजरात के डांग, मध्यप्रदेश के झाबुआ और उड़ीसा के कंधमाल में स्थापित किए गए और स्वामी असीमानंद और स्वामी लक्ष्माणानंद जैसे लोगों ने अपने एजेंडे के मुताबिक प्रचार शुरू किया। इसी दौरान आदिवासियों को हिंदू सांस्कृतिक और धार्मिक प्रतीकों की ओर आकर्षित करने के लिए कई शबरी कुंभ आयोजित किए गए।

आदिवासी इलाकों में अभाव और निर्धनता की प्रतीक शबरी को एक देवी की तरह प्रचारित किया गया। इसके साथ ही भगवान हनुमान को भगवान राम के प्रति उनकी निष्ठा पर जोर देते हुए प्रस्तुत किया गया। इस धार्मिक-सांस्कृतिक परियोजना के नतीजे में इन दोनों देवी-देवताओं के कई मंदिर भी स्थापित हुए। इस प्रचार-प्रसार के शोरगुल के बीच यह बात भुला दी गई कि ईसाई धर्म भारत में कई सदियों से मौजूद है। यह धर्म भारत में सन् 52 में पहुंचा जब सेंट थामस ने मालाबार के तट पर एक चर्च की स्थापना की। ईसाई मिशनरियों के क्रियाकलाप पिछले लगभग दो सौ सालों से चल रहे हैं। इसके बावजूद देश की कुल जनसंख्या में उनका प्रतिशत केवल 2.3 है। दिलचस्प बात यह है कि जनगणना के आंकड़ों के अनुसार सन् 1971 में वे 2.6 प्रतिशत थे और आज 2.3 प्रतिशत हैं। वहीं प्रचार तंत्र यह बात फैलाने में जुटा हुआ है कि ईसाई मिशनरी बलपूर्वक, छल-कपट से और प्रलोभन देकर धर्मपरिवर्तन करवा रहे हैं। कई राज्यों में धर्मपरिवर्तन विरोधी कानून बनाए गए हैं, जिनका इस्तेमाल मिशनरी कार्यकर्ताओं को और अधिक आतंकित करने के लिए किया जा रहा है।

आरएसएस के द्वितीय सरसंघचालक गोलवलकर ने अपनी पुस्तक 'बंच ऑफ थाट्स' में लिखा था कि मुस्लिम, ईसाई और कम्युनिस्ट हिंदू राष्ट्र के लिए आंतरिक खतरे हैं। शायद इसी के अनुरूप, मुस्लिम विरोधी हिंसा के बाद ईसाई विरोधी हिंसा को एजेंडा में शामिल किया गया है।

(लेखक आईआईटी मुंबई के पूर्व प्रोफेसर हैं। सन् 2007 में उनको नेशनल कम्युनल हार्मोनी एवार्ड से सम्मानित किया गया है)

क्या होगा धनखड़ का अगला कदम

प्रो. प्रदीप माथुर

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ का अचानक दिया गया इस्तीफा पूरे देश को चौंका गया। यह कई मायनों में अभूतपूर्व था। आज तक किसी उपराष्ट्रपति ने अपने कार्यकाल के बीच में पद नहीं छोड़ा, जब तक कि उन्हें राष्ट्रपति बनने की संभावना न हो। और फिर, हमारे संसदीय लोकतंत्र के सबसे उच्च और सम्मानित सदन की अध्यक्षता करने वाला कोई व्यक्ति तब पद नहीं छोड़ता जब सत्र चल रहा हो।

क्या हमने धनखड़ को आखिरी बार देखा है? क्या वे इतिहास के पन्नों में खो जाएंगे, जैसे वे लोग जो कभी ऊँचे पदों पर थे? अगर आप उनके समुदाय जाटों के बारे में यह कहावत सुने हों तो शायद नहीं– 'जाट मरे तब जानिए जब तेरही पूरी हो।'

यह बात मजाक में भी कही जाती है और ताने के रूप में भी, लेकिन यह जाटों की अडिग भावना और अंत तक लड़ने की क्षमता को दर्शाती है। इसलिए, एक राजनेता के रूप में धनखड़ का अंत अभी नहीं हुआ है। निश्चित रूप से आगे कुछ और होने वाला है। अब यह भी चर्चा है कि उन्होंने विपक्ष से कोई सौदा कर लिया है। उनके इस्तीफे पर कांग्रेस की अप्रत्याशित रूप से नरम प्रतिक्रिया को इसका प्रमाण माना जा रहा है। लेकिन इस संभावना से दो सवाल खड़े होते हैं–

- पहला, विपक्ष की ओर झुकाव से उन्हें क्या लाभ है? उनके पास अभी दो साल का कार्यकाल बचा था और यदि भाजपा की शीर्ष नेतृत्व उनसे किसी वजह से नाखुश था तो वह किसी भी कीमत पर समझौता कर सकते थे। आखिरकार, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल बनने के बाद से उनके आचरण में कभी भी गरिमा या शालीनता की झलक नहीं दिखी।
- फिर सवाल उठता है– क्या विपक्ष इतनी आसानी से कोलकाता और फिर दिल्ली में पिछले तीन सालों में धनखड़ की पक्षपाती भूमिका को भूल जाएगा? और मान भी लें कि अतीत को भुला दिया गया, तो सवाल यह है कि विपक्ष उन्हें क्या दे सकता है? और वह विपक्ष के लिए उपयोगी कैसे हो सकते हैं? लेकिन असली सवाल यह है कि अब उनका अगला कदम क्या होगा?
- इसमें कोई शक नहीं कि मोदी के पैरों के नीचे से जमीन लोकसभा चुनावों में खिसकती हुई दिख रही है। भारत जोड़ो यात्रा ने भी राहुल गांधी को एक भरोसेमंद नेता के रूप में स्थापित कर दिया, भले ही भाजपा ने उनके खिलाफ निरंतर अभियान चलाया हो। यात्रा में अप्रत्याशित जनसमर्थन से यह स्पष्ट हो गया कि जनता अब नेहरू-गांधी परिवार और खासकर राहुल गांधी के खिलाफ झूठे प्रचारों से प्रभावित नहीं हो रही है।
- राजनीति में सत्ता में बने रहना और जनसमर्थन बनाए रखना एक जैसी बात नहीं है। आपातकाल के समय इंदिरा गांधी पूरी तरह नियंत्रण में दिखती थीं, लेकिन उनकी जनाधार खत्म हो चुकी थी।
- 1987 में रिश्वत कांड के बाद राजीव गांधी ने 1984 में मिली ऐतिहासिक जीत खो दी, लेकिन 1989 तक प्रधानमंत्री बने रहे। डॉ. मनमोहन सिंह का भी यही हाल 2012 में था। तो क्या धनखड़ इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि मोदी ने जनसमर्थन खो दिया है और भाजपा सरकार के दिन गिने-चुने रह गए हैं?
- मान भी लें कि ऐसा है, तो मोदी के बाद के परिदृश्य में धनखड़ को क्या हासिल हो सकता है? इस बिंदु को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए कि बीमार चल रहे सतपाल मलिक के बाद, धनखड़ देश के सबसे बड़े जाट नेता हैं। और इस समुदाय के लिए राजनीतिक रंग बदलना कोई बड़ी बात नहीं है। उनके लिए यह पर्याप्त है कि धनखड़ देश के दूसरे सबसे बड़े पद पर रहे।
- चरण सिंह के बाद सबसे ऊंचे और उनके बेटे अजित सिंह से भी ऊंचे, जो केंद्रीय मंत्री थे, और सतपाल मलिक से भी ऊपर, जो सिर्फ राज्यपाल रहे।

धनखड़ के इस्तीफे को लेकर कई तरह की अटकलें लगाई जा रही हैं, लेकिन कोई भी पूरी तरह से विश्वसनीय नहीं लगती। आइए इन अटकलों पर एक संक्षिप्त नजर डालते हैं–

- स्वास्थ्य कारण बताया गया, लेकिन इस पर कोई विश्वास नहीं कर रहा। कोई बीमार व्यक्ति रात 9 बजे अपने बेडरूम में जाता है, न कि अचानक राष्ट्रपति भवन

में मुलाकात के लिए।

- पहली प्रतिक्रिया भाजपा-आरएसएस से जुड़े सूत्रों से आई, कि आपसी समझ के बाद धनखड़ से इस्तीफा देने को कहा गया ताकि उन्हें राजस्थान की राजनीति में कोई भूमिका मिल सके। साथ ही भाजपा नेतृत्व ऐसे किसी व्यक्ति को उपराष्ट्रपति बनाना चाहता था जो आगामी चुनावों में विशेष रूप से बिहार में अधिक उपयोगी हो सके, जहां भाजपा के नेतृत्व वाला गठबंधन कड़ी चुनौती का सामना कर रहा है। इस क्रम में बिहार के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नाम सामने आए- आरिफ को नाराज मुस्लिम समुदाय (जो बिहार के 20% से अधिक मतदाता हैं) को लुभाने के लिए, और नीतीश को चिराग पासवान को शांत करने के लिए, जो एनडीए के साथ वही कर सकते हैं जो पिछले साल हरियाणा में केजरीवाल ने कांग्रेस गठबंधन के साथ किया था।
- हालांकि यह थ्योरी जल्द ही कमजोर पड़ गई, क्योंकि खबरें आईं कि धनखड़ और भाजपा नेतृत्व के बीच गहरे मतभेद हैं। इसलिए यह धारणा कि उन्होंने भाजपा के शीर्ष नेतृत्व से मतभेद के कारण पद छोड़ा, सबसे विश्वसनीय मानी जा रही है। इन मतभेदों के कारण जैसे कि उच्च न्यायपालिका के खिलाफ धनखड़ की टिप्पणी और न्यायमूर्ति वर्मा के खिलाफ विपक्ष का प्रस्ताव- अब शहर में चर्चा का विषय बन चुके हैं। लेकिन यह कम ज्ञात है कि उसी दिन गृहमंत्री अमित शाह और धनखड़ के बीच तीखी बहस की अपुष्ट खबरें भी हैं।
- यह भी कहा जा रहा है कि धनखड़ ने महाभियोग की आशंका से इस्तीफा दिया, लेकिन यह विश्वसनीय नहीं लगता क्योंकि महाभियोग की प्रक्रिया इतनी आसान नहीं होती। अत: इन सब अटकलों के बावजूद इस्तीफे का असली कारण इन कयासों से परे है। जब तक खुद वे कुछ नहीं बताते या कोई अगला कदम नहीं उठाते, तब तक इसका कारण एक अनुमान ही बना रहेगा।
- यह माना जा सकता है कि उन्होंने जल्दबाजी में कदम नहीं उठाया है। उनका यह निर्णय सोचा-समझा है। लेकिन उनकी योजना को समझना आसान नहीं, क्योंकि यह वर्तमान परिस्थितियों से परे लगती है। उनके इतिहास को देखें तो वे एक पार्टी बदलने वाले नेता रहे हैं- कांग्रेस से वी.पी. सिंह की जनता दल से होते हुए भाजपा तक- और यह स्पष्ट है कि सत्ता में बने रहना ही उनकी एकमात्र विचारधारा है।
- हम यह सब जानते हैं। लेकिन क्या वे एक राजनीतिक मौसम का सटीक पूर्वानुमान लगाने वाले भी हैं? क्या वे राजनीतिक मौसम को इतनी बारीकी से समझते हैं कि इतने उच्च पद को दांव पर लगा सकते हैं?
- तो सवाल यह है कि वो क्या देख रहे हैं? सीधे शब्दों में कहें तो, क्या वे मोदी युग के अंत की आहट देख रहे हैं और इसलिए बहुत पहले से अपनी अगली योजना तैयार कर ली है?
- अगर ऐसा है, तो वे निश्चित ही सबसे चालाक राजनेता साबित होंगे। वे वह देख पा रहे हैं जो और कोई कल्पना भी नहीं कर पा रहा। क्या इसका अर्थ यह है कि तमाम ताकत और आत्मविश्वास के प्रदर्शन के बावजूद मोदी सरकार अपने अंतिम चरण में है?

ऐसे कोई स्पष्ट संकेत नहीं हैं। लेकिन ऐसा लगता है कि सब कुछ ठीक भी नहीं है। विपक्ष के शोरगुल से अलग, दो संकेत महत्वपूर्ण हैं-

- भाजपा अध्यक्ष के चयन में हो रही देरी, जो न केवल आरएसएस के साथ टकराव का संकेत देती है बल्कि मोदी के सर्वशक्तिमान छवि में भी बड़ी दरार दिखाती है।
- मोदी के करीबी सूत्रों से खबरें कि वे मानसून सत्र के बाद पद छोड़ सकते हैं ताकि अपनी उस नीति का पालन कर सकें कि 75 वर्ष की आयु के बाद कोई भी सत्ता के पद पर न रहे।
- इसमें कोई संदेह नहीं कि मोदी के बाद का भारत आज के राजनीतिक परिदृश्य से बहुत अलग होगा, जिसमें नई राजनीतिक समीकरण उभरेंगे।

■■■■

राजनीति में सत्ता में बने रहना और जनसमर्थन बनाए रखना एक जैसी बात नहीं है। आपातकाल के समय इंदिरा गांधी पूरी तरह नियंत्रण में दिखती थीं, लेकिन उनकी जनाधार खत्म हो चुकी थी।

1987 में रिश्वत कांड के बाद राजीव गांधी ने 1984 में मिली ऐतिहासिक जीत खो दी, लेकिन 1989 तक प्रधानमंत्री बने रहे। डॉ. मनमोहन सिंह का भी यही हाल 2012 में था। तो क्या धनखड़ इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि मोदी ने जनसमर्थन खो दिया है और भाजपा सरकार के दिन गिने-चुने रह गए हैं?

मान भी लें कि ऐसा है, तो मोदी के बाद के परिदृश्य में धनखड़ को क्या हासिल हो सकता है? इस बिंदु को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए कि बीमार चल रहे सतपाल मलिक के बाद, धनखड़ देश के सबसे बड़े जाट नेता हैं। और इस समुदाय के लिए राजनीतिक रंग बदलना कोई बड़ी बात नहीं है। उनके लिए यह पर्याप्त है कि धनखड़ देश के दूसरे सबसे बड़े पद पर रहे।

चरण सिंह के बाद सबसे ऊंचे और उनके बेटे अजित सिंह से भी ऊंचे, जो केंद्रीय मंत्री थे, और सतपाल मलिक से भी ऊपर, जो सिर्फ राज्यपाल रहे।

धनखड़ के इस्तीफे को लेकर कई तरह की अटकलें लगाई जा रही हैं, लेकिन कोई भी पूरी तरह से विश्वसनीय नहीं लगती।

स्वास्थ्य कारण बताया गया, लेकिन इस पर कोई विश्वास नहीं कर रहा। कोई बीमार व्यक्ति रात 9 बजे अपने बेडरूम में जाता है, न कि अचानक राष्ट्रपति भवन में मुलाकात के लिए।

समस्या

गाड़ियों की अनिवार्य स्क्रैपिंग नीति पर पुनर्विचार की जरूरत

भारत एक शक्तिशाली अर्थव्यवस्था है। अब यह आधिकारिक रूप से चार ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बन चुका है-लेकिन असल में इसकी क्षमता कहीं ज्यादा है। यह वह देश है जो हर साल 18 लाख करोड़ की गाड़ियां स्क्रैप कर देता है- ऐसा दुनिया का कोई और देश नहीं करता, यहां तक कि अमेरिका भी नहीं।

दिल्ली में 62 लाख तथाकथित 'एंड-ऑफ-लाइफ (ELV)' वाहनों को निशाना बनाया गया है। अपराध रोकने में असमर्थ पुलिसकर्मी अब उन लोगों की गाड़ियां जब्त कर रहे हैं जो केवल काम, अस्पताल या स्कूल जा रहे हैं- सिर्फ इसलिए कि उन्होंने दिल्ली में प्रवेश किया या पेट्रोल पंप पर रुके। यह उत्पीड़न का एक नया, 'आधुनिक' तरीका है जो नागरिकों को अपमानित करता है और उनकी संपत्ति छीनता है- ऐसी क्रूरता तो बदनाम वामपंथी सरकारों ने भी नहीं की थी। इनमें से कई वाहन मालिकों ने सात साल तक EMI चुकाकर ये गाड़ियं खरीदी थीं, और अब राज्य उनकी मेहनत की कमाई को 'कबाड़' बताकर छीन लेता है।

यह अव्यावहारिक नीति राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR) की मूल भावना को भी नष्ट कर देती है, जिसे कभी दिल्ली,

प्रो. शिवाजी सरकार

उत्तर प्रदेश, हरियाणा और राजस्थान को एकीकृत शहरी क्षेत्र के रूप में विकसित करने की परिकल्पना की गई थी।

सरकार को चाहिए कि वह इस अतार्किक स्क्रैप नीति को तुरंत रद्द करे। गाड़ियों को तब तक चलने दिया जाए जब तक वे वास्तव में अनुपयोगी न हो जाएं- चाहे वह 40 साल हो या उससे ज्यादा- और भारतीय संपत्ति को स्वाभाविक रूप से बढ़ने दिया जाए।

संपत्ति को कबाड़ में तब्दील करती एक अर्थव्यवस्था : हर साल दो करोड़ गाड़ियां रद्दी कर दी जाती हैं- यह एक चौंकाने वाला आंकड़ा है। कोई भी अर्थव्यवस्था इतनी पूंजी नष्ट करके कैसे जीवित रह सकती है, या आगे कैसे बढ़ सकती है?

♦♦

हर साल दो करोड़ गाड़ियां रद्दी कर दी जाती हैं- यह एक चौंकाने वाला आंकड़ा है। कोई भी अर्थव्यवस्था इतनी पूंजी नष्ट करके कैसे जीवित रह सकती है, या आगे कैसे बढ़ सकती है? इसका किसी ने जवाब नहीं दिया है। प्रति वाहन औसतन 9 लाख के हिसाब से 18 लाख करोड़ की संपत्ति हर साल स्क्रैप कर दी जाती है। यदि इसमें बस और ट्रक भी जोड़ें, तो यह आंकड़ा 30 लाख करोड़ से ऊपर पहुंच सकता है। यह नीति नहीं, पागलपन है। यह संपत्ति-विनाश हर साल लगभग दो करोड़ परिवारों को गरीब बनाता है। पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में सार्वजनिक परिवहन बर्बाद हो गया है क्योंकि निजी बस मालिक पुरानी बसों को बदलने में असमर्थ हैं। गाड़ियों की कीमतें कई गुना बढ़ चुकी हैं, और बैंक भी 'स्क्रैप' टैग लगी गाड़ियों के लिए कर्ज देने से हिचकते हैं। इसका असर ग्रामीण गतिशीलता पर विनाशकारी है। दिल्ली परिवहन निगम ने भी पड़ोसी राज्यों जैसे यूपी, राजस्थान, हिमाचल और उत्तराखंड में बसें भेजनी बंद कर दी हैं- लागत और CNG ढाँचे की कमी का हवाला देते हुए। लेकिन कोई चिंता नहीं दिखाता।

♦♦

इसका किसी ने जवाब नहीं दिया है। प्रति वाहन औसतन 9 लाख के हिसाब से 18 लाख करोड़ की संपत्ति हर साल स्क्रैप कर दी जाती है। यदि इसमें बस और ट्रक भी जोड़ें, तो यह आंकड़ा 30 लाख करोड़ से ऊपर पहुंच सकता है।

यह नीति नहीं, पागलपन है। यह संपत्ति-विनाश हर साल लगभग दो करोड़ परिवारों को गरीब बनाता है। पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में सार्वजनिक परिवहन बर्बाद हो गया है क्योंकि निजी बस मालिक पुरानी बसों को बदलने में असमर्थ हैं। गाड़ियों की कीमतें कई गुना बढ़ चुकी हैं, और बैंक भी 'स्क्रैप' टैग लगी गाड़ियों के लिए कर्ज देने से हिचकते हैं। इसका असर ग्रामीण गतिशीलता पर विनाशकारी है।

दिल्ली परिवहन निगम (DTC) ने भी पड़ोसी राज्यों जैसे यूपी, राजस्थान, हिमाचल और उत्तराखंड में बसें भेजनी बंद कर दी हैं- लागत और ष्टह्लढाँचे की कमी का हवाला देते हुए। लेकिन कोई चिंता नहीं दिखाता।

स्क्रैपिंग की राजनीति : यह सामूहिक स्क्रैपिंग कोई दुर्घटना नहीं है- यह एक सुनियोजित खेल लगता है, एक ऐसा रैकेट जो कुछ लोगों को अमीर बनाता है और करोड़ों से उनकी संपत्ति छीन लेता है। केंद्र सरकार ने स्क्रैपिंग को बढ़ावा देने के लिए राज्यों को 5,000 करोड़ आवंटित किए हैं- ऐसा उदाहरण दुनिया में कहीं नहीं मिलता। कोई भी विवेकपूर्ण देश सार्वजनिक धन का उपयोग कार्यरत संपत्ति को नष्ट करने के लिए नहीं करता।

सरकार का तर्क है कि यह नीति प्रदूषण घटाएगी और सड़क सुरक्षा बढ़ाएगी। लेकिन यह तर्क टिकता नहीं। अधिकतर 10 साल पुरानी गाड़ियां एक प्रतिशत या थोड़ा अधिक ही प्रदूषण करती हैं- तो फिर स्क्रैपिंग की जरूरत क्यों?

CSE-टाटा गठजोड़ : दो करोड़ ELV वाहनों का संदिग्ध आंकड़ा सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (CSE) की एक रिपोर्ट से आता है- जो अब विवादों में है। क्यों? क्योंकि इस अध्ययन को टाटा ट्रस्ट्स ने फंड किया था- और टाटा भारत की सबसे बड़ी ऑटो कंपनियों में से एक है। यह हितों के टकराव (Conflict of Interest) का स्पष्ट मामला है। कुछ विदेशी संगठन जैसे Sida (स्वीडन), मैकआर्थर फाउंडेशन और यूरोपीय आयोग ने भी इस परियोजना में योगदान दिया, परंतु टाटा ने वित्तपोषण की पूर्ण प्रतिबद्धता दी। जब नीति किसी कार निर्माता द्वारा प्रायोजित रिपोर्ट पर आधारित हो, तो जनता का भरोसा टूटता है। फिर भी यह बात चर्चा से बाहर रही- एक, क्योंकि कंपनियों का पीआर तंत्र बेहद ताकतवर है, और दूसरा, क्योंकि आज का मीडिया अक्सर पीआर एजेंसी जैसा ही व्यवहार करता है।

CSE लगातार कहता है कि दिल्ली में प्रदूषण की जड़ गाड़ियां हैं- जबकि इसके पक्ष में कोई ठोस तथ्य नहीं हैं। इस खतरनाक गठजोड़ की NIA से जांच कराई जानी चाहिए। आखिर क्यों एक नई सरकार एक ऐसी जनविरोधी नीति को आगे बढ़ा रही है जो लॉबिंग से पैदा हुई थी?

'एंड ऑफ लाइफ' का मिथक : FACT-LY के अनुसार, 6.1 करोड़ गाड़ियों को ELV घोषित कर दिया गया है- यह शब्द ऑटोमोबाइल उद्योग की बिक्री बढ़ाने के लिए गढ़ा गया था। लेकिन न तो मनुष्यों और न ही मशीनों की 'अवधि' पहले से तय हो सकती है। 'एंड ऑफ लाइफ' की तारीख कोई ईश्वरीय भविष्यवाणी नहीं है- यह एक बाबू, पुलिसकर्मी या कबाड़ी वाला तय करता है- और वह भी अक्सर मिलीभगत में।

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय (MoRTH) कहता है कि 20 साल से पुरानी 51 लाख और 15 साल से अधिक पुरानी 34 लाख हल्की गाड़ियां हैं। इसके अलावा 17 लाख मध्यम और भारी वाहन बिना फिटनेस प्रमाणपत्र के चल रहे हैं। मंत्रालय का दावा है कि ये नए वाहनों की तुलना में 10-12 गुना अधिक प्रदूषक छोड़ते हैं- लेकिन यह दावे उत्सर्जन परीक्षणों से सिद्ध नहीं होते।

अधिकांश कार्यरत गाड़ियां, यदि सही से रखरखाव की गई हों, तो दो प्रतिशत से भी कम प्रदूषण करती हैं। दुनिया भर में वाहन- यहां तक कि हवाई जहाज भी 40 साल या उससे अधिक चलते हैं। भारत अकेला देश है जो स्क्रैपिंग के प्रचार पर पूरी उद्योगनीति बना चुका है।

असली प्रदूषकों को संरक्षण : वाहनों से होने वाला प्रदूषण कुल प्रदूषण का केवल 12 प्रतिशत है। जबकि उद्योगों से 51 प्रतिशत आता है। क्या यह नीति आम नागरिकों को दंडित करने और औद्योगिक असफलताओं को छुपाने का एक बहाना है?

कुछ लोग कहते हैं कि दूसरे देश भी वाहन स्क्रैप करते हैं-यह भ्रामक है। अमेरिका में स्क्रैप नीति 1960 के दशक में आई थी जब वहां के स्क्रैप यार्ड भर गए थे। आज भी वहां उम्र की कोई सीमा नहीं है। जैसा कि वरिष्ठ पत्रकार हसन सुरूर लंदन से लिखते हैं- 'इंग्लैंड में किसी गाड़ी को सिर्फ उम्र के आधार पर प्रतिबंधित नहीं किया जाता। अगर टेस्ट में फेल हो, तो उसे सुधारा जाता है। मैं 21 साल पुरानी गाड़ी चला रहा हूं-बिना किसी समस्या के।'

स्वच्छ हवा के नाम पर घोटाला : यदि सच में प्रदूषण की चिंता है, तो भारत ने 2023-24 में कोयले की खपत 900 मिलियन टन से बढ़ाकर एक अरब टन क्यों की? लाखों पेड़ सिर्फ हाइवे बनाने के लिए क्यों काटे गए? सब जानते हैं कि कोयला सबसे प्रदूषक ईंधन है। साफ है- यह नीति 'स्वच्छ हवा' के नाम पर नई कारों की बिक्री बढ़ाने का जरिया है।

नई गाड़ियां अपने निर्माण में पुराने वाहनों की तुलना में कहीं अधिक प्रदूषण करती हैं। भारत में एक कार पीढ़ियों तक चलती है। हर दस साल में नई कार खरीदना किसके बस में है? जैसा कि कहा जाता है- 'भारतीय भेड़ हैं, जिन्हें भेड़िए चला रहे हैं।' शायद हम वही सहते हैं जिसके हम योग्य बन जाते हैं।

इस मूर्खता को तुरंत समाप्त करें : सरकार को चाहिए कि वह इस बेतुके नियम को तत्काल रद्द करे। यह जनता का कोई भला नहीं करता। यह दहशत फैलाता है, संपत्ति नष्ट करता है और आम आदमी को दंडित करता है। हमें प्रगति के नाम पर अपने ही लोगों को चोट पहुँचाना बंद करना होगा। अर्थव्यवस्था को कृत्रिम संकट नहीं बल्कि असली ताकत से बढ़ने देना चाहिए।

(लेखक मीडिया मैप के सहायक संपादक हैं)

ट्रम्प बनाम ब्रिक्स : एक मुद्रा आधारित शीत युद्ध की आहट

प्रो. शिवाजी सरकार

'किंग डॉलर' को एक अप्रत्याशित चुनौती का सामना करना पड़ रहा है-ना कि किसी प्रतिद्वंद्वी महाशक्ति से, बल्कि एक ऐसे उभरते आर्थिक समूह से जिसकी कोई साझा मुद्रा तक नहीं है। इसके जवाब में, डोनाल्ड ट्रम्प ने ब्रिक्स देशों से आयात पर 10 प्रतिशत टैरिफ प्रस्तावित किया है, जिससे यह स्पष्ट है कि वे इसे एक अस्थायी समस्या नहीं, बल्कि एक गंभीर चुनौती मानते हैं।

यह केवल आर्थिक मुद्रा नहीं है। यह द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अमेरिकी नेतृत्व वाले वैश्विक व्यवस्था और एक मुखर हो रहे ब्रिक्स गठबंधन के बीच बढ़ते टकराव का संकेत है। हालांकि ब्रिक्स के पास कोई एकीकृत मुद्रा नहीं है, फिर भी ईरान, मिस्र, सऊदी अरब, इथियोपिया और यूएई के साथ इसके विस्तार ने वैश्विक शक्ति संतुलन को झकझोर कर रख दिया है।

मूल रूप से यह प्रणालीगत टकराव है : एकतरफावाद बनाम बहुध्रुवीयता, पेट्रोडॉलर वर्चस्व बनाम डॉलर मुक्त व्यापार, अमेरिकी आधिपत्य बनाम वैश्विक दक्षिण का उभार। हालांकि ट्रम्प बहुपक्षीय संस्थानों को लेकर संदेह रखते हैं, ब्रिक्स का विस्तार वाशिंगटन के लिए निश्चित रूप से चिंता का विषय है। यह अब दुनिया की 40 प्रतिशत से अधिक आबादी और पीपीपी के आधार पर 30 प्रतिशत से अधिक वैश्विक जीडीपी का प्रतिनिधित्व करता है। इंडोनेशिया ने इस वर्ष इसमें शामिल होकर इसका दायरा और बढ़ा दिया है। दर्जनों अन्य देश भी इसमें रुचि दिखा रहे हैं। सऊदी अरब को सदस्य के रूप में सूचीबद्ध किया गया है, यद्यपि उसकी औपचारिक स्थिति स्पष्ट नहीं है। ट्रम्प की बयानबाजी दांव को दर्शाती है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि डॉलर को वैश्विक मानक के रूप में हटाया गया, तो यह एक 'प्रमुख विश्व युद्ध' के समान होगा। यह भले ही अतिशयोक्ति लगे, पर वाशिंगटन की असली चिंता को उजागर करता है-डॉलर आधारित वैश्विक प्रभाव का क्षरण।

इस संघर्ष का एक प्रमुख क्षेत्र व्यापार है। ब्रिक्स से आयात पर अतिरिक्त टैरिफ का ट्रम्प का प्रस्ताव उसी रणनीति का हिस्सा है-आर्थिक साधनों से अमेरिकी वर्चस्व को फिर से स्थापित करना। इससे पहले, उन्होंने ईरान के साथ व्यापार करने वाली यूरोपीय कंपनियों पर प्रतिबंधों की धमकी दी थी। अब, जब ब्रिक्स एक साझा भुगतान प्रणाली पर विचार कर रहा है- संभवत: राष्ट्रीय मुद्राओं की एक टोकरी के रूप में-ट्रम्प की डॉलर-आधारित रणनीति को चुनौती मिल रही है।

ब्राजील में हाल ही में हुए शिखर सम्मेलन में ब्रिक्स ने दो महत्वपूर्ण कदम उठाए : ब्रेटन वुड्स संस्थाओं के प्रतिस्थापन की मांग और आईएमएफ के 16वें कोटा पुनरावलोकन का समर्थन। इससे भी अधिक उकसावे वाली बात यह थी कि ब्रिक्स ने ईरान का मजबूती से समर्थन किया और इजरायल के साथ उसके टकराव के बीच अमेरिका-इजरायल हमलों को 'अंतरराष्ट्रीय कानून का घोर उल्लंघन' बताया।

रूस-यूक्रेन युद्ध पर ब्रिक्स ने कोई स्पष्ट रुख नहीं अपनाया- जो रूस की भूमिका को देखते हुए आश्चर्यजनक नहीं है-लेकिन इसने रूसी क्षेत्रों पर यूक्रेनी हमलों की निंदा की, जिससे वाशिंगटन से उसकी रणनीतिक दूरी और स्पष्ट हो गई।

भारत अपनी स्थिति को सावधानीपूर्वक संतुलित कर रहा है। 11 जुलाई को भारत ने डब्ल्यूटीओ आधारित उस प्रस्ताव में संशोधन किया, जिसके तहत अमेरिका द्वारा इस्पात और एल्युमिनियम पर लगाए गए टैरिफ के बदले प्रतिशोधात्मक शुल्क लगाए जाने

थे। यह कदम ट्रम्प द्वारा नए टैरिफ की घोषणा के तुरंत बाद आया, और एक संकेत था कि भारत व्यापारिक दबाव के आगे चुप नहीं बैठेगा।

हालांकि ब्रिक्स को कई सीमाओं का सामना करना पड़ता है। ब्रिक्स देशों के बीच आपसी व्यापार 2024 में केवल वैश्विक व्यापार का तीन प्रतिशत था-लगभग \$ 1 ट्रिलियन का, जबकि वैश्विक व्यापार \$ 33 ट्रिलियन था। भारत का ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका के साथ व्यापार केवल \$ 31 बिलियन के आसपास है। एक साझा ब्रिक्स मुद्रा बनाने के प्रयास भी रुक गए हैं। चीन की बढ़ती भूमिका को लेकर भारत ने सोने-आधारित 'यूनिट' प्रस्ताव को ठुकरा दिया। ब्राजील, जो 2025 शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा, साझा मौद्रिक ढांचे की बजाय स्थानीय मुद्राओं में द्विपक्षीय व्यापार को प्राथमिकता देता है।

नेटिक्सिस की एशिया-प्रशांत प्रमुख अर्थशास्त्री एलिसिया गार्सिया-हेर्रेरो कहती हैं- 'भारत और ब्राजील, दोनों चीन और रूस के प्रभुत्व वाले ब्रिक्स के पश्चिम विरोधी संदेश को संतुलित करने की कोशिश कर रहे हैं।'

फिर भी, तेल कूटनीति में बदलाव हो रहा है। सऊदी अरब, यूएई और ईरान का शामिल होना संकेत देता है कि यह समूह तेल व्यापार को डॉलर से अलग करने की दिशा में बढ़ रहा है। चीन युआन आधारित अनुबंधों की वकालत कर रहा है; रूस रूबल में व्यापार कर रहा है, यहां तक कि ईरान और सऊदी अरब जैसे पारंपरिक प्रतिद्वंद्वी भी सहयोग कर रहे हैं।

दूसरी ओर, ट्रम्प जीवाश्म ईंधनों को फिर से अपनाने, जलवायु समझौतों को खत्म करने और अमेरिकी शेल तेल को बढ़ावा देने की योजना बना रहे हैं-एक 1980 के दशक की ऊर्जा नीति, जिसका 21वीं सदी के भू-राजनीतिक प्रभाव हो सकते हैं। यह दृष्टिकोण वाशिंगटन को ब्रिक्स के समन्वित ऊर्जा मोर्चे से अलग-थलग कर सकता है।

विकास वित्त के मोर्चे पर, ब्रिक्स विकल्प तैयार कर रहा है। न्यू डेवलपमेंट बैंक (एनडीबी), हालांकि अभी छोटा है, बिना राजनीतिक शर्तों के ऋण देता है, जो कि विश्व बैंक या आईएमएफ फंडिंग के साथ आमतौर पर जुड़ी होती हैं। जो देश पश्चिमी शर्तों से थक चुके हैं, उनके लिए यह एक आकर्षक विकल्प है।

ट्रम्प, जिन्होंने पहले डब्ल्यूएचओ और डब्ल्यूटीओ जैसी बहुपक्षीय संस्थाओं की फंडिंग में कटौती की थी, किसी ऐसी वैश्विक व्यवस्था का समर्थन नहीं करेंगे, जिसे वे नियंत्रित नहीं कर सकते। इसके विपरीत, ब्रिक्स समानांतर संस्थाओं का निर्माण कर रहा है, जिससे वैश्विक दक्षिण के लिए नए गठजोड़ के रास्ते खुल रहे हैं।

सुरक्षा भी अब ध्यान केंद्रित क्षेत्र बन गया है। ब्रिक्स कोई सैन्य गठबंधन नहीं है, परंतु रूस और चीन के बीच एक रणनीतिक समझ बन रही है। ट्रम्प इंडो-पैसिफिक सैन्यीकरण बढ़ा सकते हैं, ताइवान को लेकर टकराव पैदा कर सकते हैं, और नाटो विस्तार पर जोर दे सकते हैं। उनका रिकॉर्ड-सीरिया से बाहर निकलना, नाटो से हटने की धमकी देना और अफगानिस्तान से अराजक वापसी-अमेरिका की विश्वसनीयता पर सवाल उठा चुका है। भारत के लिए यह एक कठिनाई है। एक ओर वह ब्रिक्स का संस्थापक सदस्य है, दूसरी ओर क्वाड जैसे अमेरिकी नेतृत्व वाले मंचों में भी साझेदार है। ट्रम्प फिर से नई दिल्ली पर बीजिंग, तेहरान या मास्को के खिलाफ खड़ा होने का दबाव बना सकते हैं। पर भारत सतर्कता के साथ दांव खेल रहा है-छूट वाले रूसी तेल की खरीद, अफ्रीका में रुपये आधारित व्यापार का प्रयोग, ईरान के चाबहार पोर्ट में निवेश, और साथ ही अमेरिका के साथ रक्षा साझेदारी को भी मजबूत करना। यदि ट्रम्प का दृष्टिकोण कठोर रहा, तो भारत और अधिक मजबूती से ब्रिक्स के साथ जा सकता है।

यह अब केवल ट्रम्प बनाम ब्रिक्स नहीं है। यह पुराने वर्चस्व बनाम नए बहुध्रुवीय वैश्विक ढांचे के बीच टकराव है। अगला शीत युद्ध वैचारिक नहीं होगा-यह संरचनात्मक होगा, व्यापार, मुद्रा प्रणालियों और नियम तय करने की शक्ति पर आधारित। इस बार वैश्विक दक्षिण केवल दर्शक नहीं है। वह निर्णायक भूमिका में है-और पक्ष चुन रहा है।

एकतरफावाद बनाम बहुध्रुवीयता, पेट्रोडॉलर वर्चस्व बनाम डॉलर मुक्त व्यापार, अमेरिकी आधिपत्य बनाम वैश्विक दक्षिण का उभार। हालांकि ट्रम्प बहुपक्षीय संस्थानों को लेकर संदेह रखते हैं, ब्रिक्स का विस्तार वाशिंगटन के लिए निश्चित रूप से चिंता का विषय है। यह अब दुनिया की 40 प्रतिशत से अधिक आबादी और पीपीपी के आधार पर 30 प्रतिशत से अधिक वैश्विक जीडीपी का प्रतिनिधित्व करता है। इंडोनेशिया ने इस वर्ष इसमें शामिल होकर इसका दायरा और बढ़ा दिया है। दर्जनों अन्य देश भी इसमें रुचि दिखा रहे हैं। सऊदी अरब को सदस्य के रूप में सूचीबद्ध किया गया है, यद्यपि उसकी औपचारिक स्थिति स्पष्ट नहीं है। ट्रम्प की बयानबाजी दांव को दर्शाती है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि डॉलर को वैश्विक मानक के रूप में हटाया गया, तो यह एक 'प्रमुख विश्व युद्ध' के समान होगा। यह भले ही अतिशयोक्ति लगे, पर वाशिंगटन की असली चिंता को उजागर करता है-डॉलर आधारित वैश्विक प्रभाव का क्षरण। इस संघर्ष का एक प्रमुख क्षेत्र व्यापार है। ब्रिक्स से आयात पर अतिरिक्त टैरिफ का ट्रम्प का प्रस्ताव उसी रणनीति का हिस्सा है-आर्थिक साधनों से अमेरिकी वर्चस्व को फिर से स्थापित करना। इससे पहले, उन्होंने ईरान के साथ व्यापार करने वाली यूरोपीय कंपनियों पर प्रतिबंधों की धमकी दी थी। अब, जब ब्रिक्स एक साझा भुगतान प्रणाली पर विचार कर रहा है-संभवतः राष्ट्रीय मुद्राओं की एक टोकरी के रूप में-ट्रम्प की डॉलर-आधारित रणनीति को चुनौती मिल रही है।

जन्म दिन पर विशेष

क्या राजीव गांधी भीतरघात के शिकार हुए थे...?

प्रो. प्रदीप माथुर

वर्ष 1984-85 में बहुमत से सत्ता में आने के बाद भारत का प्रधानमंत्री पद पर राजीव गांधी भारतीय राजनीति में द्वितीय और बहुत बड़ी थी। उनके जीते ही तैतीसवीं लोकसभा में उन्होंने जो राजनीतिक प्रयोग किए और जो नई नीतियां चलाईं, वे बहुत ही अच्छी थीं। वर्ष 1991 में चुनाव प्रचार के दौरान उनकी हत्या हुई। पर उनकी राजनीतिक हत्या का खाका तो वर्ष 1987 में बोफोर्स घोटाले के बाद ही तैयार हो चुका था। ऐसा कहा गया है कि क्या वर्ष 1987 में उनकी राजनीतिक हत्या और फिर 1991 में उनकी शारीरिक हत्या स्वाभाविक थी या इसके पीछे कोई राजनीतिक षड्यंत्र था।

यह सही है कि दिसम्बर 1984 के चुनावों में राजीव गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस की अभूतपूर्व सफलता उस सहानुभूति लहर का परिणाम थी, जो सुरक्षा सैनिकों द्वारा उनकी मां प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की निर्मम हत्या के कारण सारे देश में उपजी थी। यह भी सही है कि राजनीति में कोई रुचि न रखने वाले राजीव गांधी को अपने भाई संजय गांधी की विमान दुर्घटना में मृत्यु के बाद इंदिरा गांधी को सहारा देने के लिये राजनीति में आना पड़ा और परिस्थितियों ने ही राजनैतिक दृष्टि से अनुभवहीन और अपरिपक्क इस युवा को देश की सबसे बड़ी कुर्सी पर बिठा दिया। पर जो बात समझ में नहीं आती है वह यह है कि राजीव गांधी में ऐसा क्या था जिसके कारण उनका प्रारम्भ में अभूतपूर्व महिमामंडन हुआ और फिर थोड़े समय बाद ही उनकी कटु आलोचना का दौर आया।

सच तो यह है कि राजीव गांधी के छोटे लेकिन घटना प्रधान राजनैतिक जीवन (1981-91) का निष्पक्ष व वैज्ञानिक मूल्यांनक कभी किया ही नहीं गया है। इस कारण तत्कालिक इतिहास में उनके स्थान को सुनिश्चित करना वास्तव में एक समस्या है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी के समाजवादी शासन के बाद भारत के पूंजीवादी वर्ग को अपने निहित स्वार्थों को आगे बढ़ाने के लिये

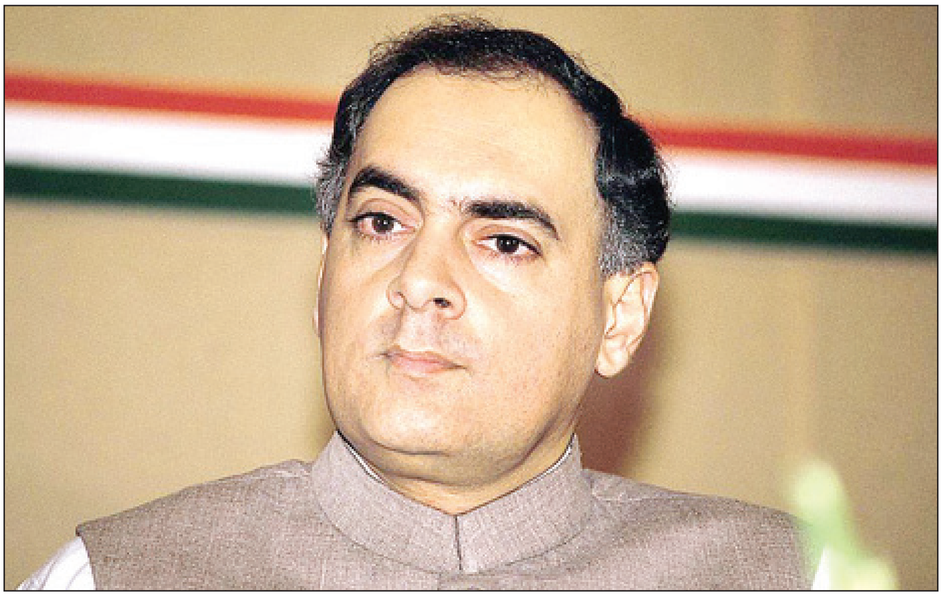

राजीव गांधी में अपार संभावनाएं दिखीं। शायद इसी कारण राजीव गांधी का भारत के बुर्जुआ वर्ग ने गर्मजोशी के साथ स्वागत किया। राजीव गांधी ने न सिर्फ सूचना क्रांति के द्वार खोले बल्कि आधुनिक सोच और आर्थिक सुधारों पर भी विमर्श को बढ़ावा दिया। उनकी साफ सुथरी छवि, सज्जनता और सौम्य स्वभाव ने उन्हें प्रसिद्धी के शिखर पर बैठा दिया। एक समाचार पत्र ने उन्हें मिस्टर क्लीन की उपाधि दे डाली। पर थोड़े ही समय बाद हवा उल्टी बहने लगी। यह बोफोर्स से पहले ही शुरू हो गया था। बोफोर्स कांड ने उसे नये आयाम दिये। यदि राजीव गांधी अनुभवहीन, अपरिपक्क व राजनैतिक दृष्टि से बुद्धिमान नहीं थे तो यह उस दिन भी पता था जब वह प्रधानमंत्री बने। फिर ऐसा क्यों हुआ कि प्रधानमंत्री की पारी शुरू होने पर उन्हें अपार प्रशंसा और व्यापक समर्थन मिला और थोड़े ही समय बाद उनका विरोध आरम्भ हो गया।

किसी राजनीतिक विश्लेषक ने कहा है, किसी व्यक्ति को सत्ता में बैठाना, सत्ता में जमाना और सत्ता से उखाड़ना, तीन अलग-अलग काम है जिन्हें अलग अलग वर्ग के लोग अंजाम देते हैं। राजीव गांधी को सत्ता में तो व्यापक जनसमर्थन ने बैठाया। पर लगता है कि उनके सत्ता में बैठने के कुछ समय बाद ही निहित स्वार्थियों को लगा कि वह उनके हित साधन के लिये उपयुक्त नहीं है तो उन्हें उखाड़ने का प्रयास शुरू हो गया, जिसे समझने में उन्होंने बहुत देर की।

शायद राजा विश्वनाथ प्रताप सिंह को वितमंत्री बनाना उनकी सबसे बड़ी भूल थी। राजा साहब ने पूंजीपति और उद्योग जगत के बड़े संगठनों पर कर चोरी के लिये छापे डलवाने शुरू किये। इससे हड़कंप मचा और राजीव सरकार का विरोध प्रारम्भ हुआ। कॉरपोरेट जगत का इशारा पाते ही संघ परिवार और नेहरू परिवार के पेशेवर विरोधियों ने उनके विरुद्ध भ्रामक प्रचार शुरू कर दिया। कहा गया कि उन्होंने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया है और उनका नाम रार्बट गांधी है। उनकी पत्नी सोनिया गांधी के विरुद्ध भी भीषण प्रचार शुरू किया गया।

सरकार में भी विश्वनाथ प्रताप सिंह और अरुण नेहरू ने राजीव गांधी के विरुद्ध षड्यंत्र शुरू किया। विश्वनाथ प्रताप की महत्वाकांक्षा प्रधानमंत्री बनने की थी तथा अरुण नेहरू कारपोरेट जगत तथा

हिन्दुत्ववादी शक्तियों के ऐजेंट थे और उनकी प्रधानमंत्री के सचिव और वरिष्ठ आईएएस अधिकारी गोपी अरोड़ा के साथ साठगांठ थी। राजीव गांधी विरोधियों की शायद समस्या यह थी कि उनका जनाधार लगातार बढ़ रहा था। बड़े परिवार से आये विदेश में पढ़े तथा वायुसेवा की नौकरी करने वाले राजीव गांधी ने भारत के गरीब आदमी के जीवन की वास्तविकता नहीं देखी थी। जब प्रधानमंत्री के रूप में इस वास्तविकता से उनका साक्षात्कार हुआ तो उनका संवेदनशील व्यक्तित्व आम आदमी के जीवन के लिये बहुत कुछ करने को प्रेरित हुआ। मणीशंकर अय्यर जैसे सहायक अफसरों के कहने पर राजीव गांधी ने भारत के पिछड़े और अविकसित क्षेत्रों के बहुत दौरे किये और इनसे बहुत कुछ सीखा।

अपनी अनुभवहीनता के चलते राजीव गांधी ने दो और बड़ी भूलें की। एक था तमिल विद्रोहियों के विरुद्ध संघर्ष करती श्रीलंका की सेना की सहायता के लिये भारतीय सेना की टुकड़िया भेजना और इससे भी बड़ी भूल थी बोफोर्स रिश्वत कांड पर लोकसभा में बहस के दौरान खड़े होकर यह कहना कि मैंने रिश्वत नहीं ली है। सच बात यह थी कि राजीव गांधी ने बोफोर्स कांड में कोई पैसा नहीं लिया था। लेकिन लोकसभा में उनके बचकाने बयान से विरोधियों को उनके ऊपर रिश्वतखोरी का आरोप लगाने का अच्छा बहाना मिल गया।

आम जनता के बीच राजीव गांधी के बढ़ते जनाधार का एक कारण अमिताभ बच्चन का उनको समर्थन था। अमिताभ राजीव के सबसे करीबी मित्र थे और राजीव शासन में उनका बहुत दबदबा था। अमिताभ बच्चन की राजीव से करीबी वीपी सिंह और अरुण नेहरू को फूटी आंखों न सुहाती थी। इसलिये अमिताभ बच्चन भी राजीव विरोधियों के षड्यंत्र का शिकार हुए। बिना किसी कारण के बोफोर्स कांड में उनको भी घसीटा गया। 28 वर्ष बाद जब राजीव गांधी, वीपी सिंह और अरुण नेहरू इस संसार से विदा ले चुके थे, अधिकारिक रूप से कहा गया कि बोफोर्स कांड में अमिताभ बच्चन का कोई लेना देना नहीं था।

वर्ष 1989 में राजीव गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस की हार हुई और वीपी सिंह प्रधानमंत्री बने। पर वह एक वर्ष भी सरकार नहीं चला पाये। फिर लगातार तीन प्रधानमंत्रियों के बाद 1991 वर्ष के चुनावों में फिर कांग्रेस सत्ता में आयी। पर चुनाव प्रचार के दौरान 21 मई को श्रीपैरम्बूर (तमिलनाडु) में राजीव की हत्या कर दी गयी। अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में भी राजीव गांधी निहित स्वार्थों की शत्रुता का केंद्र बन रहे थे। पांच बड़े विकासशील राष्ट्रों के दक्षिण अमेरिकी सम्मेलन में पारित यह प्रस्ताव कि विकासशील राष्ट्र विश्व बैंक तथा आईएमएफ का कर्जा न चुकाने के विकल्प के अधिकारी हैं। अमेरिका तथा पूंजीवादी देशों की नींद उड़ा दी। अब राजीव गांधी अमेरिका के आर्थिक-सामरिक तंत्र के सबसे बड़े शत्रु के रूप में पहचान बना चुके थे। अपनी अंतिम यात्रा पर जब वह श्रीपैरम्बूर के लिये जा रहे थे, तब उनको छोड़ने दिल्ली हवाई अड्डे पर कांग्रेस सचिव अनिल शास्त्री भी थे। अनिल शास्त्री ने उनसे कहा कि बधाई स्वीकार कीजिये। अब हम लोग चुनाव जीतने वाले ही है और आप प्रधानमंत्री बनेंगे। राजीव गांधी ने कहा वह तो ठीक है पर अमेरिका वाले कुछ काम करने दे तब तो। अनिल शास्त्री का कहना है कि वह राजीव गांधी की प्रतिक्रिया से सकते में आ गये। उनकी कुछ भी समझ में न आया कि राजीव ऐसा क्यों कह रहे थे।

अंतर्राष्ट्रीय पूंजीवाद, भारतीय कारपोरेट सेक्टर, सांप्रदायिक हिन्दुत्व, अंतर्राष्ट्रीय खालसा मूवमेंट तथा तमिल उग्रवाद में निहित स्वार्थ राजीव गांधी के विरोधी थे। साथ ही कांग्रेस पार्टी में वीपी सिंह, अरुण नेहरू, वेंकटरमन, तारिक अनवर आदि भीतरघात के लिये उपयुक्त समय की तलाश कर रहे थे। नारायण दत्त तिवारी, अर्जुन सिंह, शरद पवार तथा नरसिम्हा राव जैसे नेता विरोधी तो नहीं थे लेकिन राजीव गांधी को लेकर बहुत उत्साहित भी न थे। राष्ट्रपति ज्ञानी जेल सिंह, जिन्होंने कभी कहा था कि इंदिरा गांधी कहेंगी तो में झाड़ू भी लगा दूंगा, राजीव गांधी के कट्टर विरोधी थे। उन्हें लगता था कि अब नयी पीढ़ी सत्ता में आने वाली है और कभी भी उनकी छुट्टी हो सकती है। दल बदल निषेध बिल लेकर राजीव गांधी अपनी स्थिति को मजबूत समझ रहे थे। पर उन्हें पार्टी के अंदर षड्यत्र के जाल का कोई अंदाज न था। उन्हें यह भी नहीं पता था कि उनके कुछ विश्वासपात्र नौकरशाह उनके विरोधियों के साथ मिलते हैं।

सच तो यह है कि राजीव गांधी के छोटे लेकिन घटना प्रधान राजनैतिक जीवन (1981-91) का निष्पक्ष व वैज्ञानिक मूल्यांनक कभी किया ही नहीं गया है। इस कारण तत्कालिक इतिहास में उनके स्थान को सुनिश्चित करना वास्तव में एक समस्या है। श्रीमती इन्दिरा गांधी के समाजवादी शासन के बाद भारत के पूंजीवादी वर्ग को अपने निहित स्वार्थों को आगे बढ़ाने के लिये राजीव गांधी में अपार संभावनाएं दिखीं। शायद इसी कारण राजीव गांधी का भारत के बुर्जुआ वर्ग ने गर्मजोशी के साथ स्वागत किया। राजीव गांधी ने न सिर्फ सूचना क्रांति के द्वार खोले बल्कि आधुनिक सोच और आर्थिक सुधारों पर भी विमर्श को बढ़ावा दिया। उनकी साफ सुधरी छवि, सज्जनता और सौम्य स्वभाव ने उन्हें प्रसिद्धी के शिखर पर बैठा दिया।

राजीव गांधी को शायद यह भी अंदाजा नहीं था कि उनके राजनैतिक मित्र कौन है। जब राष्ट्रपति जैल सिंह जोर शोर से उनकी सरकार को अध्यादेश के सहारे बर्खास्त करने का मन बना रहे थे और सेना अध्यक्षों से बात करना चाह रहे थे कुछ विपक्षी नेताओं, जैसे चंद्रशेखर, हेमवती नंदन बहुगुणा, मधु दंडवते, आरके हेगड़े, ज्योति बसु, इन्द्रजीत गुप्ता आदि ने राष्ट्रपति जैल सिंह को कहा कि ऐसा कोई भी कदम असंवैधानिक होगा और यदि राष्ट्रपति ने ऐसा किया तो उन पर महाभियोग लगाकर पदच्युत करने के लिये राष्ट्रव्यापी आंदोलन चलाया जायेगा। इससे जैल सिंह के बढ़ते कदम रुक गये। राजीव गांधी के राजनैतिक जीवन की किताब के और भी तमाम अधखुले पन्ने है। आवश्यकता है कि उनको खोला और समझा जाये। ■■

गणेश चतुर्थी : तनाव का सूचक मूषक है तो तनाव प्रबंधन के प्रतीक श्रीगणेश हैं

बी.के. सुशांत

श्री गणेश जी के अनेक गुण और कर्तव्यवाचक नाम हैं। जैसे कि विनायक, विघ्नराज, द्वै मातुरः, गणपति, गजानन आदि। देवों का नेतृत्व करने वाले वह विशेष नायक-विनायक, विघ्नों को अधीन करने वाले विघ्नराज, गणों के स्वामी गणपति तथा गज यानी हाथी के मस्तक धारण किए हुए गजपति आदि के नामों से जाने, जपे व पूजे जाते हैं। विद्या, बुद्धि, विधि, सिद्धि, शुभता व सफलता के देवता श्री गणेश जी है। उनके जन्म उत्सव को गणेश चतुर्थी के रूप में हर साल भाद्र मास शुक्ल पक्ष चतुर्थी से दस दिन तक धूमधाम से मनाया जाता है।

कहते हैं, देवताओं में पृथ्वी की तीन बार परिक्रमा लगाने की प्रतियोगिता हुई। सब देवगण अपने अपने वाहनों पर सवार होकर निकल पड़े। गणेशजी भी मूषक वाहन पर विराजे और पिता शिव व माता पार्वती को प्रणाम करके तीन बार उनकी परिक्रमा की और सहजता से प्रतियोगिता जीत गए। इतना ही नहीं, वे सभी देवी देवताओं में प्रथम पूज्य भी घोषित किए गए। उनका मानना था कि माता-पिता में ही संपूर्ण संसार विद्यमान है।

गणेश जी का वाहन मूषक असल में चंचल, अस्थिर, अशांत व वाह्यमुखी मन का ही प्रतीक है, जो अक्सर भटकता रहता है, हमारे संकल्प, समय और शक्तियों को नष्ट-भ्रष्ट कर देता है और हमे परेशान व तनाव ग्रस्त कर देता है। ऐसे भटकाऊ, अनियंत्रित व असंतुलित मन को दुखदाई भौतिक विषय भोग वासना से हटाकर आत्मा-परमात्मा के दिव्य ज्ञान, गुण और शक्तियों के सुखद चिंतन व अनुभवों में स्थिर, संयमित, सकारात्मक और सृजनात्मक बनाने से ही जीवन में सुख-शांति, समृद्धि एवं सफलता रूपी सिद्धि प्राप्त हो सकती है। तभी गणेश जी को सिद्धि विनायक यानी सत्य ज्ञान की विधि से सिद्धि देने वाले गणनायक माना जाता है। इसलिए उन्हें रिद्धि व विधि एवं सिद्धि का स्वामी भी कहा गया है।

मानव संस्कार व संसार से विकार, बुराई, विघ्न और नकारात्मकता को समाप्त करने वाले, तथा शुभता, दिव्यता, श्रेष्ठता, सफलता व सकारात्मकता का सृजन करने वाले श्री गणेश ही विघ्न विनाशक, देवाधिदेव और रुद्रप्रिय अर्थात परमात्मा शिव के भी अति प्रिय है। भगवान शिव न केवल अपने पुत्र के समस्त ज्ञान, गुण, शक्ति और विशेषताओं के शाश्वत स्रोत रहे, अपितु गज मस्तक गणेश जी को दूसरा दिव्य देने के साथ, विशेष स्नेह देकर गजानन के लिए मां की भूमिका भी निभाई। इसलिए गणेश जी को दो मां वाला द्वैमातुर भी कहा गया है। परमात्मा शिव व देवी पार्वती, दोनों ही गणेश जी के आत्मिक व दैहिक जन्मदात्री है। आदिशक्ति पार्वती रूपी महाप्रकृति के पंच तत्वों से जन्मे पुत्र विनायक में अज्ञानता से उत्पन्न देहअभिमान और उदंड स्वभाव के सिर को कल्याणकारी शिव ने अपने त्रिताप हरक त्रिशूल से काटकर उसके स्थान पर बुद्धि और प्रज्ञा के द्योतक हाथी का सिर स्थापित किया। यानी सही अर्थ में गणेश जी को दूसरा दिव्य जन्म प्रदान किया। तब से विनायक न केवल ईशान पुत्र हुए, बल्कि बुद्धिनाथ, गणपति, मृत्युंजय, महेश्वर व सुरेश्वर भी कहलाए। पुराणों के अनुसार, पिता शिव ही अपने प्रिय पुत्र गणेश को गोद में लेकर लोरी सुनाकर सुलाते और जागते थे। इससे गौरी गणेश अपने माता-पिता के अति स्नेही, समीप, आज्ञाकारी एवं पूर्ण अनुगामी पुत्र बन गए।

गणेश चतुर्थी महापर्व वास्तव में हमारी सच्ची आत्म अवलोकन व आत्मबोध कराती है, तथा परमात्म ध्यान, सकारात्मक चिंतन एवं सात्विक जीवन शैली को अपनाने के लिए प्रेरणा देकर हमारी जीवन यात्रा को सुखद, सुगम, सफल एवं सुरक्षित बनाती है। हमारे जीवन में तनाव व अवसाद पैदा करने वाली व्यर्थ, नकारात्मक वा ओवर थिंकिंग रूपी मूषक समान मन को सुनियंत्रित एवं सुनियोजित करने की जीवन प्रबंधन कला वा विधि हमे सिखाती है। साथ ही, श्रीगणेश जी के जीवन दर्शन हमे सार्वजनिक शांति, स्नेह, सहयोग, सदभावना, विश्व बंधुत्व और वसुधैव कुटुंबकम् आदि आदर्शों को अपनाने की प्रेरणा देती है।

संक्षेप में कहे तो इस दस दिवसीय गणेश महोत्सव हमे अपनी सोच, वृति व प्रवृति को नेक, शुद्ध वा पवित्र रखने की, तथा हमारे चारों ओर की वातावरण, प्रकृति, पर्यावरण व जलवायु को स्वच्छ, स्वस्थ, संतुलित व खुशहाल बनाने की जो आध्यात्मिक संदेश देती है वह सर्वोपरि है।

(लेखक ब्रह्मकुमारी आध्यात्मिक संगठन के मीडिया प्रमुख हैं)

हर बच्चे में एक एकलव्य छिपा होता है : डॉ. अशोक श्रीवास्तव

मीडिया मैप न्यूज नेटवर्क

ह्य सीमित संसाधनों व अभाव की जिंदगी अक्सर हीं इंसान के मन में कुछ कर गुजरने की सच्ची लगन, दृढ़ संकल्प और जज्बा का सबब बन जाया करती है। इतिहास साक्ष्य है कि ऐसे ही परिवेश के लोग स्वर्णाक्षरों में अपना नाम दर्ज करवा लेते हैं।

नवरत्न फाउंडेशंस और दिव्यतरंग एजुकेयर फाउंडेशन की संयुक्त प्रयास में कुछ ऐसा ही नजारा देखने को मिला विगत एक वर्ष से चल रही वंचित वर्ग के बच्चों के लिए अनदेखी प्रतिभाओं की खोज के कार्यक्रम एकलव्य की खोज में बच्चों ने स्वयंभू बन स्वयं को नृत्य, गायन तथा भाषण कल में स्वयं को स्थापित कर इस प्रतियोगिता में भाग लिया, इसके बाद इनमें से सेमीफाइनल में चुने गए बच्चों को गुरुओं के मार्गदर्शन में दक्ष कर मंच पर उतारा गया। वह मंजर सभी को स्तब्ध कर गया जब इन वंचित वर्ग के बच्चों ने अपनी कुशल प्रतिभा का मंच पर दे-दना-दन शानदार प्रदर्शन किया और एनईए सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

विभिन्न विधाओं में हुई इस प्रतियोगिता में बच्चों ने भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों और लोक कथाओं को अपने अंदाज में प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम को लेकर डॉ. अशोक श्रीवास्तव (अध्यक्ष, नवरत्न फाउंडेशन्स) ने कहा, 'हमारे हिंदुस्तान के हर बच्चे में एक एकलव्य छिपा होता है, जरूरत बस उसे पहचानने और अवसर देने की है। हमारी कोशिश है कि वंचित वर्ग के बच्चों की प्रतिभा समाज के सामने आए और वे आत्मविश्वास के साथ अपने सपनों को साकार कर सकें।'

कार्यक्रम में निर्णायकों की भूमिका में भाषण कला के लिए प्रदीप शर्मा, गायन के लिए दीपक नायडू और नृत्य के लिए डॉ. कल्पना भूषण उपस्थित रहे। निर्णायकों ने बच्चों की प्रतिभा को न केवल सराहा बल्कि उन्हें उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं भी दीं। कार्यक्रम में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को 'सर्वोत्तम एकलव्य' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भाषण में मास्टर आयुष, गायन में कुमारी नेहा कामत और नृत्य में कुमारी खुशबू को इस सम्मान से नवाजा गया। इसके अतिरिक्त 18 बच्चों को 'अति उत्तम एकलव्य' पुरस्कार प्रदान कर उनकी मेहनत और लगन को सराहा गया।

डॉ. अशोक श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में कार्यक्रम की सफलता में समाजसेवा के क्षेत्र से जुड़े कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों की भागीदारी रही जिनमें, विक्की यादव, ए वी मुरलीधरन, नीतू भंडारी व ममता अधिकारी का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा। इनके मार्गदर्शन में यह आयोजन एक मिशन की तरह आयोजित हुआ, जिसमें सिर्फ प्रदर्शन नहीं, बल्कि बच्चों की आत्मा और संघर्ष की गूंज भी थी।

दागदार वोट, खंडित विश्वास : राहुल गांधी ने उठाए चुनाव आयोग पर गंभीर सवाल

डॉ. मोहम्मद इक़बाल सिद्दीक़ी

राहुल गांधी का खुलासा भारत के चुनावों पर गंभीर सवाल उठाता है– 7 अगस्त 2025 को, कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने नई दिल्ली स्थित एआईसीसी मुख्यालय में एक तीखी प्रेस कॉन्फ्रेंस की। उन्होंने भारत के चुनाव आयोग (ECI) पर सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (BJP) के साथ मिलकर 2024 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों और कर्नाटक की महादेवपुरा विधानसभा सीट में मतदाता सूचियों में हेराफेरी करने का आरोप लगाया।

ये आरोप राहुल गांधी द्वारा 7 फरवरी 2025 को महाराष्ट्र विकास आघाड़ी (MVA) के सहयोगियों के साथ की गई प्रेस कॉन्फ्रेंस की कड़ी में अगला बड़ा कदम हैं, और भारत के लोकतांत्रिक ढांचे की नींव पर सीधा हमला प्रतीत होते हैं। आइए हम गांधी के आरोपों का विश्लेषण करें, उन परेशान करने वाले तथ्यों को उजागर करें जो चुनावी व्यवस्था के साथ समझौते की ओर इशारा करते हैं, और उन जरूरी सवालों को उठाएं जिनका जवाब ECI और BJP को देना चाहिए ताकि जनविश्वास बहाल हो सके।

आरोप-लोकतंत्र से विश्वासघात : गांधी के आरोप चुनावी धोखाधड़ी की एक भयावह तस्वीर पेश करते हैं–

- महाराष्ट्र में, उन्होंने दावा किया कि 2024 लोकसभा और विधानसभा चुनावों के बीच मात्र 5 महीनों में 39 लाख नए मतदाता जोड़े गए, जबकि 2019 से 2024 के बीच 5 वर्षों में सिर्फ 32 लाख जोड़े गए थे।
- उनका आरोप था कि कुल मतदाता संख्या (9.7 करोड़) राज्य की वयस्क जनसंख्या (9.54 करोड़) से अधिक थी, जिससे BJP के पक्ष में फर्जी मतदाता जोड़ने का संदेह उत्पन्न होता है।
- कमठी जैसे क्षेत्रों में, उन्होंने कहा कि BJP की जीत के अंतर नई मतदाता प्रविष्टियों के साथ 'संदेहास्पद रूप से मेल खाते' हैं, जबकि अल्पसंख्यक समुदाय के मतदाताओं को 'हटाया या स्थानांतरित' कर दिया गया।
- शाम 5.30 बजे के बाद 'अचानक भारी मतदान' और CCTV फुटेज के नष्ट किए जाने को उन्होंने गहरी साजिश करार दिया।

- कर्नाटक की महादेवपुरा सीट में, कांग्रेस की छह महीने की जांच के आधार पर, उन्होंने 1,00,250 फर्जी वोटों का आरोप लगाया, जिनमें शामिल हैं–
- 11,965 डुप्लीकेट मतदाता
- 40,009 फर्जी पते
- 10,452 एक ही पते पर दर्ज थोक मतदाता
- 4,132 अमान्य फोटो
- 33,692 गलत तरीके से भरे गए फॉर्म 6 (जिसका इस्तेमाल नए मतदाताओं के लिए किया जाता है)

उन्होंने आरोप लगाया कि चुनाव आयोग ने मशीन-रीडेबल मतदाता सूची और CCTV फुटेज को छिपाया, जिसे उन्होंने BJP के साथ 'संस्थागत मिलीभगत' बताया। राहुल गांधी ने इन कृत्यों को भारतीय संविधान के खिलाफ अपराध बताया और कहा कि भारतीय लोकतंत्र खतरे में है।

लोकतंत्र में सेंध के खतरनाक संकेत : राहुल गांधी के आरोपों से आगे बढ़कर, कई अजीब लेकिन प्रमाणित घटनाएं भारतीय चुनाव व्यवस्था की कमजोरी को दर्शाती हैं–

- अविश्वसनीय पतों पर बड़े पैमाने पर मतदाता पंजीकरण– महादेवपुरा में एक ही फ्लैट में 50 मतदाताओं का पंजीकरण, जिनका कोई अता-पता नहीं।
- अचानक देर शाम वोटिंग में उछाल– इंडिया टुडे की रिपोर्ट के अनुसार, शाम के अंतिम घंटों में 7-10% वोटिंग स्पाइक, जबकि मतदान केंद्रों पर वास्तविक भीड़ कम देखी गई।
- CCTV फुटेज का नष्ट किया जाना– न्यू इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट (8 अगस्त 2025) के अनुसार, चुनाव आयोग ने महाराष्ट्र के पोलिंग बूथ्स की CCTV रिकॉर्डिंग कुछ ही महीनों में नष्ट कर दी, जो पारदर्शिता पर सवाल उठाती है।
- वरिष्ठ मतदाताओं द्वारा फॉर्म 6 का दुरुपयोग– टाइम्स ऑफ इंडिया (8 अगस्त 2025) ने पुष्टि की कि महादेवपुरा में 33,692 फॉर्म 6 प्रविष्टियों में 40 वर्ष से अधिक आयु के लोग प्रमुख थे, जबकि यह फॉर्म 18-23 आयु वर्ग के लिए है।
- विभिन्न राज्यों में डुप्लीकेट मतदाता– कांग्रेस ने आदित्य श्रीवास्तव जैसे उदाहरण दिए, जो एक ही समय में तीन राज्यों में पंजीकृत थे।
- BJP की संकीर्ण जीतें– बिजनेस स्टैंडर्ड (8 अगस्त 2025) के अनुसार, BJP ने

25 लोकसभा सीटें 33,000 से कम मतों के अंतर से जीतीं, जो सुनियोजित हेरफेर का संकेत देती हैं।

- चुनाव आयोग की पारदर्शिता में कमी- गांधी ने कहा कि चुनाव आयोग मशीन-रीडेबल वोटर लिस्ट नहीं देता, जबकि ऑस्ट्रेलिया जैसे देश यह सुविधा ऑनलाइन देते हैं।

साक्ष्य-विस्तृत लेकिन परिस्थितिजन्य : कांग्रेस के पास जो साक्ष्य हैं, वे विश्लेषणात्मक रूप से मजबूत हैं, लेकिन अभी तक कानूनी रूप से निर्णायक नहीं माने गए हैं।

- महाराष्ट्र में मतदाता वृद्धि (40,81,229) सांख्यिकीय रूप से असामान्य है।
- चुनाव आयोग का स्पष्टीकरण (48,81,620 जोड़, 8,00,391 हटाए) संभव है, लेकिन जनसंख्या आंकड़ों से तुलना जरूरी है।
- महादेवपुरा की रिपोर्टिंग गंभीर है, पर इसे राष्ट्रव्यापी पैटर्न कहने के लिए विस्तृत डेटा आवश्यक है।

चुनाव आयोग से सवाल :

- मशीन-रीडेबल मतदाता सूची और CCTV फुटेज क्यों रोके गए?
- महाराष्ट्र में 40 लाख से अधिक मतदाता जोड़ने का आधार क्या है?
- क्या महादेवपुरा की 1,00,250 संदिग्ध प्रविष्टियों की जांच की गई?
- महाराष्ट्र की CCTV रिकॉर्डिंग क्यों नष्ट की गई?
- गांधी से शपथपत्र मांगने के बजाय उनकी जानकारी की जांच क्यों नहीं?
- BJP के साथ मिलीभगत के आरोपों पर क्या जवाब है?
- 2018 के बाद सुधार क्या हुए हैं? क्या तीसरे पक्ष द्वारा ऑडिट की जाएगी वोटर लिस्ट?

BJP से सवाल

- महाराष्ट्र और महादेवपुरा में हेरफेर के आरोपों का क्या जवाब है?
- क्या BJP ने 2024 में मतदाता सूची अनियमितताओं की शिकायत की?
- क्या BJP मशीन-रीडेबल वोटर लिस्ट और CCTV फुटेज का समर्थन करेगी?
- क्या BJP पारदर्शिता की ओर ठोस कदम उठाएगी?
- क्या BJP न्यायिक जांच या संसदीय बहस का समर्थन करेगी?

लोकतंत्र की रक्षा जरूरी : भारत का चुनाव आयोग अगर वास्तव में निष्पक्ष संस्था है तो उसे डिजिटल वोटर डेटा जारी करना, CCTV फुटेज संरक्षित करना, और स्वतंत्र जांच शुरू करना होगा। BJP को भी इन आरोपों का ठोस जवाब देना होगा, केवल खारिज करने से लोकतंत्र को बल नहीं मिलता।

न्यायपालिका, संसद और नागरिक समाज को मिलकर यह सुनिश्चित करना चाहिए कि भारत का हर मत सचमुच जनता की मर्जी को दर्शाए, और किसी भी तरह की चुनावी साजिश को निष्क्रिय किया जाए। भारत का लोकतांत्रिक भविष्य दांव पर है- सतर्कता और जवाबदेही ही इसे बचा सकती है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

♦♦

7 अगस्त 2025 को, कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने नई दिल्ली स्थित एआईसीसी मुख्यालय में एक तीखी प्रेस कॉन्फ्रेंस की। उन्होंने भारत के चुनाव आयोग (ECI) पर सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (BJP) के साथ मिलकर 2024 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों और कर्नाटक की महादेवपुरा विधानसभा सीट में मतदाता सूचियों में हेराफेरी करने का आरोप लगाया। ये आरोप राहुल गांधी द्वारा 7 फरवरी 2025 को महाराष्ट्र विकास आघाड़ी (MVA) के सहयोगियों के साथ की गई प्रेस कॉन्फ्रेंस की कड़ी में अगला बड़ा कदम हैं, और भारत के लोकतांत्रिक ढांचे की नींव पर सीधा हमला प्रतीत होते हैं। आइए हम गांधी के आरोपों का विश्लेषण करें, उन परेशान करने वाले तथ्यों को उजागर करें जो चुनावी व्यवस्था के साथ समझौते की ओर इशारा करते हैं, और उन जरूरी सवालों को उठाएं जिनका जवाब ECI और छ्छ्ककको देना चाहिए ताकि जनविश्वास बहाल हो सके।

♦♦

न्याय या नरमी! जब कानून जघन्य अपराधों को माफ कर देता है

अमिताभ श्रीवास्तव

ऐसे माहौल में जहां प्रतिशोध की भावना हावी है– जहां 'आंख के बदले आंख' की सोच प्रचलित है– वहां यह लगभग असंभव सा लगता है कि हम उन मामलों की बात करें जहां देश की सर्वोच्च अदालत ने कठोर अपराधियों को यह कहकर रिहा कर दिया कि 'अब बहुत हो चुका।'

हाल की दो घटनाएं इस विरोधाभास को सामने लाती हैं। पहला मामला SonyLIV की सीरीज The Hunt की रिलीज से जुड़ा है, जो 21 मई 1991 को पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या की जांच पर आधारित है। यह हमला लिट्टे (LTTE) के एक प्रतिबद्ध और प्रशिक्षित आतंकवादी समूह द्वारा किया गया था। हमले के तीन महीने के भीतर ही, मास्टरमाइंड शिवरासन समेत सात आतंकवादियों ने आत्महत्या कर ली थी, जबकि शेष 26 को मौत की सजा सुनाई गई।

1999 तक सुप्रीम कोर्ट ने इनमें से 19 दोषियों को रिहा कर दिया। बाकी बचे सात में से चार को उम्रकैद की सजा मिली। अपील पर, दोषी नलिनी श्रीहरण की मौत की सजा को उम्रकैद में बदल दिया गया– इस फैसले पर सोनिया गांधी और प्रियंका गांधी द्वारा यह अपील करने का भी असर पड़ा कि एक अजन्मे बच्चे को मां के अपराधों की सजा नहीं मिलनी चाहिए। अंततः सभी बचे दोषियों को 31 वर्षों की सजा पूरी करने के बाद यह मानकर रिहा कर दिया गया कि सजा पर्याप्त हो चुकी है।

दूसरा मामला जो इस माह के समाचारों में फिर सामने आया, वह है सुशील शर्मा का–जो भारतीय युवा कांग्रेस के पूर्व नेता थे और जिन्होंने 1995 में अपनी पत्नी की गोली मारकर हत्या कर दी थी और उसके शव को दिल्ली के एक होटल के तंदूर में जला दिया था। उन्हें पहले मौत की सजा दी गई थी, जिसे बाद में उम्रकैद में बदल दिया गया। 2018 में 23 साल की सजा काटने के बाद उन्हें रिहा कर दिया गया।

ये दोनों मामले एक बड़े सवाल को जन्म देते हैं– भारतीय न्याय प्रणाली की असंगतता और अनिश्चितता। अलग-अलग राज्यों की अदालतें एक ही कानून की अलग-अलग व्याख्या करती हैं, और निचली अदालतों के फैसलों को अक्सर हाई कोर्ट या सुप्रीम कोर्ट द्वारा पलट दिया जाता है। न्यायिक विवेक आवश्यक है, लेकिन जब फैसले मनमाने लगने लगें, तो चिंता पैदा होती है। लेकिन आम नागरिक–विशेषकर महिलाएं–इन माफियों के बारे में क्या सोचती हैं?

महिला अधिकार कार्यकर्ताओं के बीच भ्रम और असहजता : मीडिया मैप ने उन कई महिलाओं से बात की जो अपराध और हिंसा के पीड़ितों के साथ कार्य करती हैं। उन्होंने ऐसे मामलों से जुड़े न्याय प्रणाली के रवैये पर भ्रम और चिंता ज़ाहिर की। उन्होंने यह भी बताया कि अमेरिका जैसे देशों में अपराधियों को 90 वर्षों तक की सजा दी जाती है, और नाबालिगों को भी 30 साल तक की सजा दी जा सकती है– जबकि भारत में किशोर न्याय अधिनियम के तहत ऐसा संभव नहीं है।

प्रसिद्ध वकील सुरन्या अय्यर, जो बच्चों की सुरक्षा के अंतरराष्ट्रीय मामलों–जैसे नॉर्वे में सागरिका चक्रवर्ती के केस में अपनी भूमिका के लिए जानी जाती हैं, भारत की दया-भावना से प्रेरित न्याय प्रणाली को समझती हैं।

लेकिन उनका मानना है कि यह नरमी कई बार हद से ज़्यादा हो जाती है।

वह 2012 के निर्भया गैंगरेप मामले का उदाहरण देती हैं, जिसमें शामिल किशोर अपराधी को केवल तीन साल की सुधारगृह सजा हुई और फिर उसे नए जीवन की शुरुआत के लिए वित्तीय सहायता भी दी गई। 'इतने घिनौने अपराध में शामिल व्यक्ति को इतनी आसानी से नया जीवन कैसे मिल सकता है?' वह पूछती हैं। 'जब Harsh Mander जैसे लोग उसके बचाव में आते हैं और कहते हैं कि उसे शादी कर सामान्य जीवन जीने देना चाहिए-तो यह कितना घृणित है?'

समाज पर असर और इसके संदेश : प्रयास JAC सोसाइटी की कार्यकारी निदेशक इंदु रानी सिंह- जो दशकों से बाल मजदूरी, तस्करी और शोषण से बच्चों को बचाने के क्षेत्र में कार्यरत हैं- भी ऐसे माफियों से व्यथित हैं।

'एक महिला होने के नाते और बच्चों के पुनर्वास में गहराई से शामिल होने के नाते, मैं इन फैसलों से चिंतित हूं। यदि कोई व्यक्ति अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क के जरिए आतंकवादी घटना की योजना बनाता है और कुछ दशकों में रिहा हो जाता है, तो इससे न्याय का क्या संदेश जाता है?' सिंह, नाबालिगों द्वारा किए गए अपराधों और वयस्कों द्वारा किए गए आतंकवादी या सुनियोजित हत्याओं के बीच स्पष्ट अंतर करती हैं। उनके अनुसार, अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार 18 वर्ष से कम व्यक्ति को नाबालिग माना जाता है, लेकिन गंभीर योजनाबद्ध अपराध उस श्रेणी में नहीं आते।

अपराधी पतियों के साथ खड़ी महिलाएं : अपराध और सज़ा की बहस में एक दिलचस्प और अक्सर अनदेखा पहलू है-अपराधियों की पत्नियों की भूमिका। जब तक महिलाएं स्वयं पीड़िता न हों, वे अपने दोषी पतियों की सबसे बड़ी समर्थक बन जाती हैं। यदि उनके पास साधन हैं, तो वे बड़े वकीलों को नियुक्त करती हैं या स्वयं कानूनी लड़ाई लड़ती हैं।

2002 के गुजरात दंगों के दौरान बलात्कार और हत्या के दोषी बिलकिस बानो केस के 11 अपराधियों की 2022 में रिहाई पर देशभर में आक्रोश था। रिहाई के समय उनकी पत्नियों ने आरती और मालाओं के साथ उनका स्वागत किया, जैसे कोई योद्धा युद्ध से लौटा हो।

दीपशिखा सिंह, जो एक वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता हैं और पिछले एक दशक से क्राइसिस इंटरवेंशन सेंटर्स (अब वन स्टॉप सेंटर्स) से जुड़ी हैं, इस व्यवहार को समझाती हैं-'भारत में अकेली महिला के रूप में जीना अब भी एक कलंक समझा जाता है। अधिकांश महिलाएं आर्थिक रूप से निर्भर होती हैं और सामाजिक सहारा नहीं होता। इसलिए उन्हें अपराधी पति का भी समर्थन करना पड़ता है।' यहां तक कि ताकतवर पदों पर बैठी महिलाएं भी परदे के पीछे रहती हैं। 'ग्राम पंचायत प्रमुख बनी महिलाएं कानूनी अधिकार रखती हैं, लेकिन वे अब भी घूंघट में रहकर अपने पति या परिवार के बुजुर्गों को असली ताकत सौंप देती हैं' वह जोड़ती हैं।

न्याय या समझौता : इन गंभीर और हाई-प्रोफाइल अपराधों के दोषियों की बार-बार रिहाई से जनमत असमंजस और बंटा हुआ है। क्या ये फैसले करुणा से भरी न्याय प्रणाली का उदाहरण हैं? या फिर ये ऐसे खतरनाक समझौते हैं जो जवाबदेही को कमजोर करते हैं और भविष्य के अपराधियों को बढ़ावा देते हैं?

जैसे-जैसे भारतीय न्यायपालिका करुणा और न्याय के बीच की इस पतली रेखा पर चलती है, एक बात स्पष्ट है-पीड़ितों और समाज के लिए न्याय अब भी अधूरा और अधोलिखित बना हुआ है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

♦♦

मीडिया मैप ने उन कई महिलाओं से बात की जो अपराध और हिंसा के पीड़ितों के साथ कार्य करती हैं। उन्होंने ऐसे मामलों से जुड़े न्याय प्रणाली के रवैये पर भ्रम और चिंता ज़ाहिर की। उन्होंने यह भी बताया कि अमेरिका जैसे देशों में अपराधियों को 90 वर्षों तक की सजा दी जाती है, और नाबालिगों को भी 30 साल तक की सजा दी जा सकती है- जबकि भारत में किशोर न्याय अधिनियम के तहत ऐसा संभव नहीं है।

प्रसिद्ध वकील सुरन्या अय्यर, जो बच्चों की सुरक्षा के अंतरराष्ट्रीय मामलों-जैसे नॉर्वे में सागरिका चक्रवर्ती के केस में अपनी भूमिका के लिए जानी जाती हैं, भारत की दया-भावना से प्रेरित न्याय प्रणाली को समझती हैं। लेकिन उनका मानना है कि यह नरमी कई बार हद से ज़्यादा हो जाती है।

वह 2012 के निर्भया गैंगरेप मामले का उदाहरण देती हैं, जिसमें शामिल किशोर अपराधी को केवल तीन साल की सुधारगृह सजा हुई और फिर उसे नए जीवन की शुरुआत के लिए वित्तीय सहायता भी दी गई। 'इतने घिनौने अपराध में शामिल व्यक्ति को इतनी आसानी से नया जीवन कैसे मिल सकता है?' वह पूछती हैं। 'जब Harsh Mander जैसे लोग उसके बचाव में आते हैं और कहते हैं कि उसे शादी कर सामान्य जीवन जीने देना चाहिए-तो यह कितना घृणित है?'

♦♦

पूंजीवादी व्यवस्था एक बार फिर संकट में

धर्मेन्द्र आज़ाद

भारत में, जहां करोड़ों लोग भूख, बेरोजगारी और गरीबी से जूझ रहे हैं, वहीं अदानी और अंबानी जैसे पूंजीपतियों ने पिछले एक दशक में अपनी संपत्ति को सैकड़ों गुना बढ़ा लिया है। यही वह पूंजीवादी अर्थव्यवस्था है जो लगातार जनता को यह विश्वास दिलाने की कोशिश करती है कि अगर वे कड़ी मेहनत करें तो वे भी अमीर बन सकते हैं। लेकिन हकीकत यह है कि मेहनत करने वाले को कुछ नहीं मिलता, और जो कुछ नहीं करते, उनकी तिजोरियां भरती जाती हैं।

वर्तमान में वैश्विक अर्थव्यवस्था एक गहरे संकट में डूबी हुई है। 2024 से ही दुनियाभर के शेयर बाजारों में भारी गिरावट देखने को मिल रही है, बेरोजगारी अपने चरम पर है और आर्थिक असमानता ने समाजों के भीतर गहरी खाई पैदा कर दी है। दशकों से यह प्रचारित किया जाता रहा कि पूंजीवाद का कोई विकल्प नहीं है, लेकिन अब पूंजीवाद खुद अपनी अंतर्विरोधों में उलझ चुका है और अंतिम सांसें गिन रहा है।

जिन लोगों ने कभी दावा किया था कि पूंजीवाद एक ऐसी व्यवस्था है जो सदा कायम रहेगी, वे अब इस संकट से डर कर उन्हीं नीतियों की वकालत कर रहे हैं जिनका वे पहले विरोध करते थे, ताकि किसी तरह इस व्यवस्था को बचाया जा सके। पूरी दुनिया में मंदी गहराती जा रही है, उत्पादन बढ़ रहा है, लेकिन बाजार की मांग घटती जा रही है। सामान बन रहा है, पर खरीदने वाला कोई नहीं है। कार्ल मार्क्स ने 19वीं सदी में ही इस संकट की भविष्यवाणी की थी। उन्होंने कहा था कि पूंजीवाद केवल उत्पादन बढ़ा सकता है, लेकिन खपत सुनिश्चित नहीं कर सकता क्योंकि यह मजदूरों को उनके श्रम का पूरा मूल्य नहीं देता। उत्पादन के साधन कुछ मुट्ठीभर लोगों के हाथों में सिमटे हुए हैं, जबकि मजदूर वर्ग खरीदने की शक्ति से वंचित है। यही अंतर्विरोध बार-बार आर्थिक संकटों को जन्म देता है, और आज दुनिया एक और उदाहरण देख रही है।

मार्क्स के 'अतिरिक्त मूल्य' (Surplus Value) के सिद्धांत के अनुसार, पूंजीपति मजदूरों को उनके श्रम का पूरा मूल्य नहीं देते। उन्हें सिर्फ इतना भुगतान किया जाता है कि वे जिंदा रह सकें और अगले दिन फिर से काम पर लौट सकें। बाकी मुनाफा पूंजीपतियों की जेब में चला जाता है।

2024 की ऑक्सफैम रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया की 1% आबादी के पास वैश्विक संपत्ति का 46% हिस्सा है, जबकि सबसे गरीब 50% आबादी के पास सिर्फ 2% संपत्ति है। भारत में, जहां करोड़ों लोग भूख, बेरोजगारी और गरीबी से जूझ रहे हैं, वहीं अदानी और अंबानी जैसे पूंजीपतियों ने पिछले एक दशक में अपनी संपत्ति को सैकड़ों गुना बढ़ा लिया है। यही वह पूंजीवादी अर्थव्यवस्था है जो लगातार जनता को यह विश्वास दिलाने की कोशिश करती है कि अगर वे कड़ी मेहनत करें तो वे भी अमीर बन सकते हैं। लेकिन हकीकत यह है कि मेहनत करने वाले को कुछ नहीं मिलता, और जो कुछ नहीं करते, उनकी तिजोरियां भरती जाती हैं।

पूंजीवाद की एक और बड़ी समस्या यह है कि यह बेरोजगारी पैदा करता है। जैसे-जैसे तकनीक बढ़ती है, पूंजीपति मशीनों का उपयोग करके मुनाफा बढ़ाते हैं, जिससे मानव श्रम की आवश्यकता घटती जाती है। आदर्श रूप से, ऑटोमेशन और एआई जैसी तकनीकें श्रमिकों के काम के घंटे कम कर सकती थीं और काम की स्थिति को बेहतर बना सकती थीं, लेकिन पूंजीवाद इन तकनीकों का उपयोग बेरोजगारी बढ़ाने और पूंजीपतियों का मुनाफा बढ़ाने के लिए करता है।

2024 के अंत तक वैश्विक बेरोजगारी दर 8% तक पहुंच गई थी, और भारत में यह 10% में मजदूरों की औसत आय 20% तक गिर गई थी, जबकि महंगाई लगातार बढ़ती जा रही थी। यही वह पूंजीवादी संकट है जिसे मार्क्स ने समझाया था-पूंजीवादी उत्पादन का उद्देश्य समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं, बल्कि मुनाफा कमाना होता है। जब मुनाफा नहीं होता, तो उत्पादन बंद कर दिया जाता है और मजदूरों को सड़कों पर छोड़ दिया जाता है। आज लाखों मकान खाली पड़े हैं, फिर भी लोग बेघर हैं। गोदामों में अनाज भरा पड़ा है, लेकिन करोड़ों लोग भूखे हैं। यही पूंजीवाद का सबसे बड़ा अंतर्विरोध है-उत्पादन का उद्देश्य आम जनता की जरूरतों की पूर्ति नहीं, बल्कि पूंजीपतियों का लाभ है।

इस शोषण में राज्य की भूमिका भी छिपी नहीं है। मार्क्स ने कहा था कि आधुनिक राज्य 'पूंजीपति वर्ग की कार्यकारी समिति से अधिक कुछ नहीं है।' आज यह बात अक्षरशः सत्य साबित हो रही है। सरकारें जनता की नहीं, बल्कि पूंजीपतियों के हितों की रक्षा कर रही हैं। देशी-विदेशी पूंजीपति, IMF और विश्व बैंक जैसे संस्थानों के साथ मिलकर सरकारों पर सार्वजनिक उपक्रमों के निजीकरण का दबाव बना रहे हैं। आम जनता के लिए आवश्यक सेवाएं दिन-ब-दिन महंगी और दुर्गम होती जा रही हैं। दूसरी ओर, सरकारें कॉर्पोरेट्स को टैक्स छूट दे रही हैं, जबकि महंगाई और अप्रत्यक्ष करों का बोझ जनता पर डाला जा रहा है।

पूंजीवादी व्यवस्था में धन और आय की यह केंद्रीकरण और विषमता एक प्रणालीगत समस्या है, जिसे पूंजीवाद के भीतर रहकर नहीं सुलझाया जा सकता। मार्क्स ने बताया था कि इन समस्याओं का समाधान समाजवाद में है, जहां उत्पादन के साधनों का सामूहिक स्वामित्व होता है और श्रम का न्यायसंगत मूल्य निर्धारित किया जाता है। समाजवाद में संसाधनों का समान वितरण होता है, जिससे सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को कम किया जा सकता है और समाज को इन विषमताओं से धीरे-धीरे मुक्ति की ओर ले जाया जा सकता है। यह सोवियत संघ में लेनिन और स्टालिन के नेतृत्व में और चीन में माओ के नेतृत्व में सफलतापूर्वक लागू किया गया था। पूंजीवादी विचारधारा के समर्थक तर्क देते हैं कि समाजवाद असफल हो चुका है, इसलिए पूंजीवाद का कोई विकल्प नहीं है। लेकिन यह तर्क अधूरा और भ्रामक है। उदाहरण के लिए, सोवियत संघ की असफलता आर्थिक कमजोरी की वजह से

नहीं, बल्कि आंतरिक गद्दारों के कारण हुई थी। लेनिन और स्टालिन के नेतृत्व में, सोवियत संघ ने मात्र 30 वर्षों में एक पिछड़े देश से विश्व की दूसरी सबसे बड़ी महाशक्ति बनने तक का सफर तय किया। 1950 तक सोवियत संघ की औद्योगिक विकास दर पूंजीवादी देशों से कहीं अधिक थी।

लेकिन जब 1956 में ख्रुश्चेव सत्ता में आए, तो उन्होंने समाजवादी व्यवस्था को अंदर से कमजोर करना शुरू कर दिया। बाहर से तो वे समाजवाद को मजबूत करने का दावा करते रहे, लेकिन अंदर ही अंदर उन्होंने समाजवादी अर्थव्यवस्था को बाजार आधारित अर्थव्यवस्था की ओर धकेलना शुरू कर दिया। उन्होंने पूंजीवादी देशों के साथ 'सह-अस्तित्व' की नीति अपनाई और मार्क्सवाद-लेनिनवाद की क्रांतिकारी भावना को नष्ट करना शुरू कर दिया। ख्रुश्चेव ने असली समाजवाद समर्थकों को 'विरोधी' करार देकर समाप्त कर दिया। इस प्रक्रिया ने धीरे-धीरे सोवियत संघ में पूंजीवाद की पुनर्स्थापना की। यह समाजवाद की असफलता नहीं थी, बल्कि इसके अंदर से किए गए विध्वंस का परिणाम था।

मार्क्स ने कहा था, 'मजदूर वर्ग ही इतिहास का असली निर्माता है।' यह स्पष्ट है कि पूंजीवाद अपने अंत की ओर बढ़ रहा है, लेकिन इसका अंत स्वयं नहीं होगा-मजदूर वर्ग को संगठित होकर इसे समाप्त करना होगा। समाजवाद ही एकमात्र समाधान है, जो ऐसी व्यवस्था प्रस्तुत करता है जिसमें उत्पादन के साधनों का स्वामित्व समूचे समाज के पास होता है, न कि कुछ व्यक्तियों के पास। समाजवाद में मजदूरों को उनके श्रम का पूरा मूल्य मिलता है, और उत्पादन समाज की जरूरतों के अनुसार होता है, न कि सिर्फ मुनाफे के लिए। स्वास्थ्य, शिक्षा और बुनियादी सेवाएं हर नागरिक का अधिकार होती हैं, न कि निजी कंपनियों के मुनाफे का जरिया। लेनिन और स्टालिन के नेतृत्व में सोवियत संघ ने यह सिद्ध किया कि समाजवाद केवल एक सिद्धांत नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक और वैज्ञानिक प्रणाली है।

अब सवाल यह नहीं है कि समाजवाद संभव है या नहीं, बल्कि यह है कि समाज इस पूंजीवादी संकट से बाहर निकलने के लिए इसे कब और कैसे अपनाएगा। मार्क्स ने कहा था, 'पूंजीवाद का अंत अनिवार्य है, और समाजवाद उसका उत्तराधिकारी होगा।' आज यह भविष्यवाणी सच होती दिख रही है। पूंजीवाद न केवल विफल हो चुका है, बल्कि अपने ही अंतर्विरोधों से जूझते हुए पतन की कगार पर है। लेकिन इसका अंत तभी संभव है जब मेहनतकश जनता इसके खिलाफ उठ खड़ी हो और एक बार फिर समाजवादी क्रांति का नेतृत्व करे।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

♦♦

पूंजीवादी व्यवस्था में धन और आय की यह केंद्रीकरण और विषमता एक प्रणालीगत समस्या है, जिसे पूंजीवाद के भीतर रहकर नहीं सुलझाया जा सकता। मार्क्स ने बताया था कि इन समस्याओं का समाधान समाजवाद में है, जहां उत्पादन के साधनों का सामूहिक स्वामित्व होता है और श्रम का न्यायसंगत मूल्य निर्धारित किया जाता है। समाजवाद में संसाधनों का समान वितरण होता है, जिससे सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को कम किया जा सकता है और समाज को इन विषमताओं से धीरे-धीरे मुक्ति की ओर ले जाया जा सकता है। यह सोवियत संघ में लेनिन और स्टालिन के नेतृत्व में और चीन में माओ के नेतृत्व में सफलतापूर्वक लागू किया गया था।

मीडिया मैप

में विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें

One full Color Page : Rs. 150,000/- (one lakh fifty thousand only)
One full Page (Black and white) : Rs. 100000/- (One lakh only)

69 ज्ञानखंड-4 इंदिरापुरम, गाजियाबाद- 201014 (उत्तर प्रदेश)
दूरभाष : 9810385757/9910069262

Email : editor@mediamap.co.in

प्रतिरोध की राजनीति का प्रतीक

प्रोफेसर प्रदीप माथुर

हाल की स्मृति में शायद ही किसी राज्य विधानसभा चुनाव ने उतनी बहस और विवाद को जन्म दिया हो जितना कि इस साल नवंबर में होने वाले बिहार चुनाव ने दिया है। महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों के दौरान मतदाता हेराफेरी के आरोपों ने पहले ही देश की चुनावी राजनीति को गर्म कर दिया था, लेकिन चुनाव आयोग द्वारा मतदाता सूची में संशोधन के फैसले ने स्थिति को और अधिक तीव्र बना दिया है। सुप्रीम कोर्ट से लेकर देश के दक्षिणी छोर तक, बिहार लगातार सुर्खियों में बना हुआ है-चाहे वह बिगड़ती कानून-व्यवस्था हो, सत्तारूढ़ एनडीए में नीतीश कुमार के राजनीतिक भविष्य को लेकर अंदरूनी कलह हो, या मतदाता सूची में संशोधन को लेकर उठता विवाद।

लेकिन पटना से 12,000 किलोमीटर दूर, एक और बड़ा चुनाव लोगों का ध्यान खींच रहा है- न्यूयॉर्क का मेयर चुनाव, जो कि नवंबर में ही होना है। बिहार जहां भारत के सबसे गरीब और पिछड़े राज्यों में से एक है, जहां 88 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है, वहीं न्यूयॉर्क एक समृद्ध, वैश्विक महानगर है-वित्त, संस्कृति और राजनीति का केंद्र। यदि बिहार की राजनीति अनुभवी नेताओं जैसे नीतीश कुमार के इर्द-गिर्द घूमती है, तो न्यूयॉर्क में एक बिल्कुल अलग तरह का चेहरा उभर रहा है-भारतीय मूल के एक युवा, प्रगतिशील राजनेता-जोहरान ममदानी।

सिर्फ 33 वर्ष की उम्र में, ममदानी अमेरिकी राजनीति के एक उभरते सितारे के रूप में सामने आए हैं। एक डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट (लोकतांत्रिक समाजवादी) के रूप में उन्होंने इस महीने की शुरुआत में न्यूयॉर्क मेयर चुनाव की डेमोक्रेटिक प्राइमरी जीतकर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियां बटोरीं। उनकी जीत केवल व्यक्तिगत विजय नहीं थी-इसे लोकतांत्रिक समाजवाद के लिए एक मील का पत्थर माना गया, विशेषकर उस दौर में जहां अधिनायकवाद की प्रवृत्तियां तेज होती जा रही हैं। उन्होंने एक पूर्व गवर्नर को हराया जिसे राजनीतिक प्रतिष्ठान का समर्थन प्राप्त था-ममदानी ने किसी भी उच्च वर्गीय समर्थन की जगह जनआधारित ताकत पर भरोसा किया।

ममदानी का उदय केवल एक चुनावी अभियान नहीं है-यह एक व्यापक वैचारिक बदलाव का प्रतीक है। अंतरराष्ट्रीय और घरेलू विवादास्पद मुद्दों पर उनके स्पष्ट और साहसी रुख ने उन्हें प्रशंसा और विरोध दोनों दिलाया है। खास तौर पर, उन्होंने खुले तौर पर फिलिस्तीनी अधिकारों का समर्थन किया है और प्रभावशाली राजनीतिक शख्सियतों की कड़ी आलोचना की है। उनकी बेबाक वकालत ने उन्हें दक्षिणपंथी आलोचकों का निशाना बनाया, लेकिन प्रगतिशील कार्यकर्ताओं के बीच उन्हें एक मज़बूत नेता के रूप में स्थापित किया।

उनका राजनीतिक दृष्टिकोण न्याय और समानता के प्रति जीवनपर्यंत प्रतिबद्धता में निहित है। विभिन्न धार्मिक पृष्ठभूमियों से आए माता-पिता के घर जन्मे ममदानी एक ऐसे वातावरण में पले-बढ़े जहां सामाजिक सक्रियता और कला का गहरा प्रभाव था। उनके पिता, एक प्रसिद्ध विद्वान, नस्लीय न्याय आंदोलनों में सक्रिय रहे, जबकि उनकी मां-एक प्रतिष्ठित कलाकार-राजनीतिक अन्याय के विरोध में एक अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक महोत्सव में भाग लेने से इनकार कर चुकी हैं। इन दोनों ने ममदानी के भीतर उद्देश्य और नैतिक जिम्मेदारी की भावना को जन्म दिया जो आज भी उनके राजनीतिक सफर की नींव है।

ममदानी की सक्रियता बहुत पहले शुरू हो गई थी। कॉलेज छात्र रहते हुए ही उन्होंने फिलिस्तीन में न्याय के पक्ष में एक छात्र संगठन की स्थापना की। स्नातक के बाद उन्होंने किराएदारों के बेदखली विरोध में काम किया और निम्न-आय समुदायों को कानूनी सहायता दिलाने में मदद की। इन ज़मीनी संघर्षों में उनकी भागीदारी ने उन्हें राजनीति में प्रवेश का आधार दिया। उन्होंने पूरे अमेरिका में प्रगतिशील उम्मीदवारों के लिए प्रचार किया, फिर स्वयं चुनाव लड़ने का फैसला किया।

2020 में ममदानी न्यूयॉर्क स्टेट असेंबली के लिए निर्वाचित हुए, और 2022 व 2024 में पुन: चुने गए। मेयर चुनाव के व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद उन्होंने विधानसभा में एक भी सत्र नहीं छोड़ा, जिससे उनके समर्पण और विधायी जिम्मेदारियों के प्रति गंभीरता की प्रशंसा की गई। उनका रिकॉर्ड केवल प्रतीकात्मक नहीं बल्कि वास्तविक नीतिगत भागीदारी को दर्शाता है।

उनका अभियान न्यूयॉर्क मेयर चुनाव को अमेरिकी राजनीति के भविष्य पर जनमत संग्रह में बदल चुका है। कभी हाशिये पर माने जाने वाले मुद्दे-सर्वजन आवास, पुलिस जवाबदेही और श्रमिक अधिकार-अब चर्चा के केंद्र में हैं। ममदानी की उम्मीदवारी उन अमेरिकी मतदाताओं की बढ़ती संख्या की आवाज है जो पारंपरिक राजनीति से निराश हैं और संरचनात्मक बदलाव की मांग कर रहे हैं। हालांकि आलोचक उन्हें अनुभवहीन या अति आदर्शवादी बताते हैं, लेकिन उनकी लगातार बढ़त इससे उलट संकेत देती है। जनआधारित अभियान, स्पष्ट वैचारिक रुख और शासन के प्रति प्रतिबद्धता उन्हें केवल एक व्यवस्था-विरोधी नेता ही नहीं, बल्कि नई राजनीतिक पीढ़ी का संभावित नेतृत्वकर्ता भी बनाती है।

बिहार और न्यूयॉर्क के चुनावों के बीच तुलना बिल्कुल विरोधाभासी है—एक ऐसा चुनाव जो भारत के ग्रामीण और पिछड़े राज्य में पारंपरिक राजनीतिक जोड़-तोड़ के साथ हो रहा है, और दूसरा जो एक वैश्विक शहर में नए विचारों और युवा ऊर्जा से प्रेरित है। फिर भी दोनों में एक समानता है-राजनीतिक बदलाव और उत्तरदायी नेतृत्व की तलाश, एक ऐसे समय में जब दुनिया भर में लोकतंत्र की दिशा पर सवाल उठ रहे हैं। चाहे बिहार हो या न्यूयॉर्क, इस नवंबर में मतदाताओं द्वारा किए गए चुनाव शायद भविष्य की एक झलक देंगे-न केवल उनके अपने शासन की, बल्कि शायद लोकतंत्र की भी।

सिनेस्थीज़िया सोइरे

कला, विज्ञान व सिनेस्थीज़िया अनुसंधान में वैश्विक आवाज़ों का संगम

कौटिल्य फाउंडेशन ने रविवार, 10 अगस्त 2025 को शाम 6 से 8 बजे IST तक 'सिनेस्थीज़िया सोइरे' का सफल आयोजन किया। यह आयोजन दुनिया भर के प्रतिभागियों को एकत्रित करने वाला एक अनूठा मंच बना, जिसमें सिनेस्थीज़िया की अद्भुत और जटिल प्रक्रिया का गहन अन्वेषण किया गया। सिनेस्थीज़िया एक न्यूरोलॉजिकल घटना है जिसमें एक इंद्रिय स्वत: दूसरी इंद्रिय को सक्रिय कर देती है–जैसे शब्द रंगों को उत्पन्न कर सकते हैं, कुछ आकृतियां स्वाद से जुड़ी हो सकती हैं और संख्याओं को अलग-अलग व्यक्तित्व प्राप्त हो सकते हैं। यह दुर्लभ अवस्था है जो वैश्विक स्तर पर लगभग 4% लोगों में पाई जाती है।

इस आयोजन का संचालन नृत्यांगना और सिनेस्थीज़िया शोधकर्ता निशा केसरी ने किया। इस संध्या में विभिन्न देशों के प्रमुख विशेषज्ञों, कलाकारों और शोधकर्ताओं ने अपने दृष्टिकोण साझा किए।

यह कार्यक्रम Project S for Synesthesia का हिस्सा था- एक पहल जिसका नेतृत्व निशा केसरी कर रही हैं, जिसमें सिनेस्थीज़िया को एक कलात्मक उपकरण के रूप में देखा जा रहा है, विशेषकर भारतीय कलाकारों के संदर्भ में। जेनेटिक्स में पृष्ठभूमि रखने वाली एक कथक कलाकार होने के नाते, निशा अपने कार्य में अंत:विषय दृष्टिकोण अपनाती हैं। उनका उद्देश्य सिनेस्थेटिक अनुभवों को दस्तावेज़ करना, उनका विश्लेषण करना और यह दिखाना है कि ये अनुभव भारत में कला के नए रूपों को कैसे प्रेरित कर सकते हैं। वह कलाकारों, वैज्ञानिकों और सिनेस्थीट लोगों से संवाद स्थापित करने और उनके अनुभव साझा करने का आह्वान करती हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत कौटिल्य फाउंडेशन के अध्यक्ष प्रो. लल्लन प्रसाद के उद्घाटन भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने सिनेस्थीज़िया को रचनात्मकता, अनुभूति और मानवीय जुड़ाव के बीच सेतु बताया।

पहली प्रस्तुति अमेरिकी सिनेस्थीज़िया एसोसिएशन की सह-संस्थापक और कलाकार कैरोलीन स्टीन द्वारा दी गई, जिनकी प्रस्तुति का विषय था– 'सिनेस्थीज़िया- दुनिया को अलग नज़र से देखना।' उन्होंने बताया कि कैसे उनके कला के प्रारंभिक वर्षों से लेकर बाद के वर्षों में उनके द्वारा अनुभव की गई रंगीन और गतिशील आकृतियों ने उनके चित्रण को नया रूप दिया।

इसके बाद डॉ. सीन ए. डे, भाषाविद्, मानवविज्ञानी और IASAS (International Association of Synaesthetes, Artists, and Scientists) के अध्यक्ष ने 'सिनेस्थीज़िया के प्रकार- दुर्लभ, सामान्य और काल्पनिक' विषय पर प्रकाश डाला। उन्होंने विभिन्न प्रकार की सिनेस्थीज़िया की जानकारी दी और बताया कि कुछ रूप सांस्कृतिक प्रभावों और पहचान की कठिनाइयों के चलते जटिल हो सकते हैं।

एंटोन सिडोरोफ-डोर्सो, भाषाविद्, मनोवैज्ञानिक और IASAS के उपाध्यक्ष ने 'संस्कृतियों के पार सिनेस्थीज़िया का अन्वेषण-आउटरीच, अनुसंधान और प्रभाव' विषय पर अपने क्रॉस-कल्चरल शोध साझा किए, जिनमें अफ्रीका में किए गए अध्ययन भी शामिल थे। उन्होंने बताया कि कैसे संस्कृति सिनेस्थीज़िया के अनुभवों को आकार देती है और इस क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सहयोग का महत्व बताया।

इसके बाद, निंगहुई शियोंग, चीनी कलाकार, चाइनीज़ सिनेस्थीज़िया एलायंस के सह-संस्थापक और Painting Music पुस्तक के लेखक ने 'मेरे आत्म-अन्वेषण के माध्यम से कला में सिनेस्थीज़िया की भूमिका' विषय पर अपनी प्रस्तुति दी। उन्होंने अपने अनुभव साझा किए कि कैसे संगीत और प्रकृति की ध्वनियां उनके लिए दृश्य रूप लेती हैं, और यह कैसे उनकी रचनात्मक प्रक्रिया को प्रेरित करता है।

अंतिम प्रस्तुति जेम्स वैनरटन, च सिनेस्थीज़िया एसोसिएशन के अध्यक्ष द्वारा दी गई। उनका विषय था– 'सिनेस्थीज़िया के प्रति जागरूकता बढ़ाना- UKSA के 25 वर्ष।' एक लेक्सिकल-गस्टेटरी सिनेस्थीट होने के नाते उन्होंने बताया कि कैसे शब्दों से उन्हें विशिष्ट स्वाद महसूस होते हैं, और उन्होंने लंदन अंडरग्राउंड के स्टेशनों का एक 'स्वाद मानचित्र' भी बनाया है। उन्होंने मार्केटिंग और ब्रांडिंग में सिनेस्थीज़िया की भूमिका और इससे जुड़ी जागरूकता अभियानों के महत्व पर भी चर्चा की।

प्रश्नोत्तर सत्र में दर्शकों ने विविध प्रश्न पूछे- जैसे, संस्कृति इंद्रिय अनुभूति को कैसे प्रभावित करती है, सिनेस्थीज़िया किस प्रकार कला और संगीत में नवीनता ला सकती है, क्या इसे प्रशिक्षित या नियंत्रित किया जा सकता है, और शिक्षा एवं अनुसंधान में जागरूकता अभियानों की क्या भूमिका है।

कार्यक्रम का समापन वक्ताओं, प्रतिभागियों और आयोजन टीम के प्रति आभार ज्ञापन के साथ हुआ। निशा केसरी ने भारत के कलाकारों, वैज्ञानिकों और सिनेस्थीट लोगों को इस संवाद में जुड़ने, अपने अनुभव साझा करने और इस रोचक क्षेत्र को आगे बढ़ाने का खुला निमंत्रण दिया।

■■ मीडिया मैप न्यूज नेटवर्क

स्मृति शेष

ऋषिस्वरूप डॉ. रामजी लाल जांगिड़ : स्मृतियों को नमन

वे मेरे प्रात: बंदनीय नाना जी भी थे! यह एक अद्भुत दैवीय संयोग था, जब दिल्ली के एक महति कार्य–क्रम में मैं बतौर मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थी और हमारे साथ डाक्टर जांगीड़ साहब बतौर विशिष्ट अतिथि मंच साझा कर रहे थे, उक्त कार्यक्रम के दौरान मैंने पाया कि ज्यादातर लोग उनके चरण स्पर्श कर आशीर्वाद ले रहे थे, मैं ने भी श्रद्धावनत प्रणाम किया, उन्होंने सपाट लहजे में बोला बहुत कम उम्र में मुख्य अतिथि की भूमिका में आना ईश्वरीय कृपा है, मैंने भावपूर्ण अभिवादन किया और बातों–बातों में उन्होंने कहा तुम आज से मुझे नाना जी कहकर सम्बोधित करोगी, जो मुझे कुछ असहज लगा, किन्तु उसी समय दूसरी ओर अलग दैवीय घटना घटित हो रही थी, अकल्पनीय...कुछ ही अंतराल के बाद मुझे सूचना आई कि हमारे जैविक वास्तविक नाना जी की दैहिक जीवन यात्रा समाप्त हो गयी, जिनसे हमारा बहुत गहरा लगाव था, शायद उस आघात को मै सहन नहीं कर पाती, संभवत: इसी लिए प्रभु ने दैवीय विधान पहले से ही वैसी रचना रचकर मेरे जैविक नाना जी के प्रतिरूप स्वरूप डाक्टर जांगीड़ साहब को मेरे रू–ब–रू खड़ा कर दिया था, शायद यही प्रभु की इच्छा... किंकर्तव्य विमूढ़ तत्क्षण मैंने दैवीय संदेश मानकर डा.

डॉ. रामजी लाल जांगिड़

♦♦

हिंदी पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष और निदेशक रहे डॉ. जांगिड़ का स्मरण करते हुए उपस्थित लोगों की आंखें नम थीं और स्वर विह्वल। डा. जांगीड़ उस दौर में हिंदी विभाग के पहले निदेशक बने थे, जब भारतीय जन संचार संस्थान अंग्रेजी के प्रभुत्व में जकड़ा हुआ था। उन्होंने अपने अध्यापन और व्यक्तित्व से छात्रों के मन से अंग्रेजी का भय दूर किया और हिंदी पत्रकारिता को नए आयाम स्थापित किए। आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ाया। विशेषकर हिन्दी भाषी विद्यार्थियों के लिए उन्होंने एक संबल के रूप में कार्य किया। उनके संस्मरणों को याद करते हुए उनकी शिष्या राजश्री राय और संगीता तिवारी और अन्य शिष्यगण जब उनके बारे में बोल रहे थे, तो उनकी आवाज में अपार कृतज्ञता और भावुकता दोनों झलक रही थी। उक्त श्रद्धांजलि सभा में कई पुरातन छात्र, सहकर्मी प्रो. प्रदीप माथुर से भी भेंट हुई। जो उनके सबसे करीबी थे। वक्ताओं में लगभग सभी लोगों के उद्गार विचार का केंद्र बिंदु यही रहा कि डॉ. जांगिड़ ने न केवल अपने संस्थान को नई पहचान दी बल्कि हिंदी पत्रकारिता की आने वाली पीढ़ी के मन में आत्मविश्वास भी जगाया। डॉ. जांगिड़ 86 वर्ष की आयु में हमें छोड़कर चले गए। उनकी स्मृतियों को शत-शत नमन!!

♦♦

जांगीड़ साहब को अपने वास्तविक नाना जी के रूप में स्वीकार कर लिया। उसके बाद की अनेकों मार्मिक संस्मरण है, बस इतना कहना है कि उनका करुणा पूर्ण स्नेह उनके जीवन के आखिरी सांस तक मेरे साथ रहा, उनकी इच्छा के अनुरूप मुझे ही कांधा देने, मुखाग्नि देने, का दुखद अवसर मिला, आज उनका त्रयोदशी संस्कार सम्पन्न करने के पश्चात वियोग पीड़ा में यह भाव सम्पूर्ण अन्तःकरण से निकल रहा है, जो उनके श्री चरणों में समर्पित है। ईश्वर उन्हें अपने चरणों में स्थान दें और हमें सम्बल प्रदान करें कि हमे इस वियोग पीड़ा को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

जांगिड़ दंपति द्वारा मुझे और मेरे परिवार को अत्यधिक स्नेह मिला। उनकी पत्नी डॉ. सत्या जांगिड़ दिल्ली विश्वविद्यालय के कालिंदी कॉलेज में प्रोफेसर थीं। संतानहीन होने के बावजूद दोनों लोगो का अटूट वात्सल्य मुझे बराबर मिलता रहा! उनके देहावसान के तुरंत बाद भारतीय जन संचार विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित शोकसभा ने मुझे उनके विराट व्यक्तित्व के बारे में जानकारी हुई और मुझे यह एहसास कराया कि डॉ. रामजी लाल जांगिड़ केवल मेरे नाना जी नहीं थे वे एक विद्वान प्रोफेसर या विभागाध्यक्ष भी थे, साथ ही अपने छात्रों और सहकर्मियों के लिए स्नेह, मार्गदर्शन और प्रेरणा का एक विराट स्रोत थे।

हिंदी पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष और निदेशक रहे डॉ. जांगिड़ का स्मरण करते हुए उपस्थित लोगों की आंखें नम थीं और स्वर विह्वल।

डा. जांगीड़ उस दौर में हिंदी विभाग के पहले निदेशक बने थे, जब भारतीय जन संचार संस्थान अंग्रेजी के प्रभुत्व में जकड़ा हुआ था। उन्होंने अपने अध्यापन और व्यक्तित्व से छात्रों के मन से अंग्रेजी का भय दूर किया और हिंदी पत्रकारिता को नए आयाम स्थापित किए। आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ाया। विशेषकर हिन्दी भाषी विद्यार्थियों के लिए उन्होंने एक संबल के रूप में कार्य किया।

उनके संस्मरणों को याद करते हुए उनकी शिष्या राजश्री राय और संगीता तिवारी और अन्य शिष्यगण जब उनके बारे में बोल रहे थे, तो उनकी आवाज में अपार कृतज्ञता और भावुकता दोनों झलक रही थी। उक्त श्रद्धांजलि सभा में कई पुरातन छात्र, सहकर्मी प्रो. प्रदीप माथुर से भी भेंट हुई। जो उनके सबसे करीबी थे।

वक्ताओं में लगभग सभी लोगों के उद्गार विचार का केंद्र बिंदु यही रहा कि डॉ. जांगिड़ ने न केवल अपने संस्थान को नई पहचान दी बल्कि हिंदी पत्रकारिता की आने वाली पीढ़ी के मन में आत्मविश्वास भी जगाया।

डॉ. जांगिड़ 86 वर्ष की आयु में हमें छोड़कर चले गए। वे अद्भुत विद्वान थे– हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत तीनों

प्रोफेसर (डा0) रामजी लाल जांगिड

एक नज़र में

प्रो0 (डॉ0) रामजी लाल जांगिड जी एक ऐसे समाजसेवी एवं शिक्षाविद् हैं जिन्होंने एक नहीं अनेको ऐसे कीर्तिमान स्थापित किये हैं जो हम सबके लिये अनुकरणीय हैं। विशेषकर महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में, कमजोर वर्ग के हितों की रक्षा के क्षेत्र में और आज का ये शताब्दी सम्मान समरोह भी उनकी इन्हीं भावनाओं का परिचायक है। यहाँ उन सबका विवरण देना हमारे लिये संभव नहीं है, लेकिन कुछ ऐसे संस्मरण है जो हम सबके लिये मार्गदर्शन का कार्य करेंगे। उन्हें अवश्य आप सबके सम्मुख प्रस्तुत करना चहूँगा –

''सादा जीवन उच्च विचार''

प्रो0 (डॉ0) रामजी लाल जांगिड विश्व में पहले और अकेले ऐसे शिक्षक हैं, जिन्होंने लगभग 160 देशों में लगभग 2000 पत्रकार तैयार किये और 6 भाषाओं – हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी तथा ओड्यिा भाषा में शिक्षा दी। 85 वर्ष पूरे कर चुके प्रो0 (डॉ0) रामजी लाल जांगिड जी ने हिन्दी और अंग्रेजी में वर्ष 1957 से लिखना शुरू किया था। वह 1957 में ही चमड़िया कॉलेज, फतेहपुर, शेखावटी, राजस्थान और महाराजा कॉलेज, जयपुर, राजस्थान के सर्वश्रेष्ठ वक्ता चुन लिये गये थे। उनके पिता स्व0 श्री गोवर्धन लाल जी ने कुछ मित्रों के साथ मिलकर 28 नवम्बर 1943 को अपने कस्बे फतेहपुर शेखावटी में 'जांगिड वैदिक विद्यालय' की स्थापना की और इस हेतु ज़मीन खरीदने के लिए उनकी माँ स्व0 श्रीमती शोभा देवी जी ने अपने सारे गहने दान कर दिये।

राजस्थान का ये अकेला ऐसा स्कूल था, जहाँ दलित छात्रों को संस्कृत और वैदिक संस्कारों की शिक्षा दी जाती थी। प्रो0 जांगिड ने विज्ञापन जगत, रेड्यिो, टेलीविज़न, पत्रिकाओं और दैनिक समाचार पत्रों में काम का अनुभव पाने पर भारत सरकार ने, पत्रकारिता की शिक्षा भारतीय भाषाओं में शुरू करने के लिए 'भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली' में बुला लिया।

उनके दो छात्रों को एशिया का सबसे बड़ा पुरस्कार 'मैगसेसे अवॉर्ड' मिला। उन्हें भारत में दूरदर्शन और जी. टी.वी. शुरू करने के लिए बुलाया गया। वर्ष 1964 में 24 वर्ष पूरे करने पर राजस्थान साहित्य अकादमी में उन्हें वर्ष का सर्वश्रेष्ठ लेकख घोषित कर दिया था। वर्ष 1980 में उन्हें पूर्व प्रधानमंत्री स्व0 श्रीमती इंदिरा गाँधी जी ने झुंझुनू से लोकसभा के लिए चुनाव लड़ने हेतु टिकट दिया था। मगर उन्होंने चुनाव लड़ने से इन्कार कर दिया था। उन्होंने 1962 में राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स से पेंटिंग की शिक्षा ली। उन्होंने 1967 में राजस्थान विश्वविद्यालय से इतिहास में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

उनकी पत्नी स्व0 श्रीमती प्रो0 (डॉ0) सत्या जांगिडजी ने भी वर्ष 1967 में काशी हिन्दु विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की थी। बाद में उन्होंने लगभग 30 पत्रिकाओं और दैनिक समाचर पत्रों में हिन्दी तथा अंग्रेजी में विभिन्न क्षेत्रों पर लेख लिखे और टेलीविज़न पर वार्तायें प्रसारित की।

हम हैं आपके

दिनांक : 29 मार्च 2025

समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यगण

पद्मभूषण श्री राम वंजी सुतार शताब्दी सम्मान समारोह आयोजक समिति

भाषाओं पर समान अधिकार रखते थे। हालांकि मुझे न तो उन्होंने कभी पढ़ाया, न इसके पहले कभी मिले थे, फिर भी उनकी विद्वता और आभा से मैं गहरे प्रभावित रही।

कुछ वर्ष पूर्व पत्नी के निधन के बाद डॉ. जांगिड़ ने अपने शिष्यों और मित्रों को ही अपना परिवार मानकर सदैव उनके बीच ही अपना जीवन व्यतीत किया।

डॉ. रामजी लाल जांगिड़ न केवल एक महान अध्यापक और विद्वान थे, बल्कि वे सच्चे अर्थों में ऋषिस्वरूप आत्मीय व्यक्ति थे। उनका जीवन अपने विद्यार्थियों, सहकर्मियों और मित्रों के लिए प्रेरणास्रोत की अमिट गाथा है। आज वे हमारे बीच नहीं हैं, पर उनकी स्मृतियां और शिक्षाएं सदैव मार्गदर्शक रहेंगी। उनकी स्मृतियों को शत-शत नमन!

डॉ. रामजी लाल जांगिड़ : सीमित मुलाक़ातों में भी गहरी छाप छोड़ने वाला व्यक्तित्व :

21 अगस्त की सुबह गढ़ की यात्रा मेरे लिए केवल एक व्यक्तिगत अनुभव नहीं था, बल्कि वह डॉ. जांगिड़ के अस्थि-विसर्जन से जुड़ी एक भावनात्मक यात्रा भी थी। वहां उपस्थित होकर मुझे यह अहसास हुआ कि किसी व्यक्ति का जीवन कितना गहरा असर छोड़ सकता है, भले ही हमारे उनके साथ सीधे संपर्क के अवसर बहुत सीमित क्यों न रहे हों।

डॉ. जांगिड़ से मेरी मुलाकातें गिनी-चुनी ही रहीं, लेकिन हर बार उनका आत्मीय और सहज व्यक्तित्व सामने आया। उनमें एक ऐसी सहजता थी जो किसी भी व्यक्ति को तुरंत जोड़ लेती थी। 12 अगस्त को आईआईएमसी की शोकसभा में जब मैंने उन्हें याद किया, तो महसूस हुआ कि विद्यार्थियों और सहकर्मियों के बीच वे केवल एक अध्यापक या पत्रकारिता विशेषज्ञ ही नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और प्रेरणा-स्रोत भी थे।

21 अगस्त को अस्थि-विसर्जन के समय यह भावना और भी गहरी हो गई। सैकड़ों लोग उनकी अंतिम यात्रा और स्मरण में उपस्थित थे-यह इस बात का प्रमाण था कि उन्होंने जीवन में कितने लोगों के मन को छुआ और कितना बड़ा आत्मीय संसार रचा।

साध्वी जी की दृष्टि और विशेष रिश्ता :

डॉ. जांगिड़ के व्यक्तित्व के बारे में साध्वी जी की बातें और भी रोशनी डालती हैं। साध्वी जी मानती हैं कि उनमें गहन अध्यात्म और व्यवहारिक जीवन का अनोखा मेल था। उनके और साध्वी जी के बीच का रिश्ता केवल मित्रता का नहीं था, बल्कि एक तरह का आध्यात्मिक और आत्मीय बंधन था। यह रिश्ता अपने आप में असाधारण था, और शायद यही कारण है कि साध्वी जी की स्मृतियों में डॉ. जांगिड़ आज भी बहुत गहरे बसे हुए हैं।

ब्रह्मभोज के अवसर पर साध्वी जी ने जिस श्रद्धा और भावुकता के साथ डॉ. जांगिड़ को याद किया, उसने यह स्पष्ट कर दिया कि उनका संबंध सामान्य सामाजिक औपचारिकता से कहीं अधिक था। यह रिश्ता उनकी साधना और जीवनदृष्टि का भी हिस्सा था।

मेरी छवि में डॉ. जांगिड़ :

हालांकि मेरी उनसे मुलाकातें कम थीं, लेकिन हर बार उन्होंने जो आत्मीयता दिखाई, उसने मुझ पर अमिट छाप छोड़ी। उनकी मुस्कान, संवाद का सरल ढंग और विद्यार्थियों व मित्रों के प्रति गहरी आत्मीयता-ये सब बातें मुझे बार-बार याद आती हैं।

डॉ. जांगिड़ के साथ बिताए उन कुछ क्षणों से ही मैंने यह अनुभव किया कि वे न केवल ज्ञानवान थे बल्कि संवेदनशील और करुणाशील भी थे। शायद यही कारण है कि आज उनकी अनुपस्थिति भी एक उपस्थिति की तरह महसूस होती है- उनकी स्मृतियां, उनके शब्द और उनका अपनापन लगातार आसपास मौजूद रहते हैं।

21 अगस्त को गढ़ की यात्रा से लेकर 31 अगस्त को होने वाले श्रद्धांजलि कार्यक्रम तक, मेरे मन में यह भाव लगातार रहा है कि डॉ. जांगिड़ का जीवन और व्यक्तित्व हमें एक बेहतर इंसान बनने की प्रेरणा देता है। साध्वी जी की बातें इस प्रेरणा को और गहराई देती हैं और हमें यह सिखाती हैं कि डॉ. जांगिड़ जैसे लोग केवल स्मृतियों में नहीं रहते, बल्कि अपनी आत्मीयता और विचारों से जीवित रहते हैं।

हिंदी पत्रकारिता के पूर्व [illegible] रामजी लाल जांगिड़ को दी गई श्रद्धांजलि :भारतीय जन संचार संस्थान (IIMC), नई दिल्ली के हिंदी पत्रकारिता विभाग के संस्थापक विभागाध्यक्ष डॉ. रामजी लाल जांगिड़ के निधन पर मंगलवार, 12 अगस्त 2025 को एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान के संकाय सदस्य, अधिकारी, कर्मचारी और उनके पूर्व विद्यार्थी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए उपस्थित रहे। डॉ. जांगिड़ का निधन 9 अगस्त 2025 को नोएडा में एक लंबी बीमारी के बाद हुआ, उनका देहावसान उनके परिवार और पत्रकारिता-शिक्षण समुदाय के लिए एक गहरी क्षति है। वे 86 वर्ष के थे और IIMC में हिंदी पत्रकारिता पाठ्यक्रम के संस्थापक निदेशक के रूप में अपनी पहचान बनाए।

श्रद्धांजलिपूर्ण भावपूर्ण उपस्थिति : श्रद्धांजलि सभा में IIMC के पूर्व महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी, 'आजतक' के प्रबंध संपादक सुप्रिय प्रसाद, वरिष्ठ पत्रकार बृजेश कुमार सिंह, राणा यशवंत, संगीत तिवारी, उमेश चतुर्वेदी, विकास मिश्र सहित अनेक दिग्गज पत्रकार, शिक्षक और उनके पूर्व छात्र-शिष्य उपस्थित थे। सभी ने डॉ. जांगिड़ को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की और पत्रकारिता-शिक्षा में उनके योगदान को याद किया।

यूएस-रूस की शांत कूटनीति

भारतीय मीडिया ने मोदी की छवि गढ़ने के लिए अनावश्यक नैरेटिव गढ़ा

गोपाल मिश्रा

यह वास्तव में भू-राजनीति की गहरी समझ की कमी को दर्शाता है, जब भारतीय सत्ता प्रतिष्ठान और उसके साथ चलने वाला मूक मीडिया अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की कुछ टिप्पणियों का इस्तेमाल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की माचो छवि बनाने और देशभक्ति जगाने के लिए करता है। दूसरी ओर, बीजिंग ने इस भारतीय बयानबाजी का उपयोग क्षेत्र में अपने बढ़ते प्रभाव को और सुदृढ़ करने के लिए किया है। चीन ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को शंघाई सहयोग संगठन (SCO) शिखर सम्मेलन में भाग लेने का निमंत्रण भी भेजा है।

हालांकि, हमें यह भी मानना होगा कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म झूठी कहानियां गढ़ने में अद्भुत क्षमता रखते हैं- जैसे कि चीनी नेता शी जिनपिंग की तथाकथित बीमारी और यह अफवाह कि उन्हें सत्ता से हटाया जा रहा है। इनकी झूठ फैलाने की क्षमता ने तो शराबियों के अड्डों पर होने वाली गपशप को भी पीछे छोड़ दिया है।

भारत के विदेश मंत्री की अमेरिका की बार-बार यात्राओं के बावजूद, जिन्हें पहले एक साधारण कैरियर डिप्लोमैट के रूप में जाना जाता था और अब विदेश मंत्री के रूप में पदोन्नति मिली है, उनकी वैश्विक मामलों पर पकड़ बहुत ही कमजोर प्रतीत होती है। दूसरे शब्दों में, मोदी को दक्षिण एशिया में भारत की गिरती स्थिति से बरी नहीं किया जा सकता। सुषमा स्वराज जैसी दिग्गज राजनेताओं की जगह टीवी कलाकारों या सरकारी अधिकारियों को नियुक्त करना, उनके अपने दल और आरएसएस के भीतर भी अनुभवी बुद्धिजीवियों और नेताओं के प्रति अंतर्निहित घृणा को दर्शाता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में, ट्रंप की मूर्खताओं के बावजूद- जो एक रियल एस्टेट व्यवसायी हैं-वहां की गहरी सत्ता (Deep State) और थिंक टैंक अब भी अमेरिका की रणनीतिक पहल में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इसी संदर्भ में, ट्रंप और रूसी राष्ट्पति व्लादिमीर पुतिन के बीच अलास्का में होने वाले शिखर सम्मेलन को देखा जाना चाहिए। इस शिखर सम्मेलन के परिणामों की भविष्यवाणी करना कठिन है, जो 15 अगस्त को अलास्का में निर्धारित है, लेकिन भारत को यह समझना चाहिए कि वह केवल विश्व राजनीति का एक 'चीयरलीडर' बनकर रह गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि भारतीय सत्ता प्रतिष्ठान अब एक पाकिस्तानी सैन्य अधिकारी की रणनीतिक बढ़त से परेशान है, जिसने भारतीय विदेश नीति को चकमा दे दिया है।

मोदी का युद्ध समाप्त करने का बयान सराहा गया, लेकिन भारतीयों को यह समझना चाहिए कि यूक्रेन में चल रहे संघर्ष को समाप्त करने की दिशा में शांति का भविष्य अमेरिका और रूस के अपने-अपने हितों पर निर्भर करेगा। इससे पहले ट्रंप ने सोशल मीडिया पर 15 अगस्त को बैठक की घोषणा की थी, जिसे बाद में क्रेमलिन के प्रवक्ता ने यह कहते हुए पुष्टि की कि अलास्का का स्थान 'तार्किक' है, क्योंकि यह रूस के निकट है। दिलचस्प बात यह है कि मोदी के अधीन भारतीय सत्ता प्रतिष्ठान, आत्ममोह (Narcissism) से ग्रस्त, ट्रंप के विशेष दूत विक्रॉफ की मास्को यात्रा को गंभीरता से नहीं ले सका। भारत ने यूरोप में शांति की संभावनाओं पर विचार करना भी जरूरी नहीं समझा।

रूस और यूक्रेन के बीच संघर्ष शुरू हुए तीन साल से अधिक हो गए हैं, लेकिन अब तक शांति Elusive यानी दुर्लभ ही रही है। इससे पहले हुए शांति प्रयासों की असफलता के बावजूद, दुनिया इस नई पहल को उम्मीद भरी निगाहों से देख रही है- लेकिन भारत गलतफहमी में है कि वह इस संघर्ष को समाप्त करने में कोई भूमिका निभा रहा है। अगस्त के पहले सप्ताह में रूस और अमेरिका के बीच आक्रामक मुद्रा को दुनिया ने नज़दीक से देखा-जिसमें अमेरिकी परमाणु पनडुब्बियों की तैनाती भी शामिल थी। लेकिन यह आक्रामकता दोनों शक्तियों के बीच संचार को प्रभावित नहीं कर सकी। क्रेमलिन के एक बयान में यह कहा गया था कि वह राष्ट्रपति ट्रंप के विशेष दूत के साथ 'महत्वपूर्ण' बातचीत की उम्मीद कर रहा है। यह उच्च स्तरीय वार्ता वैश्विक व्यापार के लिहाज से भी अहम है, क्योंकि अमेरिका ने रूस पर नए प्रतिबंध लगाने की समय-सीमा निर्धारित की है, अगर यूक्रेन के साथ शांति समझौते की दिशा में प्रगति नहीं हुई तो। व्हाइट हाउस के विशेष दूत स्टीव विटकॉफ की 6 या 7 अगस्त को मास्को यात्रा ने इस शिखर सम्मेलन के लिए मार्ग प्रशस्त किया। यह उच्च प्रोफाइल दूत Reportedly रूसी राष्ट्रपति पुतिन से मिले और शांति वार्ता के लिए एक रूपरेखा विकसित की। शुरुआत में पश्चिमी देश यूक्रेन को नाटो में शामिल करने के लिए उकसा रहे थे, जिससे पूर्वी यूरोप में रूसी प्रभाव कमज़ोर हो।

पनडुब्बियों की तैनाती : यह अब तक स्पष्ट नहीं है कि राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा रूस को निशाना बनाते हुए दो परमाणु पनडुब्बियाँ 'उचित स्थानों' पर तैनात करना केवल एक नाटकीय प्रदर्शन था या वाकई यह मानवता के लिए खतरे का कारण बन सकता है, यदि परमाणु हथियारों का प्रयोग गलती से या जानबूझकर हो गया। पिछले सप्ताह, ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म 'Truth' पर यह बयान उस समय दिया जब रूस के पूर्व राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव ने परमाणु संघर्ष की आशंका को नकारा नहीं था इस बीच, क्रेमलिन ने पूर्व राष्ट्रपति के बयान से दूरी बनाते हुए इस विवाद में शामिल होने से इनकार कर दिया। रूसी विदेश मंत्रालय के आधिकारिक प्रवक्ता ने ट्रंप के उस बयान पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, जिसमें उन्होंने कहा था कि 'पनडुब्बियां उचित क्षेत्रों में तैनात कर दी गई हैं, ताकि यदि ये मूर्खतापूर्ण और भड़काऊ बयान महज बयानबाजी से अधिक हों, तो भी तैयार रहें।'

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

अरुणा आसफ अली : एक ऐसी किंवदंती जो 'भारत छोड़ो आंदोलन' की आत्मा थीं

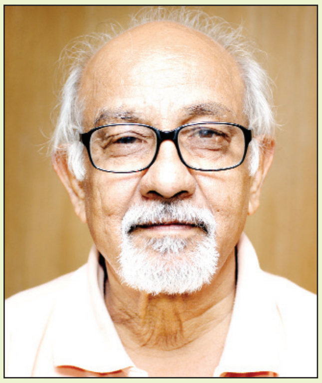

डॉ. सतीश मिश्रा

इस महीने जब भारत 'भारत छोड़ो आंदोलन' की 83वीं वर्षगांठ मना रहा है, तो मेरी यादें मुझे नई दिल्ली के लिंक हाउस के दिनों की ओर ले जाती हैं, जहां मैंने पैट्रियट में काम किया और लिंक साप्ताहिक पत्रिका में लेख लिखे। इन दोनों पत्रिकाओं की स्थापना अदम्य अरुणा आसफ अली ने की थी। ये मात्र सामान्य प्रकाशन नहीं थे, बल्कि सच की निर्भीक अभिव्यक्ति, सत्ता के विरुद्ध प्रतिरोध और अनियंत्रित राष्ट्रवाद का प्रतीक थे। मुझे इस दौरान अरुणा जी से संवाद का दुर्लभ सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसे मैं आज भी बड़े सम्मान के साथ याद करता हूं।

8 अगस्त 1942 को बॉम्बे अधिवेशन में, अखिल भारतीय कांग्रेस समिति ने ऐतिहासिक 'भारत छोड़ो प्रस्ताव' पारित किया। तुरंत प्रतिक्रिया में, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने कांग्रेस के प्रमुख नेताओं को, जिनमें संपूर्ण कार्यसमिति शामिल थी, गिरफ्तार कर लिया। उनका उद्देश्य आंदोलन को फैलने से पहले ही कुचल देना था। लेकिन वे 33 वर्षीय अरुणा आसफ अली की दृढ़ इच्छाशक्ति को कम आंक बैठे थे।

अगले दिन, 9 अगस्त को, अरुणा जी ने औपनिवेशिक दमन की अवहेलना करते हुए शेष अधिवेशन की अध्यक्षता की और बॉम्बे के ग्वालिया टैंक मैदान (आज का अगस्त क्रांति मैदान) में कांग्रेस का तिरंगा फहराया। इस प्रतीकात्मक विद्रोह के साथ, उन्होंने राष्ट्रव्यापी आंदोलन की नींव रख दी और उन्हें 'भारत छोड़ो आंदोलन की रानी' की उपाधि मिली।

पुलिस ने सभा पर दमनात्मक कार्यवाही की, अरुणा जी गिरफ्तारी से बचने के लिए भूमिगत हो गईं। ब्रिटिश सरकार ने बदले में उनकी संपत्ति जब्त कर नीलाम कर दी। लेकिन अरुणा जी अडिग रहीं। उन्होंने छिपकर आंदोलन को जारी रखा, भूमिगत आंदोलन की शुरुआत की और समाजवादी नेता राममनोहर लोहिया के साथ मिलकर कांग्रेस पार्टी की मासिक पत्रिका इंकलाब का संपादन किया। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि वे हिंसा-अहिंसा की बहस छोड़कर क्रांति से जुड़ें। ब्रिटिश सरकार उनकी बढ़ती लोकप्रियता से इतनी भयभीत हो गई थी कि उनके सिर पर 5,000 का इनाम रख दिया।

स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका 1942 से पहले ही शुरू हो चुकी थी। अरुणा गांगुली का जन्म 16 जुलाई 1009 को पंजाब के कालका में एक बंगाली ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उन्होंने लाहौर और नैनीताल में शिक्षा प्राप्त की। उनके पिता उपेन्द्र नाथ गांगुली एक रेस्टोरेंट मालिक थे और मूल रूप से बारीसाल (अब बांग्लादेश में) के रहने वाले थे। उनकी मां अंबालिका देवी ब्रह्म समाज के सुधारक त्रैलोक्य नाथ सन्याल की बेटी थीं। एक रूढ़िवादी परिवार से होने के बावजूद, अरुणा जी ने 1928 में प्रमुख कांग्रेस नेता और वकील आसफ अली से विवाह किया, जबकि दोनों के बीच धर्म और उम्र का बड़ा अंतर था। इस पर अरुणा जी ने बाद में लिखा-

'जब आसफ और मैंने सितम्बर 1928 में विवाह किया, तब मेरे पिता नहीं रहे। मेरे चाचा नागेन्द्र नाथ गांगुली, जो स्वयं को मेरा अभिभावक मानते थे, उन्होंने रिश्तेदारों और मित्रों से कहा कि मेरे लिए अरुणा मर चुकी है और उन्होंने उसका श्राद्ध कर दिया है।' विवाह के बाद वे कांग्रेस पार्टी में शामिल हुईं और नमक सत्याग्रह में भाग लिया। 21 वर्ष की आयु में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। गांधी-इरविन समझौते के अंतर्गत अन्य कैदियों को रिहा किया गया, परंतु उन्हें 'आवारा' कहकर रिहा नहीं किया गया। इसके विरोध में अन्य महिला कैदियों ने बिना अरुणा के जेल छोड़ने से मना कर दिया। अंततः गांधी जी के हस्तक्षेप से उनकी रिहाई संभव हुई, जिससे यह सिद्ध होता है कि प्रारंभिक वर्षों में भी लोग उनके साहस और समर्पण का कितना सम्मान करते थे।

1944 तक, जब वे अब भी भूमिगत थीं, वे स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख चेहरे बन चुकी थीं। दिल्ली के करोल बाग स्थित डॉ. जोशी के अस्पताल में छिपे रहने के दौरान उनकी सेहत बहुत खराब हो गई थी। गांधी

8 अगस्त 1942 को बॉम्बे अधिवेशन में, अखिल भारतीय कांग्रेस समिति ने ऐतिहासिक 'भारत छोड़ो प्रस्ताव' पारित किया। तुरंत प्रतिक्रिया में, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने कांग्रेस के प्रमुख नेताओं को, जिनमें संपूर्ण कार्यसमिति शामिल थी, गिरफ्तार कर लिया। उनका उद्देश्य आंदोलन को फैलने से पहले ही कुचल देना था। लेकिन वे 33 वर्षीय अरुणा आसफ अली की दृढ़ इच्छाशक्ति को कम आंक बैठे थे। अगले दिन, 9 अगस्त को, अरुणा जी ने औपनिवेशिक दमन की अवहेलना करते हुए शेष अधिवेशन की अध्यक्षता की और बॉम्बे के ग्वालिया टैंक मैदान (आज का अगस्त क्रांति मैदान) में कांग्रेस का तिरंगा फहराया। इस प्रतीकात्मक विद्रोह के साथ, उन्होंने राष्ट्रव्यापी आंदोलन की नींव रख दी और उन्हें 'भारत छोड़ो आंदोलन की रानी' की उपाधि मिली। पुलिस ने सभा पर दमनात्मक कार्यवाही की, अरुणा जी गिरफ्तारी से बचने के लिए भूमिगत हो गईं। ब्रिटिश सरकार ने बदले में उनकी संपत्ति जब्त कर नीलाम कर दी। लेकिन अरुणा जी अडिग रहीं। उन्होंने छिपकर आंदोलन को जारी रखा, भूमिगत आंदोलन की शुरुआत की और समाजवादी नेता राममनोहर लोहिया के साथ मिलकर कांग्रेस पार्टी की मासिक पत्रिका इंकलाब का संपादन किया।

जी ने उन्हें एक हस्तलिखित नोट भेजकर आत्मसमर्पण करने को कहा, और सुझाव दिया कि उनके इनाम की राशि हरिजन कल्याण के लिए इस्तेमाल हो सकती है। अरुणा जी ने केवल 1946 में गिरफ्तारी वारंट हटने के बाद ही सार्वजनिक जीवन में वापसी की। गांधी जी का वह पत्र उन्होंने अपने घर में स्मृति के रूप में सहेज कर रखा।

1932 में, तिहाड़ जेल में बंद रहने के दौरान, उन्होंने राजनीतिक कैदियों के साथ किए जा रहे अमानवीय व्यवहार के विरुद्ध भूख हड़ताल की, जिसके चलते कैदियों की स्थिति में सुधार हुआ। इसके कारण उन्हें अंबाला जेल में एकांतवास में भेजा गया।

हालांकि वे गांधी जी की प्रशंसक थीं, परंतु उन्होंने कभी आंख मूंदकर उनका अनुसरण नहीं किया। 1946 की रॉयल इंडियन नेवी विद्रोह को उन्होंने समर्थन दिया, जबकि गांधी जी इसके पक्ष में नहीं थे। लेकिन अरुणा जी को यह हिंदू-मुस्लिम एकता का दुर्लभ क्षण प्रतीत हुआ, जब देश सांप्रदायिक तनाव से जूझ रहा था।

स्वतंत्रता के बाद, अरुणा जी की वैचारिक यात्रा जारी रही। कांग्रेस की समाजवाद की दिशा में धीमी गति से निराश होकर वे सोशलिस्ट पार्टी और बाद में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (सीपीआई) में शामिल हो गईं। उन्होंने रजनी पाल्म दत्त के साथ मॉस्को की यात्रा की और महिला आंदोलनों में प्रमुख स्वर बनीं। 1954 में उन्होंने सीपीआई की महिला शाखा, नेशनल फेडरेशन ऑफ इंडियन वूमेन की स्थापना की, परंतु 1956 में ख्रुश्चेव द्वारा स्टालिन की आलोचना के बाद पार्टी छोड़ दी।

1958 में, वे दिल्ली की पहली महिला मेयर बनीं और कृष्ण मेनन, गुरु राधा किशन और सुभद्रा जोशी जैसे कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर दिल्ली के विकास में योगदान दिया। स्वतंत्रता सेनानी और पत्रकार एडाटता नारायणन के साथ उन्होंने लिंक पब्लिशिंग हाउस की स्थापना की और लिंक साप्ताहिक पत्रिका शुरू की। 1962 में चीन के आक्रमण के बाद, उन्होंने पैट्रियट नामक अखबार शुरू किया, ताकि नेहरू के खिलाफ व्यावसायिक मीडिया के हमलों का प्रतिवाद किया जा सके। ये प्रकाशन दशकों तक जनमत निर्माण में अहम भूमिका निभाते रहे।

1953 में उनके पति आसफ अली के निधन के बाद, वे और भी गहराई से जनसेवा में लग गईं। एक साहसी विचारक, दूरदर्शी नेता और प्रखर देशभक्त अरुणा आसफ़ अली का निधन 29 जुलाई 1996 को नई दिल्ली में हुआ। आज, यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि अरुणा जैसी महान विभूतियां सार्वजनिक विमर्श से बाहर कर दी जा रही हैं, विशेषकर वर्तमान आरएसएस-भाजपा शासन द्वारा। उनके योगदान की उपेक्षा कर हम नई पीढ़ियों को उनके साहस, बलिदान और मूल्यों से वंचित कर रहे हैं। आइए हम अरुणा को केवल एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व के रूप में नहीं, बल्कि एक प्रतीक के रूप में याद करें-निर्भीक विश्वास और न्याय के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक-जो हमेशा प्रासंगिक हैं।

(लेखक मीडिया मैप के संयुक्त संपादक हैं)

1932 में, तिहाड़ जेल में बंद रहने के दौरान, उन्होंने राजनीतिक कैदियों के साथ किए जा रहे अमानवीय व्यवहार के विरुद्ध भूख हड़ताल की, जिसके चलते कैदियों की स्थिति में सुधार हुआ। इसके कारण उन्हें अंबाला जेल में एकांतवास में भेजा गया। हालांकि वे गांधी जी की प्रशंसक थीं, परंतु उन्होंने कभी आंख मूंदकर उनका अनुसरण नहीं किया। 1946 की रॉयल इंडियन नेवी विद्रोह को उन्होंने समर्थन दिया, जबकि गांधी जी इसके पक्ष में नहीं थे। लेकिन अरुणा जी को यह हिंदू-मुस्लिम एकता का दुर्लभ क्षण प्रतीत हुआ, जब देश सांप्रदायिक तनाव से जूझ रहा था। स्वतंत्रता के बाद, अरुणा जी की वैचारिक यात्रा जारी रही। कांग्रेस की समाजवाद की दिशा में धीमी गति से निराश होकर वे सोशलिस्ट पार्टी और बाद में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (सीपीआई) में शामिल हो गईं। उन्होंने रजनी पाल्म दत्त के साथ मॉस्को की यात्रा की और महिला आंदोलनों में प्रमुख स्वर बनीं।

टी20 एशिया कप टीम का चयन एक नई चुनौती

अनिल जौहरी

जैसे ही इंग्लैंड में भारत की रोमांचक टेस्ट जीत का उत्साह कम हो रहा है, अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट का कारवां आगे बढ़ रहा है- इस बार यूएई में टी20 एशिया कप के लिए। और इसके साथ ही टीम इंडिया के चयन को लेकर चर्चाओं का दौर भी फिर शुरू हो गया है।

भारत ने हाल ही में इंग्लैंड के खिलाफ घरेलू टी20 सीरीज 4-1 से जीती थी। उससे पहले अमेरिका में टी20 वर्ल्ड कप जीतकर टीम ने इतिहास रचा था। अब जब चयनकर्ता एशिया कप की टीम चुनने जा रहे हैं, तो सबसे उपयुक्त आधार होगा-वर्ल्ड कप विजेता टीम, आईपीएल 2025 के प्रदर्शन, और हाल की टी20 सीरीज-ना कि इंग्लैंड में हाल ही में समाप्त हुई टेस्ट सीरीज।

भारत की टी20 वर्ल्ड कप 2024 टीम

- रोहित शर्मा (कप्तान)
- हार्दिक पंड्या (उप-कप्तान)
- यशस्वी जायसवाल
- विराट कोहली
- सूर्य कुमार यादव
- ऋषभ पंत (विकेट कीपर)
- संजू सैमसन (विकेट कीपर)
- शिवम दुबे
- रवींद्र जडेजा
- अक्षर पटेल
- कुलदीप यादव
- युजवेंद्र चहल
- अर्शदीप सिंह
- जसप्रीत बुमराह
- मोहम्मद सिराज

अब तक रोहित शर्मा, विराट कोहली और रवींद्र जडेजा टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले चुके हैं। इंग्लैंड सीरीज में उनके विकल्पों को आजमाया गया था।

ओपनर और टॉप ऑर्डर- किसे मिलेगा मौका : इंग्लैंड के खिलाफ अभिषेक शर्मा ने ओपनर के रूप में प्रभावशाली प्रदर्शन किया, जबकि संजू सैमसन संघर्ष करते नजर आए- उनका औसत 10 से थोड़ा ही ऊपर रहा। यशस्वी जायसवाल को शीर्ष क्रम में वापसी करनी चाहिए और वह अभिषेक के साथ एक मजबूत जोड़ी बना सकते हैं। तिलक वर्मा, जिन्होंने इंग्लैंड के खिलाफ नंबर 3 पर अच्छा प्रदर्शन किया, विराट कोहली की जगह के लिए मजबूत दावेदार हैं। शुभमन गिल, जिन्होंने आईपीएल 2025 में शानदार प्रदर्शन किया, को नजरअंदाज करना मुश्किल है- वह फॉर्म और क्लास दोनों में श्रेष्ठ हैं।

विकेटकीपर : राहुल बनाम पंत बनाम सैमसन : केएल राहुल ने आईपीएल 2025 में जबरदस्त प्रदर्शन किया और सबसे तेज 5000 आईपीएल रन बनाने वाले खिलाड़ी बने- वॉर्नर, कोहली और रोहित से भी तेज। ऐसे में वह सैमसन से आगे दिखते हैं, खासकर जब सैमसन का हालिया फॉर्म कमजोर रहा है। ऋषभ पंत, भले ही प्रतिभाशाली हैं, टी20 फॉर्मेट में जूझते रहे हैं और आईपीएल 2025 में भी प्रभावित नहीं कर पाए। इंग्लैंड में आखिरी टेस्ट से बाहर रहने के बाद उनकी फिटनेस भी संदेह में है। अगर वह फिट नहीं होते, तो चयनकर्ता सैमसन के साथ जा सकते हैं या ध्रुव जुरेल को मौका दे सकते हैं।

मिडल ऑर्डर और ऑलराउंडर : सूर्य कुमार यादव के कप्तान बनने की संभावना है, और उनके साथ तिलक वर्मा व शुभमन गिल मिडल ऑर्डर को मजबूत बनाएंगे।

हार्दिक पंड्या उप-कप्तान और मुख्य ऑलराउंडर के रूप में वापसी कर रहे हैं। जडेजा की जगह वॉशिंगटन सुंदर को दी जा सकती है, जिन्होंने इंग्लैंड सीरीज में अच्छा खेल दिखाया और यूएई की परिस्थितियों में वे ज्यादा उपयोगी साबित हो सकते हैं। शिवम दुबे की जगह अनिश्चित है- उन्हें बाहर किया जा सकता है अगर टीम अतिरिक्त स्पिनर या बल्लेबाज को प्राथमिकता दे।

स्पिन और पेस यूनिट : स्पिन में कुलदीप यादव और अक्षर पटेल लगभग तय माने जा रहे हैं। वरुण चक्रवर्ती ने इंग्लैंड के खिलाफ असरदार प्रदर्शन किया और उन्हें चहल पर तरजीह दी जा सकती है, जो वर्ल्ड कप टीम में थे लेकिन कोई मैच नहीं खेले। यह चहल के लिए थोड़ी सख्त स्थिति हो सकती है, लेकिन यूएई की स्पिन-अनुकूल पिचों पर वरुण की मिस्ट्री स्पिन ज्यादा फायदेमंद हो सकती है। रवि बिश्नोई भी अच्छे विकल्प हैं, लेकिन फिलहाल किनारे पर दिख रहे हैं।

गेंदबाजी में बुमराह और अर्शदीप टीम के अहम सदस्य हैं। मोहम्मद सिराज तीसरे प्रमुख पेसर होंगे। मोहम्मद शमी को शायद चयन के लिए नहीं देखा जा रहा, और फिलहाल टी20 योजना में उनकी चर्चा भी नहीं है।

संभावित टीम संरचना

- ओपनर : अभिषेक शर्मा, यशस्वी जायसवाल
- बैकअप ओपनर : शुभमन गिल, केएल राहुल
- मिडल ऑर्डर : सूर्य कुमार यादव (कप्तान), तिलक वर्मा
- विकेट कीपर-बल्लेबाज : केएल राहुल, ऋषभ पंत (या सैमसन/जुरेल, यदि पंत फिट नहीं)
- ऑलराउंडर : हार्दिक पंड्या (उप कप्तान), वॉशिंगटन सुंदर
- स्पिनर : अक्षर पटेल, कुलदीप यादव, वरुण चक्रवर्ती
- तेज गेंदबाज : जसप्रीत बुमराह, अर्शदीप सिंह, मोहम्मद सिराज

अगर टीम का आकार 16 खिलाड़ियों का हो

- बल्लेबाज विकल्प : रिंकू सिंह या श्रेयस अय्यर
- ऑलराउंडर विकल्प : शिवम दुबे
- गेंदबाज विकल्प : युजवेंद्र चहल

चयनकर्ताओं के सामने कई उलझनें हैं, लेकिन एक बात तय है- एशिया कप की टीम यह संकेत देगी कि भारत रोहित-विराट-जडेजा युग के बाद किस दिशा में बढ़ रहा है। चयनकर्ता चाहें निरंतरता बनाए रखें या प्रयोग करें, प्रशंसकों की उम्मीदें हमेशा की तरह ऊंची ही रहेंगी। अब इंतज़ार करते हैं और देखते हैं।

पिछले दौरे पर एक नजर : मंचेस्टर में शानदार पलटवार और ओवल में हार के जबड़ों से जीत छीनने के बाद, यह उपयुक्त है कि पहले इंग्लैंड दौरे से मिले फायदों पर नजर डाली जाए। दौरे की शुरुआत में हमारे बल्लेबाजों को लेकर काफी शंका थी, क्योंकि दो प्रमुख खिलाड़ी- रोहित शर्मा और विराट कोहली ने संन्यास ले लिया था। लेकिन इन अपेक्षाओं के विपरीत, हमारी बल्लेबाजी ने शानदार प्रदर्शन किया, सिवाय एक बार जब हम 193 का पीछा करते हुए असफल रहे। जायसवाल और राहुल ने ओपनिंग में, गिल और पंत ने मिडिल ऑर्डर में, और जडेजा व सुंदर ने 7 और 8 नंबर पर बेहतरीन योगदान दिया। यह तब है जब नंबर 3 (साई) और नंबर 6 (नायर) की जगहें अभी पूरी तरह तय नहीं हैं। एक और बड़ी उपलब्धि यह रही कि भारत ने दो टेस्ट मैच बुमराह के बिना जीते। इसमें कोई शक नहीं कि बुमराह सभी फॉर्मेट में विश्वस्तरीय खिलाड़ी हैं, लेकिन यह दिखाता है कि केवल एक महान खिलाड़ी टेस्ट नहीं जिता सकता – इसके लिए पूरी टीम चाहिए। जैसे गवास्कर अपने दौर में या तेंदुलकर अपने युग में अकेले भारत को टेस्ट नहीं जिता सके, वैसे ही यहां भी बुमराह के बिना सिराज के नेतृत्व में गेंदबाज़ों ने जबरदस्त प्रदर्शन किया-यह बहुत बड़ी बात है!

राहुल और जायसवाल का टॉप पर उभरना-जिसकी झलक ऑस्ट्रेलिया में पिछले साल ही दिख चुकी थी-एक और बड़ी सफलता है। अब हमारे पास एक विश्वसनीय और स्थिर ओपनिंग जोड़ी है। यह ईश्वरन के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है जो लंबे समय से इंतजार कर रहे हैं, लेकिन यही जीवन है। जब बेदी खेलते थे, तब भी कई महान लेफ्ट आर्म स्पिनर जैसे पद्माकर शिवालकर और राजिंदर गयाल को मौका नहीं मिला। हालांकि मिडिल ऑर्डर की कुछ जगहें अभी तय नहीं हैं, इसलिए ईश्वरन को अभी भी मौका मिल सकता है लेकिन उन्हें श्रेयस अय्यर और सरफराज खान जैसी मजबूत प्रतियोगिता से जूझना होगा।

गिल का प्रदर्शन भी एक और बड़ा प्लस रहा। विदेशी धरती पर उनका रिकॉर्ड खास नहीं था, लेकिन इंग्लैंड में उनका यह प्रदर्शन उनके लिए लंबे और सफल करियर की शुरुआत हो सकता है। यह भी सुकून देने वाली बात है कि टॉप ऑर्डर में 6 में से 4 जगहें तय हो गई हैं- जायसवाल, राहुल, गिल और पंत। बाकी दो जगहों के लिए साई और करुण ने इतना जरूर किया है कि उन्हें एक और मौका दिया जाए। उम्मीद है कि वे अगले सीरीज में और बेहतर प्रदर्शन कर अपनी जगह पक्की करेंगे। जैसा कि पहले बताया, बेंच पर मजबूत दावेदार तैयार बैठे हैं।

बैकअप पेस अटैक भी एक बड़ा लाभ रहा। बुमराह और शमी के बिना भी भारत ने दो टेस्ट जीते। अगर भारत में खेला जाए, तो दो तेज गेंदबाज़ और एक अतिरिक्त स्पिनर (यादव) की जरूरत होगी और चयनकर्ताओं के लिए फैसले लेना मुश्किल होगा। लेकिन यही तो उनका काम है- कठिन निर्णय लेना।

एक और सकारात्मक पहलू रहा स्पिन ऑलराउंडर्स का प्रदर्शन। जडेजा ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा दिखाई और सुंदर भी शानदार रहे। बल्कि विकेट लेने की संभावना उनमें जडेजा से ज्यादा नजर आई। विदेशी धरती पर यह चयनकर्ताओं के लिए सिरदर्द बन सकता है-आदर्श रूप में हमें एक स्पिन ऑलराउंडर की जगह एक पेस ऑलराउंडर चाहिए। आखिरी टेस्ट में चौथे पेस विकल्प की कमी साफ नजर आई जब ब्रूक और रूट ने लंबा संघर्ष किया।

पहली चिंता होनी चाहिए- टीम से बाहर के खिलाड़ियों को अचानक बुलाना। ऐसा ऑस्ट्रेलिया में हुआ जब पड्डिक्कल और हर्षित राणा को मूल रूप से चयनित खिलाड़ियों के स्थान पर बुलाया गया। फिर इंग्लैंड में भी अंशुल कम्बोज को बुला लिया गया, जबकि प्रसिद्ध कृष्णा फिट थे। इसके अलावा जब एक टेस्ट बचा था, उस वक्त बैकअप विकेटकीपर को बुलाना भी अनावश्यक था। इसे सामने लाना चाहिए क्योंकि इससे खिलाड़ियों में असुरक्षा की भावना बढ़ती है और चयनकर्ता असंगत नजर आते हैं।

दूसरी चिंता रही टीम का रक्षात्मक रवैया। ऑलराउंडर्स से टीम को भर देना और फिर उनका ठीक से उपयोग न कर पाना निराशाजनक रहा। इससे कुलदीप यादव जैसे स्पेशलिस्ट गेंदबाज को मौका नहीं मिला, जो किसी भी दिन उन दो स्पिन ऑलराउंडर्स से बेहतर विकेट लेने वाला विकल्प थे। लेकिन ऑलराउंडर्स ने बल्ले से उम्मीद से ज्यादा दिया, और हम फंस गए। गिल की कप्तानी भी एक मुद्दा रही- उन्हें यह एहसास हुआ होगा कि टेस्ट मैच को संभालना टी20 कप्तानी से अलग होता है। यह विशेष रूप से उनके गेंदबाजों को इस्तेमाल करने में दिखा-ठाकुर को कम गेंदबाज़ी देना, सुंदर को देर से लाना-कुल मिलाकर 5 या 6 गेंदबाजों का रणनीतिक उपयोग करने में वह चूकते दिखे। हालांकि अनुभव के साथ वह जरूर सीखेंगे। तथाकथित 'वर्कलोड मैनेजमेंट'। एक पूर्व क्रिकेटर ने सही कहा- या तो आप फिट हैं या नहीं। जब टेस्ट के बीच में 6-8 दिन का अंतर है, तब भी अगर कोई तेज गेंदबाज़ फिट होते हुए नहीं खेल रहा, तो यह समझ से परे है। इस पर पुनर्विचार होना चाहिए। यह भी चिंता की बात है कि दो बल्लेबाजी स्थान अभी तक पक्के नहीं हो पाए हैं। लेकिन कुछ उम्मीद दिखाई दी है और मजबूत दावेदार लाइन में हैं। अगले सीरीज में यह स्पष्ट हो सकता है।

(लेखक : छात्र जीवन से क्रिकेट प्रेमी, पूर्व सीईओ-नेशनल एक्रिडिटेशन बोर्ड फॉर सर्टिफिकेशन बॉडीज, और मानकीकरण के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञ हैं)

कनाडा के विश्वविद्यालयों व कॉलेजों में क्रिकेट को मिल रही गंभीरता

यदि बढ़ती भागीदारी और खेल का स्तर संकेत हैं, तो यह स्पष्ट है कि क्रिकेट कनाडा की विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। हाल ही में संपन्न हुआ कनाडियन कॉलेज एंड यूनिवर्सिटी क्रिकेट (CCUC) टोरंटो कप इस दिशा में एक ऐतिहासिक टूर्नामेंट साबित हुआ, जिसमें अंतिम खिताब के लिए कड़ा मुकाबला देखने को मिला।

इस टूर्नामेंट में देश की शीर्ष कॉलेज और विश्वविद्यालयों की टीमें शामिल हुईं। टूर्नामेंट में रोमांचक क्रिकेट, उच्च स्तरीय प्रदर्शन और उभरते छात्र-खिलाड़ियों के यादगार क्षण देखने को मिले। इसका समापन एक बेहद रोमांचक फाइनल मुकाबले में हुआ, जिसमें यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो स्कारबोरो (UTSC) ने खिताब अपने नाम किया।

CCUC के अध्यक्ष हसन मिर्जा ने फाइनल के बाद कहा- टोरंटो कप एक जबरदस्त सफलता थी-न केवल प्रतिस्पर्धा के मामले में, बल्कि समुदाय, खेलभावना और छात्र-खिलाड़ियों के लिए बनाए गए मंच के लिहाज से भी। हमने विभिन्न संस्थानों का प्रतिनिधित्व करते खिलाड़ियों से शानदार क्रिकेट देखा और वातावरण बेहद ऊर्जावान था। CCUC नेशनल्स इससे भी बड़े होंगे, और हमें कनाडा में कॉलेज क्रिकेट के विकास का नेतृत्व करते हुए गर्व हो रहा है।

प्रभजोत सिंह

UTSC ने एक रोमांचक फाइनल में Brock Badgers को 11 रन से हराया। फाइनल में Brock यूनिवर्सिटी की मजबूत टीम के खिलाफ खेलते हुए, UTSC ने संतुलन, गहराई और हर क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन दिखाते हुए प्रतिष्ठित ट्रॉफी अपने नाम की। Brock ने पूरे टूर्नामेंट में अपनी दृढ़ता, टीमवर्क और दमदार प्रदर्शन के लिए प्रशंसा हासिल की। पहले बल्लेबाजी करते हुए, UTSC ने निर्धारित 20 ओवर से पहले ही 137 रन बना डाले, जिसमें प्रभव प्रकाश की आक्रामक 40 रन की पारी मुख्य रही। उन्हें फियाद भुइयन (17) और प्रीयेश पटेल (10) का अच्छा साथ मिला।

Brock के लिए इहसानुल्लाह हमदर्द (3 विकेट 25 रन देकर) और हर्षिव पटेल (2 विकेट 15 रन देकर) सबसे सफल गेंदबाज रहे। साहिल देशवाल (1/15) और दिलराज मोहम्मद (1/25) को भी एक-एक विकेट मिला। 138 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी Brock Badgers की टीम ने योजनाबद्ध तरीके से बल्लेबाज़ी की। इहसानुल्लाह हमदर्द ने एक बार फिर बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए 35 रन बनाए, जबकि मानव पटेल (16), साहिल देशवाल (12), सैयद अहमद अब्दुल्ला (23) और इहसान शेख (12) ने उपयोगी योगदान दिया। फिर भी, टीम लक्ष्य से 11 रन पीछे रह गई और उनका स्कोर 7 विकेट पर 126 रन रहा।

UTSC की ओर से बलराज खरोड़ (3 विकेट 19 रन देकर) सबसे सफल गेंदबाज रहे। अन्य गेंदबाजों में कुश पटेल (2/11), फियाद भुइयन (1/9) और शंकर थियागु (1/35) शामिल थे।

टोरंटो कप में व्यक्तिगत प्रदर्शन को भी सराहा गया और निम्नलिखित पुरस्कार दिए गए :

- सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज : अहसान सज्जाद (टोरंटो मेट्रोपॉलिटन यूनिवर्सिटी)
- सर्वश्रेष्ठ क्षेत्र रक्षक : मानव पटेल (Brock यूनिवर्सिटी)
- सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज : साहिल देशवाल (Brock यूनिवर्सिटी)
- सबसे मूल्यवान खिलाड़ी (MVP) : साद रहमान (UTSC)

टोरंटो कप के सफल आयोजन के बाद अब CCUC का ध्यान सितम्बर में किंग सिटी में होने वाली CCUC TD नेशनल चैंपियनशिप पर केंद्रित है। यह राष्ट्रीय स्तर का प्रमुख टूर्नामेंट कनाडा भर के 12 से अधिक कॉलेज और विश्वविद्यालयों की टीमों को एक मंच पर लाएगा।

इस टूर्नामेंट में भाग लेने वाली कुछ पुष्टि की गई टीमें हैं :

- विलफ्रिड लॉरियर यूनिवर्सिटी
- कोनेस्टोगा कॉलेज
- ओंटारियो टेक यूनिवर्सिटी
- ब्रॉक यूनिवर्सिटी
- टोरंटो मेट्रोपॉलिटन यूनिवर्सिटी (TMU)
- डरहम कॉलेज
- यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो सेंट जॉर्ज (UTSG), यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो स्कारबोरो (UTSC)

इस विस्तारित सूची के साथ, CCUC नेशनल्स को कनाडा के इतिहास का सबसे बड़ा और प्रतिस्पर्धात्मक इंटरकॉलेजिएट क्रिकेट टूर्नामेंट माना जा रहा है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

अवध के इतिहास को दिलचस्प बनाती है उमराव जान की 'अदा'

जेबा हसन

किसको सुनायें हाले-दिले ज़ार ऐ अदा,
आवारगी में हमने ज़माने की सैर की

लखनऊ के एक मुशायरे की महफिल में उमराव जान ने यह शेर पढ़ा। पूरी महफिल वाह वाह कर उठी। उसी वक्त महफिल में बैठे मिर्जा हादी 'रुस्वा' के दिल में उमराव की गुजरी जिंदगी में दिलचस्पी पैदा हो गई। उन्होंने कहा जो मत्ला आपने सुनाया, इसमें शक नहीं कि उमराव जान आपके हालात बहुत ही दिलचस्प होंगे और मैं आपकी जिंदगी के बारे में जानना चाहता हूं। उमराव जान के काफी मना करने के बावजूद हादी रुस्वा नहीं माने और आखिर में उमराव जान ने बचपन से लेकर कोठे तक के सफर को पूरी ईमानदारी के साथ सुनाया। जिसे हादी रुसवा ने एक किताब की शक्ल दे दी। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि चौक की गलियों में ना जाने कितनी तवाइफें कोठों पर जीं और मरीं लेकिन उमराव जान अदा को जो पहचान और मुकाम मिला उसमें हादी रुस्वा की कलम का ही जादू है।

फैजाबाद की अमीरन, लखनऊ की उमराव जान 'अदा' : फैजाबाद के एक इज्जतदार खानदान में जन्म लेने वाली, अपने मां-बाप छोटे भाई की दुलारी अमीरन जब लखनऊ के चौक की गलियों में खानम के कोठे पर पहुंची तो वह उमराव जान अदा बन गई। उपन्यास के अनुसार अमीरन का जन्म फैजाबाद में हुआ था और दिलावर खान नाम का एक शख्स उमराव जान के पिता जोकि बहू बेगम के मगबरे पर अच्छे ओहदे पर थे, उनसे बदला लेने के लिए उसका अपहरण कर लेता है। बाद में वह अमीरन को लखनऊ लाकर खानम जान के कोठे पर बेच देता है। यहां अमीरन को नया नाम मिलता है और वह है उमराव जान। धीरे-धीरे उमराव बड़ी होती गई और इस दौरान नाच, गाना, उर्दू अदब के साथ किताबी तालीम भी उमराव को दी गई। बाद में जब वह फैज अली से साथ कोठे से भाग कर फर्रुखाबाद की ओर जाती है, पुलिस उन पर हमला कर देती है। तब उसे पता चलता है कि फैज एक डाकू है और ब्रिटिश दस्तावेजों में भी इस नाम के डाकू का जिक्र मिलता है। अमीरन की जिंदगी में ऐसे ही कई मोड़ आते हैं, जो उसे कभी खुशी तो कभी गमों के सागर में धकेल देते हैं। एक वक्त ऐसा भी आता है जब वह फैजाबाद पहुंचकर अपनी मां से मिलती है। लेकिन उसका छोटा भाई, जिसे वह बचपन में अपनी जान से भी ज्यादा प्यार करती थी, उससे कहता है- अच्छा होता तुम मर जाती। खैर उम्र बढ़ने के साथ उमराव का रूप भी जाता रहा। उसकी महफिलें शांत हो गईं।

मौलवीगंज में रहते थे मिर्जा हादी रुस्वा : इतिहासकार, पद्मश्री स्वर्गीय योगेश प्रवीन ने अपनी किताब और किस्सों में जिक्र किया है कि भले ही कुछ लोग उमराव को सिर्फ अफसाना समझे लेकिन मैं मानता हूं कि उमराव जान हकीकत में गुजरी हैं। ब्रिटिश जमाने की इस मशहूर तवाइफ के कोई निशान भी इस शहर में बाकी नहीं रखे गए यह लखनऊवालों की नाकदरी है। लेकिन उमराव जान की जिंदगी को कलम में कैद करने वाले हादी रुसवा का ताल्लुक मौलवीगंज से ही था। हवादार मंजिल में उनका घर हुआ करता था जिसके निशान अब बाकी नहीं हैं।

बनारस या लखनऊ : कुछ वक्त पहले बनारस में काम करने वाली एक संस्था ने उमराव जान की कब्र को बनारस में होने का दावा किया था। जबकि योगेश प्रवीन के अनुसार उमराव की कब्र लखनऊ की अजीमुल्ला खां की करबला में है। योगेश कहते हैं कि उमराव जान भले ही एक तवाइफ थी लेकिन अदब से लेकर रस्क की महफिल में उनके जलवों के साथ अदबो अदाब भी परवान चढ़े हैं।

कई बार फिल्मी पर्दे पर दिखी उमराव : इतिहास के पन्नों से निकल कर यूं तो कई कहानियों ने फिल्मी पर्दे पर धूम मचाई है लेकिन एक तवाइफ उमराव जान की कहानी ने हर दौर के फिल्मकारों को आकर्शित किया है। 1958 में मेंहदी फिल्म में उमराव जान अदा को निर्देशक एसएम यूसुफ ने अपने अंदाज में

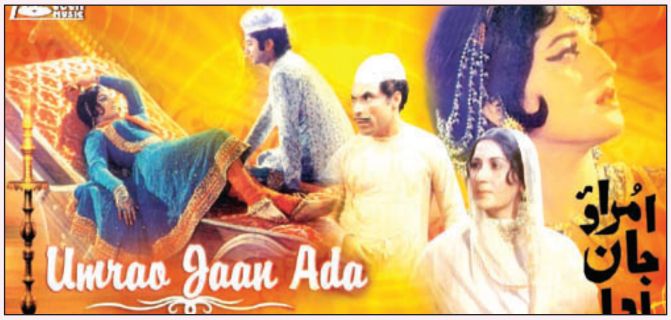

पेश किया था। इस फिल्म में उमराव का किरदार निभाया था जयश्री ने। वहीं अजीत, वीना और ललिता पवार भी मुख्य भूमिकाओं में थे। फिल्म के निर्माता एए नाडियाडवाला थे जबकि कहानी कमाल राशिद और गीत खुमार बाराबंकवी के थे। वहीं इसी साल जिंदगी और तूफान नाम की फिल्म भी आई। प्रदीप कपूर और नूतन अभिनीत इस फिल्म की कहानी उमराव जान अदा की जिंदगी से प्रेरित थी। इसके बाद 1981 में मुजफ्फर अली ने रेखा को लेकर उमराव जान फिल्म का निमार्ण किया। रेखा के साथ फारुख शेख, नसीरउद्दीन शाह, शौकत कैफी, राज बब्बर, दीना पाठक जैसे कलाकारों से सजी इस फिल्म में बॉलिवुड में ऐसा इतिहास रचा जो आज भी सुनहरा है। इसके बाद 2006 में जेपी दत्ता ने ऐश्वर्या राय, अभिषेक बच्चन, सुनील शेट्टी, शबाना आजमी के साथ उमराव जान अदा की कहानी को पर्दे पर नए अंदाज में उतारा।

रेखा ने जीवंत कर दिया किरदार : हादी रुस्वा के इस किताबी कमाल को फिल्म डायरेक्टर मुजफ्फर अली ने 1981 पर्दे पर इस अंदाज में पेश किया कि उमराव जान कभी ना खत्म होने वाली दास्तां बन गई। करीब 44 साल बाद एक बार फिर से उमराव जान के चर्चे मुम्बई से लेकर लखनऊ तक हो रहे हैं। मुजफ्फर अली ने हाल में फिल्म को रिलॉन्च किया है।

(लेखक लखनऊ की जाना मानी पत्रकार हैं)

मीडिया मैप

उदार जनतंत्र का सजग प्रहरी

संरक्षक सदस्यता : रु. 50,000/-

आजीवन सदस्यता : रु. 20,000/- (व्यक्तिगत), रु. 40,000/- (संस्थागत)

विशेष सदस्यता : रु. 5000/- (व्यक्तिगत), रु. 10,000/- (संस्थागत)

सामान्य सदस्यता (5 वर्ष) : रु. 2500/- (व्यक्तिगत) और रु. 5000/- (संस्थागत)

(डॉक खर्च सहित)

---

1. हां मैं 'मीडिया मैप' हिन्दी मासिक पत्रिका का (व्यक्तिगत/संस्थागत) विशेष सदस्यता/आजीवन सदस्यता/संरक्षक सदस्यता के रूप में 'मीडिया मैप' के नाम नकद/चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं : .... दिनांक : .... के रूप में धनराशि रु. .... की सहयोग राशि संलग्न कर रहा/रही हूं।

2. मैंने दिनांक : .... को नकद/चेक/डी.डी. .... के माध्यम से 'मीडिया मैप' हिन्दी मासिक पत्रिका का (व्यक्तिगत/ संस्थागत) विशेष सदस्यता/आजीवन सदस्यता/संरक्षक सदस्यता के रूप में धनराशि रु. .... कार्यालय के पता- 69 ज्ञानखंड-4 इंदिरापुरम, गाजियाबाद- 201014 (उत्तर प्रदेश) पर भेज दिया है।

3. मैंने 'मीडिया मैप' हिन्दी मासिक पत्रिका का (व्यक्तिगत/संस्थागत) विशेष सदस्यता/आजीवन सदस्यता/संरक्षक सदस्यता के रूप में धनराशि रु. .... 'मीडिया मैप' के (भारतीय स्टेट बैंक, नीतिखंड इंदिरापुरम, गाजियाबाद के चालू खाता संख्या : **43812481024**, **IFSC** कोड नं.- **SBIN0005226**) में दिनांक... को जमा करा दिए हैं। इसकी सूचना Email : editor@mediamap.co.in द्वारा भेज दी है।

मेरा पूरा विवरण निम्न प्रकार से है, कृपया मेरे पते पर 'मीडिया मैप' पत्रिका भेजने की कृपा करें।

पूरा नाम : .... डाक का पता : ....

पिन कोड : .... मोबाइल/फोन नं. : ....

हस्ताक्षर

मीडिया मैप **Media Map**

पंजीकृत कार्यालय : 2324, सेक्टर-डी,पॉकेट-2, वसंतकुंज, नई दिल्ली

Email : editor@mediamap.co.in, Contact: 9810385757/9910069262

नाम : .... पता : .... से नकद/चेक/डी.डी द्वारा

राशि. रुपया : .... दिनांक : .... को पत्रिका की सदस्यता हेतु प्राप्त किया।

(प्राप्तकर्ता के हस्ताक्षर)

RNI NO. : UPHIN/2016/68336

See Media Map Website

Website link: www.mediamap.co.in

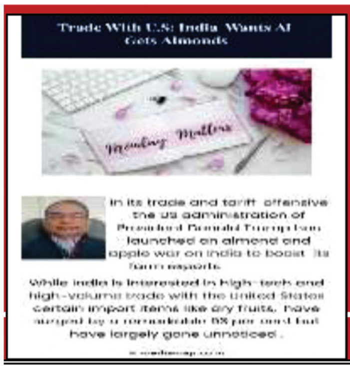

View Media Map YouTube

Media Map News

जनसंवाद 7 : खानपान पर रोक क्यों? Ep- 124

3 views • 4 hours ago

जन संवाद 6 : नेहा हो या कुणाल, व्यंग्य से क्यों डरना? Ep- 123

4 views • 4 hours ago

विविधा 15 : जज को भी छह महीनों की सजा : Ep- 122

27 views • 21 hours ago

विविधा- 14 : कंपनी की तानाशाही - आपके प्रोडक्ट को ख़राब कर रहे हैं। Ep- 121

6 views • 23 hours ago

आर्थिक सहयोग की अपील

उदार लोकतंत्र और गैर-सांप्रदायिक विश्वास के दर्शन से जुड़ा, मीडियामैप समाचार नेटवर्क एक गैर-व्यावसायिक संगठन है। हम आप जैसे गंभीर और समझदार पाठकों को संबोधित करना चाहते हैं। वरिष्ठ मीडियाकर्मियों के समूह द्वारा किया गया यह एक स्वैच्छिक प्रयास है, जिसका किसी राजनीतिक, सामाजिक या व्यावसायिक समूह से कोई संबंध नहीं है। मीडिया मैप के प्रकाशन को निरंतर व सुचारु रूप से जारी रखने हेतु आपका सहयोग आवश्यक है।

- ***State Bank of India***
- ***Account No. 43812481024***
- ***IFSC # SBIN0005226***
- ***प्रस्तुत QR कोड को स्कैन करें।***

प्रकाशक

MBKM Foundation, एक पंजीकृत गैर-लाभकारी संगठन

पंजीकृत कार्यालय

फ्लैट नंबर: 2332, सेक्टर-डी, पॉकेट-2, वसंत कुंज, दक्षिण दिल्ली

RNI No. : UPHIN/2016/68336

Please Stay with us and Explore the Beauty of the Surrounding Areas

Scholars Destination

PLEASE CONTACT

9045005700 | 9910322682 | www.sdmotel.com | info@sdmotel.com